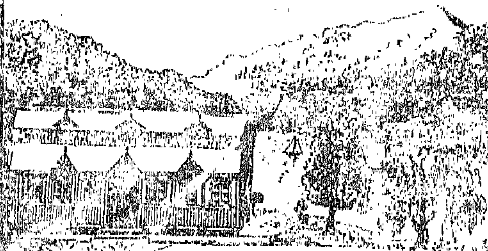




तूफान

संसारके सर्वश्रेष्ठ
कहानी - लेखकों
की
श्रेष्ठ कहानियोंका संग्रह



मूल्य २।)

मुद्रक

महताबराय

ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी, २००३

विषय-सूची

निवेदन

संसारके विभिन्न देशोंके प्रमुख कहानी लेखकोंकी चुनी कहानियाँ इस पुस्तकमें संग्रहीत हैं। ये कहानियाँ उन देशोंके कहानी साहित्यका प्रतिनिधित्व करती हैं। यद्यपि ये अनूदित हैं तोभी कहानी साहित्यमें रुचि रखनेवालोंको उन देशोंकी लेखन शैली, चरित्र-चित्रण तथा कहानी कलाका साधारण परिचय इनसे मिल जायगा। इन कहानियोंसे हमारे साहित्यके कहानी लेखकोंको भी दिशा निर्देश मिल सकता है। इस संग्रहमें ऐसी कहानियाँ मिलेंगी जिनका विषय अतिशय नगण्य होते हुए भी कहानियोंका कितना सुन्दर ताना बुना गया है। विदेशोंमें कहानी-साहित्यके सृजनके लिये कितने व्यापक क्षेत्रका आश्रय लिया जाता है। इसी उद्देश्यसे यह संग्रह प्रकाशित किया गया है।

विनीत

प्रकाशक

तूफ़ान

तूफान

(१)

रूसके मध्य-प्रदेशमें नेनारडोवो नामकी एक छोटी रियासत थी। सन् १८११ के लगभग ग्राविला ग्राविलोविच उस रियासतके मालिक थे।

ग्राविला ग्राविलोविच अपनी उदारता, आतिथ्यप्रियता तथा दयालुताके लिए जिलेभरमें प्रसिद्ध थे। उनके घरपर अतिथियोंका मेला लगा रहता था। कभी ताँता नहीं टूटता था। उनकी पत्नी प्रस्कोविया विट्रोवना भी उनके ही समान मिलनसार थीं। अतिथियोंके खिलाने-पिलाने तथा उनके साथ खेलनेमें वह अपना गौरव समझती थीं। बहुतसे अतिथि तो उनकी एकमात्र कन्या मेरिया ग्राविलोनाको देखनेके उद्देश्यसे ही आते थे। ग्राविलोनाकी आकृति सुन्दर थी। वह अपने सत्रहवें सालमें प्रवेश कर चुकी थी। कितने ही लोग उसे अपनी पत्नी या पतोहू बनानेके लिए लालायित थे क्योंकि ग्राविलोविचकी उतनी बड़ी सम्पत्तिकी वही एकमात्र उत्तराधिकारिणी थी।

मेरिया ग्राविलोनाका लालनपालन फ्रांसीसी ढंगपर हुआ था। फ्रांसीसी उपन्यासोंके अध्ययनसे उसने प्रेमका पाठ भी पढ़ लिया था और उपन्यासकी नायिकाकी भाँति अभिसार भी कर लिया था। उसका प्रेमपात्र एक गरीब सैनिक था जो उन दिनों छुट्टी लेकर अपने घर आया था।

वह भी मेरियाको चाहता था। दोनोंके प्रेमकी चर्चा ग्राविला और उसकी पत्नीके कानोंमें पड़ी। भला उन्हें कब सह्य था कि उनकी कन्या एक साधारण सैनिकसे सम्बन्ध जोड़े? उन्होंने दोनोंका मिलना-जुलना रोक दिया। उसका अपने घरमें आना-जाना भी रोक दिया।

लेकिन लगी नहीं छूटती। दोनोंमें पत्र-व्यवहार चलने लगा और मौका पाकर दोनों पाइनके जंगलमें अथवा पुराने गिरजाके पीछे चुपकेसे मिल लिया

करते। देवताकी प्रतिमाके समक्ष दोनोंने आजीवन इस प्रेमको बनाये रखनेकी शपथ खायी थी, अपने दुर्भाग्यपर दो आँसू बहाये थे और इससे उद्धार पानेके अनेक मंसूबे बाँध लिये थे। अन्तमें उन लोगोंने अपने सामने यह प्रस्ताव रखा :—

"एक दूसरेके बिना हमलोग जीवित नहीं रह सकते। घरके लोग रजामन्दीसे यह विवाह सम्पन्न नहीं होने देंगे। तब क्यों न हमलोग उनकी आज्ञा लिये बिना ही विवाह कर लें!"

मेरियाने इस प्रस्तावको स्वीकार कर लिया। उपन्यासके नायक नायिकाओंका विवाह भी तो इसी तरह हुआ करता है!

इतनेमें जाड़ा आ गया। सर्दी रास्तेमें बाधक होकर खड़ी हो गयी। मिलना जुलना एकदम बन्द हो गया। लेकिन पत्रव्यवहार? वह तो और जोरोंसे चलता रहा। सैनिक ल्दामीर निकोलविच प्रत्येक पत्रमें शादीकी चर्चा करता। वह लिखता कि हमलोगोंको शीघ्र यह काम सम्पन्न कर कुछ दिन छिपकर रहना चाहिए। उसके बाद एक दिन प्रकट होकर माता-पिताके पैरोंपर गिर जाना चाहिए। उनका वात्सल्य प्रेम उमड़ पड़ेगा और वे हमलोगोंको क्षमा प्रदान करके अपना लेंगे।

मेरिया बहुत दिनोंतक टालमटोल करती रही। भागकर जानेके कई प्रस्ताव उसके सामने आये पर वह तैयार नहीं हुई। लेकिन अन्तमें वह राजी हो गयी। तै यह हुआ कि नियत दिन उसे भोजन नहीं करना होगा बल्कि सिरदर्दका बहाना करके जल्दी सो रहना होगा।

उसने अपनी दासीको मिला लिया था। उसको लेकर वह पिछले दरवाजेसे बागमें आयी। वहाँ उसे एक गाड़ी तैयार मिली। उस गाड़ीपर चढ़कर दोनों अन्द्रिनोके लिए रवाना हुईं। अन्द्रिनो वहाँसे पाँच मील था। अन्द्रिनो पहुँचकर सीधे गिरिजामें जाना था। ल्दामीर वहाँ पहलेसे ही मौजूद रहेगा।

उस रातको मेरियाकी आँखोंमें नींद नहीं आयी। वह रातभर जगकर अपना सामान सहेजती रही। उसने दो पत्र लिखे। एक अपने सबसे प्रिय सहेलीको और दूसरा अपने माता-पिताको।

दोनों पत्रोंको लिफाफेमें बन्दकर भोर होते ही वह सो गयी। लेकिन भयंकर स्वप्न देख-देख वह चौंक उठती थी। कभी वह देखती कि ज्यों ही भाग जानेके लिए वह गाड़ीपर सवार हो रही है उसके पिता उसे पकड़नेके लिए आते दिखाई देते हैं। वह गाड़ीको तेजीसे हाँकती है। गाड़ी बर्फपर चलते चलते उलट जाती है और वह अथाह गड्ढेमें जा गिरती है। दूसरे क्षण वह लदामीरको खूनसे लथपथ जमीनपर तड़फड़ाते देखती है। वह दम तोड़ रहा है तो भी शादीके लिए छटपटा रहा है। इसी तरहके अनेक स्वप्न वह देखती है।

अन्तमें वह उठ गयी। उसके सिरमें सचमुच भयानक दर्द होने लगा। उसकी बेचैनी उसके माता-पिताने देखी। वे व्याकुल होकर उसका हालचाल पूछने लगे। वह बनावटी हँसी हँसकर उन्हें शान्त करनेका यत्न करने लगी पर सफल न हो सकी।

धीरे-धीरे शाम हो गयी। वह अपने घरमें अन्तिम घड़ी बिता रही थी। इस खयालने उसके हृदयको और भी व्यथित कर दिया। उसके चेहरेपर मुर्दनी छा गयी। वह मन-ही-मन घरके सभी प्राणियोंसे बिदा लेने लगी।

भोजनका समय आया। उसका दिल धड़क रहा था। उसने भोजन करनेसे इन्कार कर दिया और सोने जानेके पहले वह अपने पिता माताको प्रणाम करने गयी। उसे रुलाई आ रही थी। बड़ी कठिनाईसे उसने अपनेको सँभाला।

अपने कमरेमें वापस आकर वह आराम कुर्सीपर लेट गयी। उसकी आँखोंमें आँसू भर आये। उसकी दासीने उसे समझाया। तसल्ली दी। सब तैयारी पूरी हो गयी थी। आधे घंटेमें उसे सबको छोड़कर हमेशाके लिए बिदा हो जाना था।

बाहर तूफान उठ रहा था। जोरोंकी हवा चल रही थी। खिड़कियोंके दरवाजे टकरा रहे थे। उसे अमंगलकी सूचना मिल रही थी।

थोड़ी देरके बाद घरमें सबलोग सो गये। चारों ओर सन्नाटा छा गया। वह अपनी जगहसे उठी। अपने शरीरको दुशालेसे लपेटा। लबादा पहन लिया, जवाहरोंकी पेटी हाथमें ले ली और चल पड़ी। दो बण्डल लेकर उसकी दासी उसके पीछे चली।

वे लोग बागमें पहुँचे। तूफान कम नहीं हुआ था। हवा इन्हें झकझोर-कर रोकनेका यत्न कर रही थी।

बड़ी कठिनाईसे बाग पारकर वे लोग सड़कपर पहुँचे। गाड़ी खड़ी थी। सर्दीके मारे घोड़े छटपटा रहे थे। कोचवान बड़ी कठिनाईसे उन्हें सँभाल-कर खड़ा था।

दोनों गाड़ीपर सवार हो गयीं। सामान लाद लिया गया। गाड़ी चल पड़ी।

(२)

लदामीर सवेरेसे शादीके प्रबन्धमें व्यस्त था। अन्द्रिनोका पादरी आधी रातको विवाह सम्पन्न करानेके लिए बड़ी मिन्नतके बाद राजी हुआ। उसके बाद वह पड़ोससे तीन गवाह ढूँढ़ने निकला। सबसे पहले वह द्राविनके पास गया। द्राविन घोड़ोंका व्यापारी था। उसकी उम्र पैंतालीस सालकी थी। सारा दास्तान सुनकर वह गवाही करनेके लिए राजी हो गया। उसने कहा कि जवानीमें उसने भी ऐसा ही खेल खेला था। उसे इसमें बड़ा मजा आया। उसने लदामीर-को अपने यहाँ भोजन कराया और बचन दिया कि बाकी दो गवाहोंका प्रबन्ध वह स्वयं कर देगा। भोजनके बाद उसने दो आदमियोंको पकड़कर हाजिर किया। एक गाँवका अमीन था और दूसरा दारोगाका बेटा। इनलोगोंने लदामीर-को हर तरहकी मदद देनेका वादा किया। इस कामसे छुट्टी पाकर लदामीर कपड़ा वगैरह पहननेके लिए अपने घर गया।

शाम हो जानेके बाद उसने अपनी गाड़ी जुतवायी और कोचवानको पूरी हिदायत देकर गाड़ी भेज दी। इधर उसने अपनी टमटम जोती और स्वयं हाँककर गिरजाकी तरफ चला। दो घंटेका वक्त बाकी था। रास्ता उसका जाना-सुना था। उसने समझा था कि वहाँ पहुँचनेमें ज्यादा-से-ज्यादा बीस मिनट वक्त लगेगा।

गाँवसे बाहर निकलते ही तूफानसे वह घिर गया। अँधेरा इतना भयानक हो गया कि उसे रास्तातक नहीं सूझता था। ऐसा प्रतीत होने लगा मानो जमीन और आसमान एक हो गये हों।

वह भटककर खेतमें चला गया। लाख कोशिश करनेपर भी उसे रास्ता नहीं मिला। घोड़ा इधर उधर दौड़ने लगा। कभी ठोकर खाकर गिर पड़ता तो कभी खाईमें जा गिरता। कई बार टमटम उलटते-उलटते बची।

लदामीरने अपने लक्ष्यको सदा ध्यानमें रखा था। वह समझता था कि वह ठीक दिशामें जा रहा है। लेकिन आधा घंटासे ज्यादा बीत गया पर उसे कोई कूल-किनारा नहीं मिला।

जिस रास्तेसे वह जा रहा था वह एकदम ऊबड़-खाबड़ था। क्षणभर सोचनेके बाद वह दाहिनी तरफ मुड़ा। घोड़ा बड़ी मुश्किलसे आगे बढ़ रहा था। घंटेभरसे ज्यादा बीत गया पर रास्ता खतम नहीं हुआ।

उसने अपने मनमें अनुमान किया कि अन्द्रिनो वहीं कहीं नजदीक ही होगा। वह चलता गया। उसको रास्तेका कहीं अन्त नहीं मिला। रह-रहकर गाड़ी उलट जाती थी। वह उतरकर उसे सँभालता था और आगे बढ़ता था। समय निकट आ रहा था। लदामीरकी चिन्ता बढ़ने लगी।

अन्तमें एक तरफ उसे कोई काली काली-चीज दिखलायी पड़ी। वह उसी तरफ घूम पड़ा। अन्द्रिनोके पासवाला वही जंगल था। उसने अपने मनमें कहा—"भगवान्‌की दयासे अब मुझे बहुत दूर नहीं जाना है।" वह जंगलके बगलसे चलने लगा। उसे आशा थी कि या तो उसे सड़क मिल जायगी या वह गिरजाघर पहुँच जायगा क्योंकि उस जंगलके बाद ही अन्द्रिनो था।

थोड़ी दूरपर उसे सड़क मिली। वह पेड़ोंकी छायाके बीच छिपने लगा। हवाका उतना तेज झोंका वहाँ नहीं लगता था। सड़क अच्छी थी। घोड़े तेज हुए। लदामीर शान्त हो गया।

वह चलता गया पर अन्द्रिनोका पता नहीं लगा। जंगल खतम ही नहीं होता था। लदामीरने देखा कि वह गलत रास्तेपर आ गया है। यह वह जंगल नहीं था। वह काँप उठा। वह हताश होकर घोड़ेको पीटने लगा। मार खाकर बेचारा घोड़ा तेज दौड़ता पर दो-चार कदमके बाद ही धीमा हो जाता। लदामीरका सारा प्रयास व्यर्थ गया। घोड़ेकी चाल नहीं सुधरी। वह बराबर मन्द होती गयी।

धीरे-धीरे वह जंगलसे बाहर निकला पर अन्द्रिनो गाँवका कहीं पता नहीं था। बारह बज रहे थे। उसकी आँखोंसे आँसू निकल पड़े।

(३)

धीरे-धीरे आकाशसे बादल हटे। आसमान साफ हुआ। चन्द्रमाके प्रकाशमें उसने चारों तरफ देखा। पास ही एक झोपड़ी दिखाई पड़ी। उसमें चार-पाँच किसान सो रहे थे। वह टमटमसे उतर पड़ा और खिड़कीका दरवाजा खटखटाया। दूसरे ही क्षण दरवाजा खुला और एक बूढ़ेने आकर पूछा :—क्या चाहते हो?

"अन्द्रिनो यहाँसे कितनी दूर है?"

"बहुत दूर नहीं, करीब दस कोस होगा।"

लदामीरको काठ मार गया। उसने साहस करके पूछा—क्या अन्द्रिनो-तक जानेके लिए मुझे घोड़ा मिल सकता है?"

"हम गरीबोंके पास घोड़े कहाँसे आये?"

"क्या कोई रास्ता दिखानेवाला मिल सकता है?"

"ठहरिये! मैं अपने लड़केको जगाता हूँ। वह आपके साथ चला जायगा।"

लदामीर प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देरके बाद उसने फिर दरवाजा खट-खटाया। दरवाजा खुला और उसी बूढ़ेने पूछा :—आप क्या चाहते हैं?

"तुम्हारा लड़का कहाँ है?"

"वह कपड़ा पहन रहा है। बड़ी भयानक सर्दी है। आप भी भीतर आ जायँ।"

"कृपाके लिए धन्यवाद। आप अपने लड़केको शीघ्र बाहर करें।"

इसी समय दरवाजा खोलकर एक युवक बाहर निकला। उसके हाथमें एक मोटी लाठी थी। वही रास्ता दिखाता हुआ आगे बढ़ा। कभी-कभी लाठीसे वह रास्तेकी बर्फ भी हटा देता था।

"क्या वक्त होगा?"

"सबेरा हुआ ही चाहता है।"

लदामीर चुप रहा।

मुर्गे बाँग देने लगे। पौ फटते फटते वे लोग अन्द्रिनो पहुँचे। गिरजेका दरवाजा बन्द था। लदामोरने इनाम देकर लड़केको विदा किया और पादरीके यहाँ पहुँचा। अस्तबलमें उसकी गाड़ी नहीं थी।

(४)

सवेरा हुआ। ग्राविला ग्राविलोविच अपने बिस्तरेसे उठकर बैठकमें आये। उनकी पत्नी भी वहीं आ गयीं। नौकरने चाय लाकर रख दी। ग्राविलाने अपनी बेटीको बुलानेके लिए नौकर भेजा।

दासीने आकर कहा—वह रातभर बेचैन रहीं। इस वक्त उनकी तबीयत अच्छी है। वह तुरत आ रही हैं। दूसरे ही क्षण मेरियाने प्रवेश किया और पिता-माताको प्रणाम कर बगलमें बैठ गयी।

ग्राविला—तुम्हारे सिरका दर्द कैसा है बेटी?

मेरिया—पहलेसे बहुत अच्छा है।

उसकी माँने कहा—स्टोवके धुँएसे तुम्हारे सिरमें दर्द हो गया था।

मेरी—सम्भव है।

दिन आनन्दसे कटा। रात होते ही मेरिया बीमार पड़ गयी। डाक्टर बुलाया गया। इधर मेरियाकी हालत बिगड़ने लगी। उसे सन्निपात हो गया। दो सप्ताह-तक उसकी यही हालत रही।

उसके भागनेकी बात घरमें किसीको मालूम नहीं थी। जो चिट्ठियाँ उसने लिखी थीं वापस आकर उसने उन्हें जला दिया था। भयके मारे दासीने भी अपनी जबान नहीं खोली। तीनों गवाह भी मौन हो रहे।

लदामीरका कोचवान बड़ा ही गम्भीर आदमी था। नशेकी हालतमें भी उसे बकवाद करते किसीने नहीं सुना था। इस तरह इतने आदमियोंके कानमें पड़कर भी यह बात गुप्त रह गयी।

लेकिन बेहोशीकी हालतमें मेरिया बकने लगी। उसकी बातें इतनी अस्पष्ट होती थीं कि उसकी माँ जो सदा उसके पास रहती थी इससे ज्यादा

कुछ नहीं समझ सकी कि मेरिया लदामीरको चाहती है और प्रेमके कारण ही उसकी यह दशा है।

पति-पत्नीने परामर्श किया। इष्ट-मित्रोंसे सलाह ली। सबकी यही राय हुई कि मेरियाका भाग्य कोई नहीं मिटा सकता। दुनियामें धन-दौलत ही सब कुछ नहीं है। मनुष्य प्रधान है और उससे भी प्रधान है उसकी रुचि।

मेरियाकी हालत धीरे-धीरे सुधरने लगी। लदामीरने ग्राविलाके यहाँ आना-जाना छोड़ दिया था। उन लोगोंने उसे बुलाकर यह सुखद सम्वाद कह देना चाहा कि मेरियासे उसकी शादी कर दी जायगी।

लेकिन वह नहीं आया। उसने उत्तरमें लिखा—'मैं इस जीवनमें आपके दरवाजेपर कदम नहीं रक्खूँगा। आपलोग मुझे भूल जायँ। अब मेरा एकमात्र सहचर मृत्यु है।' थोड़े दिनोंके बाद लोगोंने सुना कि लदामीरने सेनामें नाम लिखा लिया। यह सन् १८१२की बात है।

बहुत दिनोंतक यह बात मेरियासे छिपा कर रखी गयी। कई महीनेके बाद उसने एक दिन अखबारमें उन लोगोंके नामकी सूची देखी जिन्होंने बोरोडिनोके युद्धमें नामवरी हासिल की थी पर बुरी तरह घायल हो गये थे। इसमें लदामीरका भी नाम था। वह बेहोश होकर गिर पड़ी। घरके लोग डर गये कि कहीं बीमारी फिर न उभड़ जाय। इसलिए उन लोगोंने नेनारडोवो छोड़ दिया और अपनी दूसरी जमींदारीमें जाकर रहने लगे।

वहाँ भी विवाहेच्छुकोंकी धूम मच गयी पर मेरियाने किसीकी तरफ आँख उठाकर देखातक नहीं। कभी-कभी उसकी माता उसे शादी कर लेनेके लिए समझाती भी। पर मेरियापर इसका कोई असर नहीं पड़ता था। वह मौन धारण कर लेती।

जिस दिन नेपोलियनकी सेनाने मास्को शहरमें प्रवेश किया, उसके एक दिन पहले ही लदामीरकी मृत्यु हो गयी। उसकी यादमें मेरियाका जीवन व्यर्थ हो गया। उसने उसकी अनेक चीजें बटोरकर अपने पास रख लीं। उसका यह अनोखा प्रेम देखकर लोग दंग रह गये। लोग कहने लगे—देखें, कोई ऐसा वीर

सामने आता है या नहीं जो इसके प्रेमपर काबू करे और इसे अपनी

(५)

युद्ध समाप्त हुआ। नेपोलियनकी सेना रूसमें गल गयी।
विजयी होकर लौटे। लोग उनका स्वागत करनेके लिए दौड़
विजयके गीत गा रहे थे। जो युवक लड़ाईपर गये थे वे पूर्ण
लौटे थे। उनके गलेमें विजय-मालाएँ शोभित थीं।

सैनिक उत्साहसे भरे आपसमें बातें करते आ रहे थे। क्या
भूला जा सकता था! सभी विजयके उल्लासमें मस्त थे। प्रत्ये
दिल उमंगसे भरा था। पुनर्मिलनका सुख कैसा मंगलमय है।
अभिमान हृदयमें उमड़ पड़ा था।

इस अवसरपर रूसी महिलाओंका उत्साह अवर्णनीय था।
धूमधामसे इन वीरोंका स्वागत किया। उस समय मेरिया शहर
कस्बेमें रहती थी। इसलिए दोनों राजधानीके उत्साहका उसे अ
मिल सका। लेकिन कस्बों और देहातोंमें कम उत्साह नहीं था।
कोई सैनिक या अफसर पहुँच जाता तो उसका विविध प्रकारसे स्वा
इन्हीं वापस आये सैनिकोंमें बर्मिन नामका एक घायल कर्नल था जि
जार्जका पदक हासिल किया था। उसकी जमींदारी मेरियाकी जमींद
थी। युद्धसे लौटनेके बाद वह छुट्टी लेकर आया था। उसकी
पचीस सालकी थी। मेरियाकी निगाह उसपर पड़ी। धीरे-धीरे
अंकुर उसके हृदयमें उठने लगा। उसे देखकर मेरिया मृदुल और
जाती। उसका तीखापन धीरे-धीरे गायब होने लगा। वह उसपर री
थी लेकिन उसके बाहरी व्यवहारसे कुछ पता नहीं चलता था।

बर्मिन बहुत सुन्दर युवक था। उसका शरीर गठीला और आकर्षक
उसकी चालमें सादगी और बड़प्पन था। बनावटीपन और ऐंठका
नाम नहीं था।

न्त और शर्मीला था। वह मेरियासे मिलता-जुलता, बातें करता मुँहसे एक भी ऐसा शब्द नहीं निकलता था जो प्रेमका द्योतक हो। दोनोंकी चेष्टासे यह प्रकट होता था कि दोनों एक दूसरेको। वह मेरियाकी बातोंकी कदर करता और मेरिया भी दूसरोंकी ज्यादा ख्याल रखती।

तना होनेपर भी वर्मिनने प्रेम-प्रसंगकी चर्चा एक बार भी नहीं ी बात तो उसके मुँहपर कभी आयी ही नहीं। वह मौन क्यों था? से कातर बना दिया था या अभिमान उसका रास्ता रोककर यह एक पहेली थी जो मेरियाकी समझमें नहीं आ रही थी।

सोचने-विचारनेपर उसने यह तय किया कि कायरता ही उसका रही है। इसलिए उसने वर्मिनको प्रश्रय देना आरम्भ किया। वह उससे ने-जुलने लगी। घुल-घुलकर बातें करती। उसकी सारी चेष्टाएँ जीत लेनेकी होने लगीं और वह बड़ी आतुरतासे उस घड़ीकी ने लगी जब वर्मिन विवाहका प्रस्ताव उससे करेगा। रहस्यका के हृदयपर सबसे भारी प्रतीत होता है।

े उपाय कारगर हुए। वर्मिनके सिरपर कामदेव सवार हो गया। के लिए पागल हो उठा। शुभ घड़ी आनेमें अब देर नहीं थी। स-पड़ोसमें रातदिन यही चर्चा रहती थी। सभीको विश्वास हो अब शीघ्र ही शादी हो जायगी। मेरियाकी माता मन-ही-मन प्रसन्न थीं प्रकार मेरियाका मन इस युवकपर अटक तो गया।

(६)

ामका वक्त था। मेरियाकी माता अपने कमरेमें अकेली बैठी पेशेंस का खेल जो अकेले खेला जाता है) खेल रही थीं। उसी समय वर्मिनने पूछा—"मेरिया कहाँ है?"

स्कोविया—वह बागमें टहल रही है। उससे मिलकर मुझसे मिलते ना!

वर्मिन सीधे बागमें चला गया। बुढ़िया सुखद भविष्यकी आशासे प्रफुल्लित हो उठी।

मेरिया बागमें तालाबके किनारे एक झुरमुटके पास बैठी कुछ पढ़ रही थी। साधारण शिष्टाचारके बाद मेरिया चुप हो बैठी। उसने सोचा कि इससे उसके मनमें गुदगुदी पैदा होगी और अपने हृदयकी बात वह प्रकट करेगा। हुआ भी ठीक वैसा ही।

वर्मिनने शान्ति भंग करते हुए कहा—कई दिनोंसे मैं अपने दिलकी बात तुमसे कहकर हृदयका बोझ हलका करना चाहता था। आशा है, मेरी बात ध्यानसे सुनोगी।

मेरियाने पुस्तक बन्द कर दी और वर्मिनका मुँह देखने लगी।

वर्मिन—मैं तुम्हें हृदयसे चाहता हूँ।

मेरियाके चेहरेपर गुलाबी रंग दौड़ गया। शर्मसे उसने आँखें नीची कर लीं।

वर्मिन—तुम्हें देखे बिना मुझे चैन ही नहीं पड़ता।

मेरियाको रूसो उपन्यासके नायक सेण्ट प्रूक्सका पहला पत्र याद आ गया जो उसने अपनी प्रेयसीको लिखा था।

वर्मिन—लेकिन अपने हृदयका असली भाव छिपाकर मैं अनन्त कालतक तुम्हें और अपनेको धोखेमें नहीं रखना चाहता। मैं जानता हूँ कि आजकी घटनाके बाद आजीवन मुझे वियोगकी ज्वालामें जलना पड़ेगा पर तो भी आज उसे प्रकट कर मैं सदाके लिए तुमसे अलग हो जाना चाहता हूँ क्योंकि मैं जिस रहस्यका उद्घाटन करने जा रहा हूँ वह मेरे और तुम्हारे बीचमें बाधक होकर खड़ा हो जायगा।

मेरिया—वह तो पहलेसे ही खड़ा है। मैं तुम्हारी पत्नी कभी नहीं हो सकती थी।

वर्मिनने बड़ी आजिजीसे कहा :—यह दास्तान मुझे मालूम है। लेकिन तुम्हारे प्रियतमकी मृत्यु और तीन सालकी यह लम्बी अवधि उस स्मृतिपर परदा डालनेके लिए पर्याप्त थी। मैं यह भी अच्छी तरह जानता हूँ कि यदि मेरा

दुर्भाग्य मेरे साथ सदा न रहता तो मैं तुम्हें प्राप्त कर सुखसे दिन काटता। पर मेरी बदकिस्मती है कि मैं विवाहित हूँ।

मेरिया आँखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर देखने लगी।

वर्मिन—सचमुच मेरी शादी हो गयी है। चार साल पहलेकी बात है। पर मैं नहीं जानता कि मेरी पत्नी कौन है और कहाँ है। इस जीवनमें उससे मुलाकात हो सकेगी या नहीं।

मेरिया—तुम क्या कह रहे हो। विचित्र बात है। इस सम्बन्धमें मुझे भी कुछ कहना है। पर पहले तुम्हारी बातें सुन लेना चाहती हूँ।

वर्मिन—सन् १८१२ की बात है। मेरी टुकड़ीने विल्नामें डेरा डाल रखा था। मैं वहीं जा रहा था। मैं शामको एक पड़ावपर पहुँच गया। गाड़ीके घोड़े बदले जा रहे थे। उसी समय जोरोंका आँधी-पानी आया। लोगोंने मुझे आगे बढ़नेसे रोक दिया।

मैं रुक तो गया लेकिन मुझे चैन नहीं था। मेरी घबराहट बढ़ने लगी। मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई अज्ञात व्यक्ति मुझे वहाँसे चल देनेकी प्रेरणा दे रहा है। पर आँधी-पानीके बन्द होनेका कोई लक्षण नहीं दीख पड़ा।

वहाँका ठहरना मुझे असह्य हो उठा। उसी तूफानमें मैंने चल देनेका निश्चय किया। कोचवान नदीके किनारेसे चला। उधरसे चार-पाँच मीलकी सुविधा थी। पर बर्फसे रास्ता ढँक गया था। इससे जहाँ किनारेवाली राह सड़कसे मिलती वह स्थान छूट गया और हमलोग किसी अज्ञात दिशाकी ओर चले गये।

तूफान बढ़ता जा रहा था। कहीं दूरपर मुझे रोशनीकी झलक दिखायी पड़ी। मैंने गाड़ी उधर ही बढ़ायी। मैं किसी गाँवमें पहुँच गया। वह रोशनी उसी देहाती गिरजेकी थी। गिरजेका द्वार खुला था। अहातेके भीतर दो-तीन गाड़ियाँ खड़ी थीं और सहनमें कुछ लोग खड़े थे।

मेरी गाड़ीकी आवाज सुनते ही लोग चिल्ला उठे—इधर आइये! इधर आइये। मैंने गाड़ीको भीतर ले चलनेकी आज्ञा दी।

वहाँ पहुँचते ही किसीने मुझसे कहा—तुमने इतनी देर कहाँ लगायी। दुलहिनकी हालत खराब है। उसे गश-पर-गश आ रहा है। बेचारा पादरी परेशान है। हमलोग वापस जानेको उद्यत थे। चलो, जल्दी करो।

मैं चुपचाप गाड़ीसे उतरकर गिरजामें घुस गया। भीतर चिरागका क्षीण प्रकाश था। एक युवती वैवाहिक पोशाकसे सुसज्जित एक कोनेमें बैठी थी। दूसरी स्त्री उसका सिर दबा रही थी। उसने कहा :—भला तुम आ तो गये। ये तो मरने मरनेको थीं।

पादरीने मेरे पास आकर कहा :—यदि तुम तैयार हो तो रस्म शुरू कर दी जाय।"

"मेरे मुँहसे यंत्रकी तरह शब्द निकल पड़े :—"शुरू कीजिये।"

उन्होंने उस युवतीको अपनी जगहसे उठाया। उस धुँधले प्रकाशमें मैं उसे जितना देख सका वह मुझे बुरी नहीं जँची। पर मैं यह क्या जुल्म कर रहा था। मैं चुपचाप उसकी बगलमें खड़ा हो गया। सबलोग जल्दीमें थे। थामकर किसी तरह शादी कर दी गयी।

"उन लोगोंने मुझसे कहा :—आप अपनी पत्नीका चुम्बन करें।

मेरी पत्नीने अपना अधर मेरी तरफ बढ़ा दिया। लेकिन ज्यों ही मैं उसका चुम्बन करनेके लिए झुका वह झिझककर पीछे हट गयी और चिल्ला उठी :—यह तो वह नहीं है।

इतना कहकर वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

लोग चकित होकर मेरा चेहरा देखने लगे। मैंने वहाँ ठहरना उचित नहीं समझा। लोग सम्हलने भी नहीं पाये थे कि मैं गिरजासे बाहर आकर अपनी गाड़ीपर सवार हो गया। गाड़ी तेजीसे चल पड़ी।

मेरियाने ठंडी साँस लेकर कहा :—और तुम्हें नहीं मालूम कि उस बेचारी पर क्या बीती?

वर्मिन—मुझे कुछ पता नहीं। उस गाँवका नाम भी मुझे मालूम नहीं। जिस पड़ावसे मैं रवाना हुआ था, उसका नाम और पता भी मुझे मालूम नहीं।

उस समय मुझे अपने इस पाप कर्मका इतना कम ध्यान था कि मैं गाड़ीमें बैठते ही सो गया। तीसरे पड़ावपर जाकर मेरी नींद टूटी।

उस लड़ाईमें मेरा कोचवान भी मारा गया। अब मेरे पास कोई भी साधन नहीं रहा कि मैं उस बिचारीका पता लगाता जिसके साथ मैंने इतना बड़ा अत्याचार किया था।

मेरियाने उसे गलेसे लगाते हुए कहा :—तब तुम्ही थे! तुम अपनी पत्नीको पहचान नहीं रहे हो?

बर्मिन मेरियाके पैरोंपर गिर पड़ा।

पोस्ट मास्टर

क्या एक भी ऐसा आदमी मिल सकता है जिससे पोस्ट मास्टरकी एक झड़प न हुई हो ? जिसने दो चार आशीर्वादके शब्द उसे न सुनाये हों ?

कौन ऐसा होगा जिसने उसके खिलाफ दो चार शिकायतकी चिठ्ठियाँ न लिखी हों । किसने उसकी गुस्ताखी और लापरवाहीकी शिकायत नहीं की होगी ।

सभी तो उसे पशुसे भी बदतर समझते हैं । एक मामूली पेंशनयाफ्ता क्लर्क-कीसी इज्जत भी उसकी नहीं होती ; लेकिन क्या कभी किसीने उसकी दयनीय दशापर विचार किया है ?

सबसे गयी-गुजरी नौकरी पोस्ट मास्टरकी है । सरकारी नौकर है इसीसे पीटा नहीं जाता सो भी हमेशा नहीं । पर क्या कभी किसीने उसकी जिम्मेदारी और मिहनतपर ध्यान दिया है ?

क्या आजन्म कालापानीसे कम यंत्रणा इसे भुगतनी पड़ती है । न दिन चैन न रात आराम ! डाकमें किसी भी तरहकी गड़बड़ी हुई कि लोग लगे कोसने पोस्ट मास्टरको । कोई इस बातपर ध्यान नहीं देता कि मौसिम खराब है, सड़क कीचड़से लथपथ है । कोचवानने गाड़ी हाँकनेमें ढिलाई की, घोड़े ठीकसे नहीं चले लेकिन गाली पड़ने लगती है पोस्ट मास्टरपर । सभी लोग उसे अपना जन्म-जात शत्रु मानते हैं । इसलिए यदि वह लोगोंसे दूर भागता फिरता है तो अच-रजकी कौनसी बात है ?

जाड़ा हो चाहे बरसात, उसे रात दिन दौड़ते रहना पड़ता है । तब यदि वह लोगोंकी भीड़ देखकर धीरेसे इधर उधर खिसककर अपनी जान बचाता है तो आश्चर्य क्या ?

जब कभी कोई बड़ा अफसर आता है तो उसकी खुशामद और खातिर-दारीमें उसका दम निकल जाता है।

अफसर गाड़ी लेकर चल देता है। उसके मुँहसे कृतज्ञताके एक शब्द भी नहीं निकलते। बड़ी मिहरबानी की तो पीछेसे परवाना भेज़ दिया।

यदि इन सब बातोंपर निष्पक्ष होकर विचार किया जाय तो घृणाके बदले वह दयाका पात्र समझा जायगा और उसकी दशापर क्रोध न आकर करुणा होगी।

मैं लगातार रूसके भिन्न भिन्न भागोंमें भ्रमण करता रहा। ऐसा एक भी पोस्टमास्टर न होगा जो मुझे न पहचानता हो या जिसे मैं न पहचानता होऊँ। इन विचारोंके सम्बन्धमें मेरे जो अनुभव हैं उन्हें मैं पुस्तकाकार निकालनेका विचार कर रहा हूँ।

मेरा ख्याल है कि इन विचारोंके सम्बन्धमें लोगोंकी बड़ी भ्रान्त धारणा है। ये बिचारे बड़े गरीब और सीधे होते हैं। आपकी सहायता करनेके लिए सदा तत्पर, बड़े मिलनसार, और साथ ही बड़े निस्पृह!

लोग उनसे बातचीत करना अपमान-जनक समझते हैं लेकिन उनकी बातें बड़ी ही रोचक होती हैं। उनसे बहुत कुछ नसीहत मिलती है। यदि मेरी राय पूछी जाय तो मैं यही कहूँगा कि किसी बड़े सरकारी अफसरकी अपेक्षा उनसे बातें करना मुझे कहीं ज्यादा अच्छा लगता है।

इससे आप समझ सकते हैं कि अनेक पोस्ट-मास्टरोंसे मेरी दोस्ती है। लेकिन उनमेंसे एककी याद मुझे कभी भी नहीं भूल सकती। घटनावश मेरी उससे भेंट हो गयी थी। आगे चलकर हम दोनों घनिष्ट मित्र बन गये।

सन् १८१६ की बात है। मैं सफरमें निकला था। उस समय मैं साधारण पदपर था। मैं गाड़ीपर अकेले यात्रा करता और दो घोड़ोंका किराया देता। इससे पड़ावके अफसर मेरा उचित सत्कार न करते। कभी कभी मैं उनपर जोर जुल्म भी कर बैठता क्योंकि मेरी धारणा उस समय यही थी कि अलग एक पूरी गाड़ी लेना मेरा जायज हक था।

कभी कभी ऐसा होता था कि जो गाड़ी मेरे लिए जोती जाती थी उसे पड़ावका अफसर दूसरे बड़े अफसरको दे देता था। उसके इस बर्तावसे मैं जल-भुन जाता था!

उस दिन सबेरेसे ही सूर्यके दर्शन होने लगे थे। लेकिन दूसरे पड़ावपर पहुँचनेके पहले सहसा बादल घिर आये और बूँदें पड़ने लगीं। मेरा सारा कपड़ा पानीसे तर हो गया। पड़ावपर पहुँचकर मुझे सबसे पहले कपड़ा बदलना था और चाय पीना था।

मेरे पहुँचते ही पोस्टमास्टरने किसीको पुकारकर कहा—दुनिया! आग जला दे और थोड़ा दूधका प्रबन्ध कर।

दूसरे ही क्षण एक षोडश वर्षीया युवती बाहर निकल कर सहनकी तरफ चली। उसके सौन्दर्यपर मैं मुग्ध हो गया।

"क्या यह तुम्हारी बेटी है?"—मैंने पूछा।

उसने उत्फुल्ल होकर कहा—जी हाँ, वह मेरी कन्या है और अपनी स्वर्गीया माताकी तरह ही समझदार और तेज है।

उसके बाद वह मेरे लिए घोड़ोंका हुक्मनामा लिखने लगा और मैं उसके कमरेमें टँगी तसवीरोंको देखने लगा। उन चित्रोंमें किसी फजूलखर्च युवककी कथा थी। पहले चित्रमें बूढ़ा बाप अपने अधीर बेटेको बिदा कर रहा था। उसके एक हाथमें रुपयोंका तोड़ा था और दूसरा हाथ लड़केके सिरपर था।

दूसरे चित्रमें वह लड़का एक शानदार होटलमें धूर्त मित्रों तथा वेश्याओंसे घिरा दिखलाया गया था।

तीसरे चित्रमें उस युवकके सर्वनाशका चित्र था। सब कुछ गँवाकर वह फटे चीथड़े लपेटकर सूअर चराता और घूरपरके दाने बीनकर अपने पेटकी ज्वाला शान्त करता था। उसके चेहरेपर शोक और परितापके चिह्न थे।

अन्तिम चित्रमें उसके घर वापस आनेका चित्रण था। उसका वृद्ध पिता उसी पोशाकमें उसे लेनेके लिए आगे बढ़ रहा था। अभागा बेटा उसके पैरोंपर

गिरा हुआ था। दूसरी ओर नौकर उत्सवकी तैयारी कर रहा था और बड़ा लड़का उसका कारण पूछ रहा था।

प्रत्येक चित्रके नीचे भावके उपयुक्त कविताएँ लिखी थीं। आज भी वह मेरी आँखोंके सामने उसी प्रकार नाच उठता है।

उधर अधेड़ पोस्टमास्टरकी मूर्ति भी उसी प्रकार मेरे सामने आकर खड़ी हो जाती है।

जिस गाड़ीपर मैं आया था उसका भाड़ा चुकाकर मैं निश्चिन्त ही हुआ था कि दुनिया चाय लेकर उपस्थित हो गयी। उसके सौन्दर्यका जो प्रभाव मुझपर पड़ा था मेरा चेहरा देखते ही उसने ताड़ लिया। उसकी आँखें नीची हो गयीं।

मैं उससे बातें करने लगा। वह निःसंकोच मेरे प्रश्नोंका उत्तर देने लगी। हम तीनों बैठकर बातें करने लगे और चाय पीने लगे। क्षणभरमें वे लोग मुझसे इस तरह घुलमिल गये मानो सालोंकी जान पहचान हो।

मेरी गाड़ी तैयार खड़ी थी। लेकिन मुझे वहाँसे जानेकी इच्छा नहीं होती थी। अन्तमें मैं उठकर जानेके लिए खड़ा हो गया। पिता और पुत्री मुझे गाड़ीतक पहुँचाने आये। सहनमें आकर मैं खड़ा हो गया और दुनियाका चुम्बन करना चाहा। वह राजी हो गयी।

कई सालके बाद मुझे पुनः उधर जानेका मौका मिला। मुझे वह स्थान और अफसरकी वह लड़की भूली नहीं थी। मैं उनसे मिलनेकी शुभ कामना करता जा रहा था। कभी-कभी मैं यह भी सोचता था कि उस अफसरकी बदली हो गयी होगी, दुनियाका विवाह हो गया होगा। अथवा दोके दोनों इस संसारसे कूच कर गये होंगे। मेरे मनमें उत्कण्ठा और उदासी दोनो थी। इतनेमें मैं पड़ावपर पहुँच गया।

वह कमरा उसी तरह सजा-सजाया मुझे मिला। वे ही सब चित्र, वे ही सामान! पर उस बारकी भाँति खिड़कियोंपर गुलदस्ते नहीं थे।

अफ़सर सो रहा था। मेरे आगमनकी सूचना पाकर वह उठ बैठा। वह वही आदमी था, पर कितना बूढ़ा, कितना दुर्बल, कितना विपन्न! उसके सिरके

बाल घासकी तरह बढ़ गये थे। महीनोंसे हजामत नहीं बनी थी। चेहरेपर झुर्रियाँ पड़ गयी थीं। उसकी कमर झुक गयी थी। मुझे अपनी आँखोंपर विश्वास नहीं हुआ। चार ही वर्षमें इतना बड़ा परिवर्तन! कहाँ वह हट्टाकट्टा साइमन विरिन, कहाँ यह जर्जर शरीर!

मैंने उससे पूछा—क्या तुमने मुझे पहचाना? हमलोग पुराने मुलाकाती हैं।

उसने रुखाईसे कहा—हो सकता है! यह आम सड़क है। कितने लोग आकर यहाँ ठहरते रहते हैं।

"तुम्हारी लड़की दुनिया तो मजेमें है?"

"भगवान जानें।"

"क्यों, तुमने उसकी शादी कर दी?"

बूढ़ेने मेरी बात अनसुनी कर दी और अपने काममें लग गया। मैंने आगे कुछ पूछना उचित नहीं समझा। चायकी फरमायश की। मेरा मन असली बात जाननेके लिए अधीर हो रहा था। मैंने सोचा कि एक-दो ग्लास शराब पिलानेसे ही यह जोशमें आ जायगा और अपना मुँह खोल देगा।

मैंने शराबका ग्लास उसकी तरफ बढ़ा दिया। वह एक साँसमें उसे पी गया। मैंने दूसरा ग्लास भरकर उसे दिया। इसके पीते ही उसकी जबान खुल गयी। अब उसे मेरी याद आ गयी। उसने अपनी कथा आरम्भ की:—आप तो दुनियाको जानते ही हैं। उसे कौन नहीं जानता था। कितनी भोली-भाली वह थी। जो उसे देखता उसकी तारीफ करता। किसीको उसने कभी असन्तुष्ट नहीं किया। जो महिलाएँ इधरसे जातीं; उसे कुछ-न-कुछ उपहार जरूर दे जातीं। और पुरुष—वे यहाँ जरूर ठहरते। सभी उसे एक नजर देख लेनेके लिए लालायित रहते।

"कठोर-से-कठोर आदमी भी उसके सामने नरम हो जाता और उससे मीठी-मीठी बातें करता। बड़े-बड़े अफसर उससे बातें करनेके लिए यहाँ घंटों ठहर

जाते। वह घरकी मालकिन थी। सारी गृहस्थीका इन्तजाम वही करती। घर सजाकर रखती।"

"लेकिन मैंने उसकी तारीफमें कभी एक शब्द भी नहीं कहा! तब क्या मैं उसे प्यार नहीं करता था? क्या अपनी बेटीके लिए मेरे हृदयमें माया-ममता नहीं थी? क्या उसे यहाँ सुख नहीं था? लेकिन जो भाग्यमें लिखा रहता है, वह मिटाया नहीं जा सकता।

"तीन सालकी बात है। जाड़ेका महीना था। शाम हो रही थी। मैं यहीं बैठा अपना खाना तैयार कर रहा था और दुनिया बगलके घरमें बैठी कसीदा काढ़ रही थी। इसी समय एक सिरकनसियन फौजी अफसर आया और सवारी माँगी।

मैंने कहा—सभी घोड़े चरने गये हैं!

मेरे इस उत्तरसे वह जलभुन उठा। वह गाली बकने लगा और चाबुक तानकर मुझे मारना ही चाहता था कि दुनिया सामने आकर खड़ी हो गयी और मधुर स्वरमें बोली—क्या आप बिना चाय पिये ही जाना चाहते हैं?

उसे देखते ही वह सैनिक शान्त हो गया।

उसने जलपान तैयार करनेके लिए कहा और खुद कपड़ा बदलने चला गया। कपड़ा बदलनेपर मालूम हुआ कि वह हुसार है। उसका शरीर गठीला था और काली-काली मूँछें भीन रही थीं।

जलपान तैयार हुआ। उसने जलपान किया। हमलोगोंसे मीठी-मीठी बातें करता रहा। इतनेमें घोड़े आ गये और मैंने गाड़ी तैयार करवा दी।

लेकिन जब मैंने वापस आकर देखा तो वह बेहोश पड़ा था। सिरके दर्द-से छटपटा रहा था। यात्रा रोक दी गयी। मैंने अपनी चारपाई उसे सोनेके लिए दे दी।

दूसरे दिन उसकी हालत और भी बिगड़ गयी। उसका नौकर डाक्टर बुलाने गया। दुनियाने उसके सिरमें लेप लगाकर उसे बाँध दिया और उसीके पास

सीने बैठ गयी। जबतक मैं उसके पास रहता था वह बराबर कराहता रहता था। उसी तरह उसने चाय भी पी और भोजन भी किया।

दुनिया उसके पाससे हटती नहीं थी। रह-रहकर वह पानी माँगता और दुनिया उसे पिलाती रहती। हर बार वह दुनियाका हाथ अपने हाथमें लेकर दबाता मानो वह अपनी कृतज्ञता प्रकट कर रहा हो।

तीसरे पहर डाक्टर आया। उसने रोगीको देखा। उससे जर्मन भाषामें न-जाने क्या बातें कीं। अन्तमें उसने रूसी भाषामें कहा—इन्हें सिर्फ आरामकी जरूरत है। दो एक दिनमें इनकी तबीयत एकदम अच्छी हो जायगी। यात्रीने उसे पचीस रोबुल फीसका दिया और साथ ही भोजन भी कराया। दोनोंने डटकर खाना खाया। एक बोतल शराब पी गये और हँसी-खुशीसे बिदा हुए।

दूसरे दिन मुसाफिरकी तबीयत अच्छी हो गयी। वह हँस हँसकर कभी मुझसे और कभी दुनियासे बातें करता, सीटी बजाता, राहगीरोंसे बातें करता। हमलोगोंसे वह इतना हिलमिल गया कि तीसरे दिन चलते समय उसकी आँखों-में आँसू आ गये।

उस दिन रविवार था। दुनिया गिरजामें जानेकी तैयारी कर रही थी। मुसाफिरकी गाड़ी दरवाजेपर खड़ी थी। मुसाफिरने कहा—मुझे उधर ही तो जाना है, चलो तुम्हें गिरजाघरके सामने उतार दूँगा।

दुनियाके चेहरेपर घबराहट थी।

मैंने कहा—तू घबरायी हुई-सी क्यों दीखती है? ये कोई शेर-बाघ थोड़े हैं जो तुम्हें खा जायँगे! उनके साथ जानेमें हर्ज ही क्या है?

दुनिया चुपचाप गाड़ीमें बैठ गयी। गाड़ी चल पड़ी।

उसके जाते ही मुझे खटका हुआ। मेरा दिल धड़कने लगा। मन-ही-मन पछताने लगा कि उसे गाड़ीपर जानेके लिए मैंने क्यों आग्रह किया। मेरी अक्ल-पर उस वक्त पत्थर पड़ गया था। मैं किसी अज्ञात आशंकासे काँप उठा और गिरजेकी तरफ चल पड़ा।

प्रार्थना समाप्त हो गयी थी। लोग लौट रहे थे। पर दुनियाका कहीं पता नहीं था। मैं अन्दर घुस गया। पादरी वेदीसे नीचे उतर रहा था। दो बूढ़ी औरतें प्रार्थनामें लगी थीं पर दुनिया वहाँ भी नहीं थी। मैंने पूछताछ की तो मालूम हुआ कि वह वहाँ गयी ही नहीं।

मेरा दिल बैठ गया। बड़ी कठिनाईसे मैं घर लौटा। आशाकी एक क्षीण किरण मेरे हृदयमें मौजूद रही। मैंने सोचा कि अल्हड़ लड़कीने अगले पड़ाव-तक चली जानेकी नासमझी की है क्योंकि वहाँ मेरे एक रिश्तेदार रहते थे।

मुझे आशा थी कि शामतक वह उसी गाड़ीपर वापस आ जायगी। दिन पहाड़ हो गया। एक-एक घड़ी युगके समान बीतने लगी। शामको गाड़ी खाली लौटी। कोचवान नशेमें चूर था। उसने लड़खड़ाती जबानमें कहा—दुनिया उस यात्रीके साथ अगले पड़ावपर चली गयी।

मुझे गहरी चोट लगी। मैं कटे पेड़की तरह उसी पलँगपर धड़ामसे गिर गया जिसपर वह विश्वासघाती दो दिनतक पड़ा रहा। अब मेरी समझमें आया कि बीमारी बहानामात्र थी। वेदनासे मुझे भयानक ज्वर हो आया। मुझे अस्प-ताल भेज दिया गया और मेरी जगहपर दूसरा आदमी रख लिया गया।

वही डाक्टर मुझे भी देखने आया था। उसने बतलाया कि उस हुसारको कोई बीमारी नहीं थी। उसकी नीयत उसी समयसे बिगड़ी हुई थी। लेकिन उसके चाबुकके भयसे मैंने अपनी जबान नहीं खोली। उसने झूठ कहा या सच पर उसकी बातोंसे मुझे किसी तरहकी सान्त्वना नहीं मिली।

बुखार उतरते ही मैंने दो महीनेकी छुट्टी ली और बिना किसीसे कुछ कहे अपनी बेटीको खोजनेके लिए पैदल चल पड़ा। रोड पाससे मुझे मालूम हुआ कि उसका नाम मिन्स्की था। वह सोमलंस्कसे पीटसबर्ग जा रहा था। कोचवानसे मालूम हुआ कि रास्तेभर दुनिया रो रही थी यद्यपि वह अपनी इच्छासे जा रही थी।

मुझे पूरी आशा थी कि मैं अपनी बेटीको वापस ला सकूँगा। इसी उम्मीदपर मैं सेण्ट पीटसबर्ग पहुँचा और अपने एक पुराने परिचितके यहाँ ठहरा। मुझे मालूम हुआ कि मिन्स्की डिमटवी होटलमें ठहरा है। मैंने उससे

मिलनेका इरादा किया। दूसरे दिन तड़के ही मैं उसके डेरेपर पहुँचा और अर्दलीसे कहा कि मैं उसका एक पुराना सिपाही हूँ। उससे मिलने आया हूँ।

अर्दलीने कहा—साहब सो रहे हैं। ग्यारहके पहले वह किसीसे मिलते-जुलते नहीं। मैं वापस चला आया और दोबारा ग्यारह बजे फिर पहुँचा।

मिन्स्कीसे भेंट हुई। उसने पूछा—कहो भाई, क्यों आये?

मेरा दिल धड़कने लगा। आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह चली। मैंने रुँधे कण्ठसे कहा— भगवानके नामपर मेरे ऊपर रहम कीजिये।

उन्होंने गौरसे मुझे देखा। चौंक उठे। मेरा हाथ पकड़कर भीतर ले गये। दरवाजा बन्द कर दिया।

मैंने नम्रतासे कहा—जो हो गया सो हो गया। आपने अपनी काफी दिल-चस्पी कर ली। अब तो उसे लौटा दीजिये। उसका जीवन नष्ट न कीजिये।"

उसने व्याकुल होकर कहा—मैं अपराधी हूँ। तुमसे क्षमाकी भीख माँगता हूँ। लेकिन दुनियाको वापस मत माँगो। मैं उसे अपनेसे जुदा नहीं कर सकता। विश्वास मानिये, मैं उसे हर तरहसे सुखी रखनेका यत्न करूँगा। वह मुझे हृदयसे चाहती है। वह इस जीवनसे सुखी है। वह कौनसा मुँह लेकर आपके सामने जायगी। उसे भूल जाइये।

इतना कहकर उसने मेरी जेबमें कुछ डाल दिया और दरवाजा खोलकर बाहर कर दिया। मैंने अपनेको सड़कपर पाया। मेरी समझमें नहीं आया कि मैं सड़कपर कैसे आ गया। कुछ देरतक मैं वहीं चुपचाप खड़ा था। उसके बाद जेबमें हाथ डाला तो कागजका एक पुलिन्दा पाया। उसे बाहर निकालकर देखा। नोटोंका एक पुलिन्दा था। क्रोधसे मेरा शरीर काँपने लगा। घृणासे मैंने नोटोंको मरोड़कर वहीं फेंक दिया और पैरसे उन्हें कुचलकर आगे बढ़ा।

दो कदम आगे जाकर मैं रुक गया और कुछ सोचने लगा। पश्चात् पीछे लौटा। पर इतनी ही देरमें नोटोंका पुलिन्दा गायब हो गया था। मुझे लौटते देखकर एक नौजवान तेजीसे सामनेकी गाड़ीपर चढ़कर भागा। मैं उसे देखता रह गया।

मैंने अपनी नौकरीपर लौटनेका इरादा किया। लेकिन वहाँसे हटनेके पहले मैं एकबार अपनी प्यारी बेटीको देख लेना चाहता था।

इसलिए दोबारा मैं मिन्स्कीके यहाँ गया। लेकिन उसके अर्दलीने मुझे यह कहकर निकाल दिया कि आजकल साहब किसीसे मिलते-जुलते नहीं।

मैं लौट आया और बाजारमें इधर उधर-घूमने लगा। मेरे हृदयमें तूफान उठ रहा था। अचानक मेरी निगाह एक सुन्दर जोड़ीपर पड़ी जो मेरे बगलसे निकली। मैंने देखा कि मिन्स्की उसमें बैठा था। गाड़ी एक तिमंजिले मकानके सामने रुकी। वह गाड़ीपरसे उतरा और भीतर चला गया। मेरे दिमागमें एक विचार आया। मैंने कोचवानसे जाकर पूछा—क्यों भाई, यह गाड़ी तो मिन्स्की की है न?

कोच०—जी हाँ, आप क्या चाहते हैं?

मैं—आपके मालिकने दुनियाके नाम एक खत दिया था लेकिन मुझे पता याद नहीं रहा कि वह कहाँ रहती है।

कोच०—वह तो इसी मकानमें दो तल्लेपर रहती हैं। आप देरसे पहुँचे। अब तो वे खुद उनके पास पहुँच गये हैं।

"कोई हर्ज नहीं! इस कृपाके लिए धन्यवाद! मुझे देर तो जरूर हो गयी पर मैं अपना काम निकाल लूँगा।"

इतना कहकर मैं ऊपर चढ़ गया। दरवाजा बन्द था। मैंने कई बार दरवाजा खटखटाया पर कोई उत्तर नहीं मिला। अन्तमें दरवाजा खुला। एक दासी सामने आकर खड़ी हो गयी। मैंने पूछा :—

"क्या अडोटिया सेमियोनोना यहीं रहती हैं?"

दासी—आपका क्या काम उनसे है?

उसके प्रश्नका उत्तर दिये बिना ही मैं कमरेमें घुस गया।

दासी चिल्लाती रही—"आप अन्दर नहीं जा सकते। इस समय उनके मुलाकाती आये हुए हैं।"

लेकिन मैंने उसकी बातोंपर ध्यान नहीं दिया। अन्दर घुस गया। पहले दो कमरोंमें अँधेरा था। तीसरे कमरेमें प्रकाश था। कमरा खूब सजाया हुआ था। मिन्स्की गम्भीर मुद्रामें कुर्सीपर बैठा था। दुनिया शृंगार करके उसके कन्धेपर हाथ रखे कुर्सीके बल्लेपर इस तरह बैठी थी जैसे कोई घुड़सवारके बगलमें बैठा रहता है। स्नेहभरी आँखोंसे वह उसे देख रही थी और उसके घुँघराले केशोंपर अपनी कोमल अँगुलियाँ फेर रही थी। उसका सौन्दर्य कमरेमें बिखर रहा था। ऐसी सुन्दरता मैंने उसमें कभी नहीं देखी थी। मैं मन-ही-मन उसकी तारीफ करने लगा।

सिर नीचा किये ही उसने कहा—वहाँ कमरेमें कौन है ?

मैं चुप रहा। अब उसने सिर उठाया। मुझे देखते ही वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

मिन्स्की घबरा उठा। वह उसे उठानेके लिए अपनी जगहसे उठा। दरवाजेपर मुझे खड़ा देखकर उसने उसे वहीं छोड़ दिया और मेरी तरफ झपटा। वह क्रोधसे काँप रहा था। बोला—"आखिर तुम क्या चाहते हो ?" दाँत पीसते हुए उसने कहाः—"तुम इस तरह भूतकी तरह मेरे पीछे क्यों लगे हो ? क्या तुम मेरी जान लेना चाहते हो ? अभी निकलो यहाँसे !"

उसने मेरी गर्दन पकड़ी और बाहर ढकेल दिया। वहाँसे मैं अपने डेरेपर आया। मेरे साथियोंने अदालतमें जानेकी सलाह दी लेकिन कुछ सोचकर मैं राजी नहीं हुआ। दुनियाको मैंने त्याग दिया। दो दिनके बाद मैं अपने कामपर लौट आया।

तीन सालका जमाना गुजर गया। मैं अकेले जिन्दगी बिता रहा हूँ। न मैंने उसे देखा है और न उसका कोई समाचार ही मुझे मिला है। ईश्वर ही जानता है कि वह मर गयी या जिन्दा है। यह पहली घटना नहीं है। अतीतमें भोलीभाली युवतियाँ इसी तरह बदमाशोंद्वारा फँसायी गयी हैं और भविष्यमें भी इसी तरह होता रहेगा। उन्हें नष्टकरनेके बाद ये बदमाश दूधकी मक्खीकी तरह निकाल फेंकते हैं।

इस तरहकी अभागिन पोटसवर्ग तथा अन्य बड़े शहरोंमें सैकड़ोंकी तादादमें मिलेंगी, जो जवानीका गुमान किये फिरती हैं और कल भीख माँगती दिखायी देती हैं। कुछ दिनके बाद दुनियाकी भी यही हालत हो सकती है।

इस करुण कथाको कहते समय उसकी आँखोंसे आँसूकी नदी बह रही थी, जिससे उसके सारे कपड़े तर हो गये। उसे चैतन्य रखनेके लिए मैं उसे बराबर शराब पिलाता रहा। मेरा दिल भर आया। उसकी दयनीय दशापर मेरा हृदय पिघल गया। मैं वहाँसे बिदा तो हुआ लेकिन न मैं उसे भूल सका और न उसकी दुनियाको।

जमाना गुजर गया। एक दिन मुझे फिर उधरसे ही जाना पड़ा। मैंने अपने उस गरीब दोस्तकी पूछताछ की। मालूम हुआ कि वह पड़ाव तोड़ दिया गया। मैंने दरयाफ्त किया कि वह जिन्दा है या नहीं, पर इसका कोई उत्तर नहीं मिल सका। मैंने उसके गाँवमें जाकर उसका पता लेनेका इरादा किया।

वह चैतका महीना था। आकाशमें काले-काले बादल तैर रहे थे। पतझड़ आरम्भ हो गया था। हवामें पेड़ोंकी पीली-पीली पत्तियाँ उड़ रही थीं। मैं शामको उस गाँवमें पहुँचा और सरायमें ठहर गया। एक मोटी औरत घरसे निकलकर सहनमें वहीं खड़ी हो गयी जहाँ एकबार मैंने दुनियाका चुम्बन किया था। उससे मालूम हुआ कि एक साल पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी। इस मकानको एक शराब बनानेवालेने ले लिया है। वह मोटी औरत उसीकी पत्नी थी। मुझे बड़ा पछतावा हुआ। मैंने अपने मनमें कहा, इतना कष्ट व्यर्थ ही मैंने उठाया। सात रोबुल भी बेकार खर्च हुए।

मैंने उससे पूछा—उसकी मृत्यु कैसे हुई ?

"बाबूजी, उसने शराब पी-पीकर अपनी जान दे डाली !"

"वह कहाँ दफनाया गया ?"

"उसी परतीमें ! अपनी पत्नीकी कब्रकी बगलमें।"

"क्या तुम मुझे वह जगह दिखला सकती हो ?"

'क्यों नहीं, बाबूजी ।"

इतना कहकर उसने अपने लड़केको साथ कर दिया । रास्तेमें मैंने लड़केसे पूछा—"क्या तुम उसे जानते थे ?"

"उसे कौन लड़का नहीं जानता ! जब वह भट्टीसे निकलते तो हमलोग उनके पीछे दौड़ पड़ते । वे हमलोगोंको मूँगफली देते । सीटी बनाकर देते । उन्होंने मुझे सीटी बनाना भी सिखा दिया । वह दिनभर हमलोगोंके साथ फिरा करते ।"

"क्या इधरसे गुजरनेवाले यात्री उसकी खोज-खबर लेते हैं ?"

"अब तो इधरसे बहुत कम लोग आते-जाते हैं । कभी-कभी कानूनगो आता है । पर मरे हुए लोगोंसे उसका कोई मतलब नहीं रहता । पार साल गरमीमें एक महिला यहाँ आयी थीं । आपकी ही तरह उन्होंने उसकी पूछ-ताछ की और उसके कब्रतक गयीं ।"

"वह कैसी थी ?"

"बड़ी सुन्दर ! वह गाड़ीपर चढ़कर आयी थी । तीन छोटे-छोटे बच्चे थे, एक दासी थी और एक कुत्ता । जब उसने उसकी मृत्युका समाचार सुना तो रो पड़ी । सबको गाड़ीपर छोड़कर वह कब्रतक गयी । मैं रास्ता दिखानेके लिए चला तो उसने कहा—मुझे रास्ता मालूम है । जाते समय उसने मेरे हाथपर एक रुपया रख दिया ।

मैं कब्रके पास पहुँचा । खुला मैदान था । कहीं कोई घेरा नहीं था । ऊसर-भूमि । एक पेड़का नामतक नहीं । ऐसी सूनी कब्र मैंने कभी नहीं देखी थी ।

लड़केने अँगुलीके इशारेसे बतलाया—वही उसकी कब्र है । कब्रपर एक पीतलकी प्रतिमा थी और काला क्रास टँगा था ।

मैंने पूछा—क्या वह महिला यहाँ आयी थी ?

"मैं दूरसे देखता रहा। वह यहाँ आयी। कब्रपर लेट गयी और देरतक उसी तरह पड़ी रही। गाँवमें आकर उसने पादरीको बुलाया। उसे रुपया दिया और लौट गयी। जाते समय मुझे भी उसने एक रुपया दिया। बड़ी उदार महिला थी।

मैंने भी लड़केके हाथपर एक रुपया रख दिया। मुझे अपनी इस यात्रा तथा खर्चके लिए लेशमात्र भी पछतावा न रहा।

कफन-फरोश

आड्रियन प्रोचोरोफने अपना कुल सामान गाड़ीपर लाद दिया। घोड़े गाड़ी लेकर चलते बने। उसने दूकानमें ताला लगा दिया और "यह मकान बिकाऊ है" की तख्ती उसपर लटकाकर पैदल ही अपने नये मकानकी ओर चल पड़ा।

इस मकानमें उसने बीस सालतक चैनकी जिन्दगी बितायी थी। लेकिन वह पीली कोठी उसको नजरमें गड़ गयी। बहुत ज्यादा दाम देकर उसने उसे खरीदा। लेकिन आज उस मकानमें जानेपर न-जाने क्यों उसका मन प्रसन्न नहीं था।

यहाँ आकर उसने देखा कि सारा सामान इधर-उधर बिखरा पड़ा है। उसे पुराने मकानके आरामकी याद आ गयी। वह अपने नौकरों और दोनों बेटियों-पर बिगड़ पड़ा और खुद सब चीजोंको सहेजने लगा। तसवीर अपनी जगह-पर टाँग दी गयी, अलमारीमें तश्तरिया सजा दी गयीं, सोनेके कमरेमें पलँग डाल दिये गये, बैठकमें टेबुल और कुर्सियाँ सजा दी गयीं। मुर्दोंके कफनके कामकी सारी चीजें यथास्थान रख दी गयीं। दरवाजेपर लम्बा-चौड़ा साइनबोर्ड लटका दिया गया। जिसमें लिखा था:—

"यहाँ सादे और रंगीन कफन बनाये तथा बेचे जाते हैं। किरायेपर भी दिये जाते हैं तथा मरम्मत किये जाते है।" लड़कियाँ अपने कमरोंमें चली गयीं। आड्रियन एक बार सारे मकानमें घूम आया और खिड़कीपर बैठ गया। उसने चाय माँगी।

आड्रियनकी सूरत बड़ी ही मनहूस थी। उसके चेहरेसे मनहूसियत टपकती थी। वह अपनी खिड़कीपर गुमसुम बैठा रहता। उसकी जबान तभी खुलती जब उसे अपनी लड़कियोंको डाँटना रहता या गाहकसे बात करना रहता। वह गाहकोंसे मनमाना दाम लेता।

खिड़कीपर बैठकर वह चुपचाप चाय पीने लगा। वह प्रतिदिन सात प्याला चाय पीता था। वह चाय सुड़कता जाता था और किसी गम्भीर समस्यापर विचार करता जाता था। शायद वह सप्ताहभर पहले होनेवाली बारिशकी बात सोच रहा था। जब उस सैनिककी लाश शहरके फाटकसे बाहर भी नहीं हुई थी मूसलधार पानी बरसने लगा था।

उस दिन बारिशके कारण कितनोंके कपड़े भींग गये थे और कितने हैट खराब हो गये थे। मुर्दोंके साथ पहनकर जानेवाले कपड़ोंका पुराना स्टाक अब निकम्मा होता जा रहा था। इसलिए नया बनवानेकी उसे चिन्ता पड़ी थी। नया बनवानेमें उसे बहुत खर्च करना पड़ता था। उसी समय उसे उस व्यापारीकी पत्नीकी याद आयी जो सालभरसे मृत्युशय्यापर पड़ी अपनी अन्तिम घड़ियाँ गिन रही थी। उसके मरनेपर उसने अच्छी रकम कमानेकी आशा की थी। लेकिन उसमें सबसे बड़ी बाधा यह थी कि वह दूसरे मुहल्लेमें चली गयी थी जो यहाँसे दूर था। इसे इतनी उम्मीद नहीं थी कि उसके लड़के यहाँतक आनेका कष्ट उठावेंगे। वे अवश्य किसी समीपके कफन-फरोशसे अपना काम निकाल लेंगे।

वह इसी उधेड़बुनमें पड़ा था कि दरवाजेपर किसीने जोरसे धक्का दिया।

कफनफरोश—कौन है?

उसने दरवाजा खोल दिया और एक जर्मन व्यापारीने कमरेमें प्रवेश किया। उसने हँसकर कहा—मेरा नाम गोलिब शल्ट्ज है। मेरा जूतेका कारोबार है। आपके पड़ोसमें ही मेरी दूकान है। कल मेरी शादीकी रजत जयन्तीका भोज है। पड़ोसीके नाते आपको भी निमन्त्रण देने आया हूँ। सपरिवार पधारनेका कष्ट कीजियेगा।

कफनफरोशने अपने मोची पड़ोसीको आदरसे बिठाया। चाय बनाकर दी और प्रेमसे बातें करने लगा। क्षणभरमें ही दोनोंमें घनिष्ठता हो गयी।

आड्रियनने पूछा—आपका कारोबार कैसा चलता है?

शल्टज—किसी तरह निर्वाह हो ही जाता है। मुझे कोई खास शिकायत नहीं है। पर मेरा रोज़गार आपके रोजगारकी बराबरी नहीं कर सकता। जिन्दा

आदमी बिना जूतेके अपना काम चला सकता है लेकिन मुर्दा आदमी तो बिना कफनके नहीं रह सकता ।

अड्रियन—तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन यदि जिन्दा आदमीके पास जूते खरीदनेके लिए पैसे नहीं हैं और वह नंगे पैर चलता है तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता लेकिन जब कोई मोहताज मर जाता है तब उसे मुफ्तमें कफन देना पड़ता है।

इसी तरहकी बातें दोनोंमें देरतक होती रहीं। अन्तमें मोची उठ खड़ा हुआ और बिदा माँगकर चल पड़ा। चलते समय उसने निमंत्रणकी फिर याद दिलायी।

दूसरे दिन दोपहरको कफनफरोश अड्रियन अपनी दोनों बेटियोंको लेकर मोची शल्ट्ज़के यहाँ भोज खाने पहुँचा। शल्ट्ज़के यहाँ मेहमानोंकी भीड़ लगी थी। ज्यादातर जर्मन व्यापारी अपनी पत्नियोंके साथ आये थे। अड्रियन परिवारके अलावा एक ही और रूसी निमंत्रित व्यक्तियोंमें था। उसका नाम युर्को था। वह इस्थोनियाका पहरेदार था। इस मामूली पदपर रहते हुए भी वह शल्ट्ज़का कृपापात्र बन गया था। उसने बीस सालतक दियानतदारीसे अपना काम किया था।

१८१२ ई०में इस्थोनियामें जो भयानक अग्निकाण्ड हुआ था, उसमें इसकी झोपड़ी भी जलकर भस्म हो गयी थी; लेकिन फ्रांसीसी सेनाके भगाये जानेके बाद ही उस स्थानपर नयी झोपड़ी खड़ी हो गयी थी और वह फिर उसी तरह अपने कामपर डट गया था।

निकित्स्की के दरवाजेके पासके सभी जर्मन व्यापारी उसे जानते थे। कभी कभी उन लोगोंने युर्कोकी झोपड़ीमें रात भी बितायी थी।

अड्रियनने सोचा कि कभी-कभी इस आदमीकी मददकी जरूरत पड़ सकती है। इसलिए उसने तुरन्त उससे जानपहचान कर ली। भोजमें भी दोनों साथ ही बैठे।

शल्ट्ज अपनी पत्नी तथा षोडशवर्षीया पुत्रीके साथ मेहमानोंकी खातिर-

दारीमें लग गया। शराबका दौर चल रहा था। युर्कोने अकेले चार आदमीका भोजन किया। अड्रियन उससे पीछे रहना अपना अपमान समझता था, लेकिन उसकी लड़कियोंने भलमनसाहतसे काम लिया।

शराबका दौर तेजीसे चला। बोतल-के-बाद बोतल खुलने लगे। भोजनके अन्तमें सभी मेहमानोंने मेजमानकी चालीस वर्षीया अधेड़ पत्नीको एक-एक करके चूमा और बैठकर लगे उसका स्वास्थ्यपान करने।

इतनेमें मेजमानने सबका ग्लास भर दिया और चिल्ला उठाः—यह ग्लास अतिथियोंके स्वास्थ्यके लिए है। अब तो प्रत्येक मेहमानके स्वास्थ्यके लिए अलग-अलग ग्लास पीया जाने लगा। उसके बाद मास्को तथा अन्य दर्जनों जर्मन नगरोंके स्वास्थ्यके लिए पीया जाने लगा। प्रत्येक व्यवसाय-संघके स्वास्थ्यके लिए लोगोंने पीया। अन्तमें मालिक और मजदूरोंके स्वास्थ्यके लिए पीया गया।

अड्रियन जोश-खरोशके साथ पीता जा रहा था। वह पूरे नशेमें हो गया था। उसने प्रस्ताव किया कि मौजके नामपर भी एक बार पीना चाहिये। इसी समय एक रोटीफरोश उठ खड़ा हुआ और बोला—हमलोगोंको अपने गाहकोंकी यादमें एक प्याला पीना चाहिये।

यह राय सभी लोगोंको पसन्द आयी। सभी उठकर एक दूसरेकी अभ्यर्थना करने लगे। दर्जी मोचीकी, मोची दर्जीकी, रोटीफरोश कफनफरोशकी और कफनफरोश रोटीफरोशकी। इसी आनन्द-मङ्गलके बीच युर्कोने कफनफरोशसे कहा—भाई, तुम्हें अपने मरे हुए गाहकोंकी यादमें एक प्याला पीना चाहिये।

सभी खिलखिलाकर हँस पड़े। लेकिन कफनफरोशने इसमें अपना अपमान समझा, उसका चेहरा उतर गया। पर किसीने उसपर ध्यान नहीं दिया। इसी तरह खाते-पीते बहुत रात बीत गयी। गिरजेके घण्टेकी आवाज सुनकर सब लोग उठ खड़े हुए।

बहुत रात गये लोग विदा हुए। पर सभी मस्त थे। रोटीफरोश और जिल्दसाजने युर्कोकी बाँह पकड़कर उठा लिया और उसकी झोपड़ीमें छोड़ आये।

कफनफरोश नशेमें चूर घर लौटा। अपमानकी ज्वालासे उसका शरीर झुलस रहा था। वह आप-ही-आप बकने लगा—इस तरहकी बातें क्यों कही जायँ। क्या मेरा पेशा औरोंसे बुरा है? क्या कफनफरोश हत्यारेका भाई है? ये काफिर मुझपर हँस क्यों रहे थे? क्या मैं तमाशा था? मैं तो उन्हें गृह-प्रवेशमें अपने यहाँ निमन्त्रण देनेवाला था? अब तो मैं कभी उन्हें निमन्त्रण नहीं दूँगा। अब तो मैं उन्हींको निमन्त्रण दूँगा जिनसे मेरा रोजगार चलता है अर्थात् मुर्दोंको।

जमीनपर बैठा नौकर उसका जूता खोल रहा था। उसकी अन्तिम बात सुनकर उसने कहा—आप क्या कहते जा रहे हैं? भगवानका नाम लीजिये। गृह-प्रवेशके उत्सव में मुर्दोंको निमन्त्रण!, राम! राम!! कैसा अनर्थ आप कह गये?

अड्रियन—"ईश्वरकी सौगन्ध खाकर मैं कहता हूँ कि मैं उन्हें कल ही निमन्त्रण दूँगा।" इतना कहकर वह आवाहन करने लगा—"ऐ मेरे उदार शुभचिन्तक! कल शामको मेरे यहाँ आपका निमन्त्रण है। ईश्वरने जो कुछ नियामत बनाया है, वह सब मैं आपको कल अर्पित करूँगा।"

इसके बाद वह सो गया। उसने सपनेमें देखा—

"उसी रातमें उस सौदागरकी पत्नीका देहान्त हो गया। उस व्यापारीके मैनेजरने अड्रियनके पास इसकी सूचना भेज दी। अड्रियनने उसे इनाम देकर विदा किया और गाड़ीपर सवार होकर रसगुलियाई पहुँचा।

मृतकके दरवाजेपर पुलिसका पहरा था। व्यापारियोंका आना-जाना इस तरह लगा था जिस तरह लाशकी गन्ध पाकर कौवे इकट्ठे हो जाते हैं। टेबुल-पर लाश पड़ी थी। उसके चारों ओर सगे-सम्बन्धियों, दोस्तों और पड़ोसियों-का समूह जमा था। सभी खिड़कियाँ खोल दी गयी थीं, चिराग जल रहे थे। पादरी प्रार्थना कर रहा था।

अड्रियन उसके भतीजेसे मिला और कहा कि कफनके सारे सामान ठीक समयपर पहुँचा दिये जायँगे।

भतीजेने उसे धन्यवाद देते हुए कहा—मैं इस अवसरपर मोलभाव नहीं करना चाहता, सारी बातें आपपर छोड़ देता हूँ। उमीद है कि आप मुनासिब दाम लेंगे।

अड्रियनने कसम खाकर कहा कि वह एक कौड़ी भी गैरमुनासिब नहीं लेगा।

इतना कहकर वह कफनके सामानका प्रबन्ध करने चला गया।

दिनभर वह अपने मकानसे उस मकानतक दौड़ता रहा। शामतक सब कुछ ठीक करके वह पैदल ही फिर लौटा।

चाँदनी रात थी। कफनफरोश निकिस्कीके दरवाजेतक मजेमें पहुँच गया। गिरजेमें युर्कोका पहरा था। अड्रियनको पहचानकर उसने सादर नमस्कार किया। रात ज्यादा चली गयी थी। कफनफरोश अपने मकानके नजदीक पहुँच चुका था। एकाएक उसे ऐसा मालूम हुआ कि कोई उसके दरवाजेके पास पहुँचा, दरवाजा खोला और भीतर घुस गया।

अड्रियन सोचने लगा—इतनी रातको मुझे खोजने कौन आया है? चोर तो नहीं है या मेरी लड़कियोंने किसीसे गुप्त प्रेम तो नहीं कर लिया है जो मौका पाकर अभिसारमें आया है? आसार अच्छे नहीं नजर आते!

कफनफरोश अपने दोस्त युर्कोकी मददके लिए बुलाना ही चाहता था। इसी समय एक दूसरा व्यक्ति भी दरवाजेके पास पहुँचा। वह भीतर घुसना ही चाहता था कि उसकी नजर मकान-मालिकपर पड़ी। वह रुक गया और अपना तिकोना हैट उतार लिया। चेहरा पहचाना हुआ मालूम हुआ लेकिन जल्दीमें वह कुछ स्थिर नहीं कर सका।

अड्रियनने हाँफते हुए कहा—आप मुझसे ही तो मिलने आये हैं? भीतर चलिये।

उसने रुखाईसे कहा—उत्सवमें बाधा न डालो। आगे बढ़ो और मेहमानोंका स्वागत करो।

आवभगतके लिए समय नहीं था। अड्रियनने दरवाजा खोला, भीतर चला,

आगन्तुक उसके पीछे हो लिया। अड्रियनको ऐसा मालूम हुआ कि मकानमें बहुतसे लोग इधर-उधर घूम रहे हैं।

वह सोचने लगा—यह कैसी बला है? उसने कमरेके भीतर पैर रखा ही था कि उसका पैर फिसल गया। कमरा मुर्दोंसे भरा था। चन्द्रमाका क्षीण प्रकाश खिड़कीसे होकर उनके काले, पीले, पिचके चेहरेपर पड़ रहा था। किसीका मुँह खुला था और किसीकी आँखें खुली थीं।

अड्रियनने देखा कि जिन लोगोंको उसने कफन दिया था सभी वहाँ मौजूद थे। जो व्यक्ति उसके साथ घुसा था, वह वही सैनिक था जो उस दिन वर्षाके समय दफनाया गया था।

सभी लोग उसे घेरकर खड़े हो गये। सिर्फ एक मुर्दा उसके पास नहीं आया। वह दूर ही खड़ा रहा क्योंकि दरिद्र होनेके कारण उसे पर्याप्त कफन नहीं मिला था। इसलिए वह चिथड़ा लपेटे था। उसके चेहरेपर घृणा और शर्मके भाव थे। बाकी सभी सज-धजके साथ थे।

सैनिकने कहा—आपका निमन्त्रण पाकर हम सब लोग कब्रसे उठकर यहाँ आये हैं। सिर्फ वे ही लोग नहीं आ सके हैं जिनका शरीर सड़गलकर मिट्टीमें मिल गया है, केवल ठटरी बाकी रह गयी है। उनमेंसे एक व्यक्ति तुमसे मिलनेके लिए इतना आतुर था कि वह किसी भी तरह रुक नहीं सका।

उसी समय एक ठटरी भीड़को चीरती हुई अड्रियनके सामने आकर खड़ी हो गयी। उसकी खोपड़ी मुस्कुरा उठी। उसके ऊपर इधर-उधर हरे और लाल कपड़ोंके चीथडे लटक रहे थे।

ठटरीने कहा—शायद तुम मुझे पहचान नहीं रहे हो? मैं पीटर पिट्रोविच कुरीफीन गार्डोंका सार्जण्ट हूँ। पहला कफन तुमने मेरे ही लिए बेचा था और धोखा देकर बढ़ियाका दाम लेकर घटिया कफन दे दिया था।

इतना कहकर उसने उसे गले लगानेके लिए अपना दोनों हाथ बढ़ाया। लेकिन अड्रियनने अपना सारा साहस बटोरकर उसे ढकेल दिया। वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा और चूर-चूर हो गया।

उससे सभी मुर्दोंमें खलबली मच गयी। अपने साथीके सम्मानके लिए सभी उठकर खड़े हो गये और धमकी देते हुए अड्रियनकी तरफ बढ़े। उनकी चिल्लाहटसे अड्रियनका दिमाग खराब हो गया। वह भी लड़खड़ाकर उसी सार्जेण्टकी ठटरीपर गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

सवेरा हुआ। सूरज आकाशमें तैरने लगा। खिड़कीसे सूरजकी रोशनी अड्रियनके चेहरेपर पड़ी। गर्मीसे व्याकुल होकर उसकी आँखें खुल गयीं। उसने देखा कि नीचे बैठकर उसका नौकर चायके लिए पानी गरम कर रहा है। रातकी सारी घटना उसे याद आने लगी। सौदागरकी पत्नी, सार्जेण्ट, सैनिक सभी उसकी आँखोंमें नाचने लगे। वह इस उम्मीदमें चुप रहा कि उसका नौकर मुँह खोलेगा और रातकी घटनाका सविस्तर वर्णन करेगा।

लेकिन नौकरने चायका प्याला आगे बढ़ाते हुए कहा—आज तो आप बहुत देरतक सोये ? आपका दोस्त वह दर्जी आया था और युर्को आपको याद दिलाने आया था कि आज इन्सपेक्टरके जन्म-दिवसके उत्सवमें चलना है। पर आप गहरी नींदमें थे, इसलिए हम लोगोंने जगाना उचित नहीं समझा।

"क्या सौदागरकी मृतपत्नीका भी कोई आदमी आया था ?"

"मृत पत्नी ? तब क्या वह मर गयी ?"

"कैसी मूर्खताकी बातें करता है ? कल ही तो उसके लिए कफन वगैरह भेजा गया है ?"

"आपका होश ठिकाने है या नहीं ? क्या भोजका नशा अभीतक नहीं उतरा है ? दिनभर तो आप उस मोचीके भोजमें थे। रातको नशेमें चूर घर लौटे। तबसे अभीतक सोते रहे। इतना दिन चढ़नेपर तो आपकी नींद टूटी है।"

उसने प्रसन्न होकर कहा—क्या तू सच कह रहा है ?

"और नहीं तो क्या ?"

"अच्छी बात है ! चायका प्याला टेबुलपर रख दे और मेरी लड़कियोंको बुला।"

किताबका कीड़ा

बीस साल पहलेकी बात है। मईका महीना था। उस दिन दिनभर सूर्य चमकता रहा। वह दिन मुझे भूलता नहीं। वह दिन कभी भूल भी नहीं सकता। इस घटनाकी यादके साथ ही उस दिनकी सारी बातें आँखके सामने नाचने लगती हैं।

दिनके कठिन परिश्रमके बाद शामको मैं घरसे बाहर निकला। मीठी पुरवैया हवा चल रही थी। सड़कोंकी रोशनीसे आकाशपर छिटके बादल सुनहले हो रहे थे। मैं आध घण्टेतक इधर उधर टहलता रहा। पोर्टलैण्ड स्ट्रीट पार करके मैं मेरिलबोन रोडपर पहुँचा। वहींपर ट्रिनिटी गिरजाके बगलमें पुरानी पुस्तकोंकी एक दूकान थी। बरामदेमें खड़ा होकर मैं पुस्तकें देखने लगा। एक पुस्तक मुझे पसन्द आ गयी। उसे हाथमें लेकर उसकी कीमत चुकानेके लिए मैं दूकानके भीतर गया।

मेरे साथ ही एक दूसरा व्यक्ति भी बरामदेमें खड़ा होकर पुस्तकोंको निहार रहा था। पुस्तक लेकर ज्यों ही मैं बाहर निकला वह व्यक्ति ललचायी आँखोंसे मेरी ओर देखकर मुस्कुरा उठा। वह कुछ कहना चाहता था। मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा। वह भी मेरे पीछे चला। गिरजाके पास आकर वह मेरे सामने आ गया और कहा—यदि आपको नागवार न मालूम हो तो मैं आपसे एक सवाल पूछूँ।

मैं खड़ा हो गया और उसका चेहरा देखने लगा।

"क्या आपने उस पुस्तकके पोस्तीनपर लिखे नामको पढ़ा है?"

उसकी बोलीमें दीनता थी। उसका गला रुँधा हुआ था। मुझे ख्याल हुआ कि कदाचित् वह मुझसे वह पुस्तक माँगना चाहता है लेकिन उसकी सूरत भिखमङ्गेकी-सी नहीं थी। उसकी उम्र साठके लगभग थी। उसके लम्बे-

पतले केश और दाढ़ी सफेद हो गये थे। उसका चेहरा सूख गया था और उसकी आँखें धँसी हुई थीं। उसकी पोशाक अत्यन्त साधारण थी। लेकिन उसकी बोलचाल सुसंस्कृत थी जिससे अनुमान होता था कि कभी इसकी दशा अच्छी रही होगी। उसकी बोलीमें नम्रता, चतुरता पर साथ ही दीनता थी। मैंने बड़ी नरमीसे उत्तर दिया—नहीं, मैंने नहीं पढ़ा है।

इतना कहकर मैंने पुस्तकका पन्ना उलटा और सड़ककी रोशनीमें उसपर लिखे नामको पढ़नेका यत्न करने लगा। एक कोनेमें पेंसिलसे स्पष्ट अक्षरोंमें लिखा था—क्रिस्टा फर्सन १८४९

उसने धीमे स्वरसे कहा—यह मेरा ही नाम है।

"क्या सचमुच यह किताब आपकी थी?"

उसने रूखी हँसी हँसकर सिर हिलाते हुए कहा—जी हाँ, कभी यह मेरी ही किताब थी। क्या आपने क्रिस्टा फर्सनके पुस्तकालयके नीलाम होनेका इश्तहार नहीं पढ़ा था? संभव भी नहीं है क्योंकि उस समय आप बच्चे रहे होंगे। यह १८६० की बात है। दुकानोंपर मेरी किताबें अक्सर पायी जाती हैं। आपके आनेके पहले ही इस पुस्तकपर मेरी नजर पड़ी थी। आपको इसे उलट-पुलटकर देखते हुए देखकर मेरे मनमें उत्सुकता हो गयी कि देखें आप यह किताब खरीदते हैं। आप मेरी अनधिकार चर्चाके लिए क्षमा करेंगे। किताबोंके प्रेमने बरबस इस तरह आपको छेड़नेके लिए बाध्य किया। क्या आप नहीं जानते कि ......।

इतना कहकर वह मेरी ओर देखने लगा। उसके अधूरे वाक्यको पूरा करते हुए मैंने कहा—सचमुच आप पुस्तकोंके प्रेमी हैं।

उसने पूछा—क्या आपने किताबोंका अच्छा संग्रह किया है?

"यही कुछ एक सौ होंगी। जिसके पास अपना निजी घर नहीं है उसके लिए यही बहुत है।

मेरी बातपर वह मुस्कुरा पड़ा। बड़ी नम्रतासे बोला—मेरे पुस्तकालयमें २४७१८ पुस्तकें थीं।

मेरी उत्सुकता और दिलचस्पी बढ़ रही थी। कोई और बात मनमें न आने-पर मैंने पूछा—क्या उस समय आप लण्डनमें ही रहते थे।"

"यदि आप पाँच मिनटका समय दे सकें तो मैं अपना मकान आपको दिखला दूँ। वह मकान जो किसी समय मेरा निजी था।"

मैं उसके साथ चल पड़ा। थोड़ी दूर चलकर वह रिजेण्ट पार्कमें एक आलीशान मकानके सामने खड़ा हो गया। बोला—"उस समय मैं इसी मकान में रहता था। फाटकके दाहने तरफवाले कमरेमें मेरा पुस्तकालय था।" इतना कहकर उसने ठंढी साँस ली।

मैंने धीरेसे कहा—आपका भाग्य बिगड़ गया।

"अपनी ही करनीसे! मेरे पास काफी संपत्ति थी। लेकिन उतनेसे मुझे सन्तोष नहीं हुआ। मैं व्यवसायमें प्रवृत्त हुआ, लेकिन उसका क, ख, भी मैं नहीं जानता था। वही मेरे सर्वनाशका कारण हुआ।"

इतना कहकर वह लौट पड़ा। हम लोग फिर उसी गिरजाके पास आ गये। वहीं ठहरकर उसने मुझसे पूछा—क्या मेरी और भी कोई पुस्तक आपने खरीदी है?

"मुझे याद तो नहीं आता। यह नाम मेरी आँखोंके सामने पहले-पहल आया है।"

भावुकतासे प्रेरित होकर मैंने उससे पूछा—यदि आप यह पुस्तक चाहें तो मैं खुशीसे आपको दे सकता हूँ।

इस प्रश्नसे उसका चेहरा खिल उठा। क्षणभर वह झिझका, हिचकिचाया। लेकिन आपसे-आप उसके दोनों हाथ मेरी ओर बढ़ गये। किताब हाथमें लेकर वह खिल उठा। बोला—अभी भी मेरे पास कुछ किताबें हैं पर उनकी संख्या नगण्य है। मेरे पास साधन नहीं है कि मैं उनकी संख्या बढ़ा सकूँ। इस उदा-रताके लिए मैं किन शब्दोंमें आपको धन्यवाद दूँ।

इसके बाद हम दोनोंने एक दूसरेसे विदा ली।

(२)

उन दिनों मैं कैम्पडन टाउनमें रहता था। उस घटनाके कोई दो सप्ताह बाद एक दिन तीसरे पहर मैं घरसे निकला। इधर-उधर घूमकर मैं हाईस्ट्रीटकी एक किताबकी दूकानकी तरफ बढ़ा। दूकानके सामने क्रिस्टा फर्सनको मैंने खड़ा देखा। बड़े प्रेमसे हम लोग मिले। उनकी हालत पहलेसे भी बिगड़ी हुई थी। उखड़ी आवाजसे उन्होंने कहा—मेरा डेरा यहीं पास ही है। मैंने आपको कई बार देखा लेकिन नजर बचाकर चला गया।

मेरी जबानसे भी अचानक निकल पड़ा—मैंने भी कई बार आपको देखा। क्या आप अकेले रहते हैं?

"नहीं, मेरी पत्नी भी हैं।"

उसकी वाणीमें घबराहट थी। उसकी आँखें झुकी हुई थीं। हम लोग टहलकर बातें करने लगे। क्रिस्टा फर्सन कुलीन, बुद्धिमान् और विद्वान् था। मैंने पूछा—क्या आप लिखा भी करते हैं?

"कभी नहीं लिखा। मुझे पढ़नेका ही रोग है।"

उसके बाद वह चुपचाप चला गया।

दो ही दिन बाद अचानक अपने मकानवाले सड़कके मोड़पर क्रिस्टा फर्सनसे फिर भेंट हो गयी। उसके चेहरेका रङ्ग देखकर मैं फक् हो गया। उसका चेहरा सूखकर काँटा हो गया था। उसने सूखी हँसीसे मेरा स्वागत किया। मैंने सापेक्ष दृष्टि उसपर डाली।

उसने उदासीनतासे कहा—मैं लन्दन छोड़ रहा हूँ।

"क्या हमेशाके लिये?"

"क्या करूँ, कोई चारा नहीं है। मेरी पत्नीका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। उसे जलवायु-परिवर्तनकी आवश्यकता है। इसलिए हम लोगोंने लन्दन छोड़ देनेका ही निश्चय किया है।

मैं पूछने ही वाला था कि कहाँ जानेका निश्चय किया है कि वह बोल

उठा—मेरा डेरा यहाँसे निकट है। क्या आप एकबार मेरी पुस्तकोंको देखनेका कष्ट उठावेंगे?

मैं राजी हो गया। दो मिनिटमें हम लोग एक मकानमें पहुँचे। महल्ला शरीफोंका था। मकानके सामने जाकर वह ठिठक गया मानो मुझे बुलाकर उसने अच्छा नहीं किया था। बोला—आपको ले चलनेमें मुझे शर्म मालूम हो रही है। आपके बैठाने लायक मेरे पास जगह नहीं है।

"इतने संकोचकी आवश्यकता नहीं है" कहकर मैं आगे बढ़ा। लाचार वह मुझे लेकर दो-तल्लेपर गया और अपने कमरेका दरवाजा खोला। मैं डेहरी-पर खड़ा होकर भीतरका दृश्य विस्मयके साथ देखने लगा। कमरा नितान्त छोटा था। मुश्किलसे एक आदमीके रहने लायक। लेकिन उसीमें उसका सारा प्रबन्ध था। कमरेके एक-तिहाई हिस्सेमें किताबें भरी थीं। कई कतारोंमें जमीन-से छततक किताबोंका अटान खड़ा था। एक किनारे एक गोल टेबुल और तीन कुर्सियाँ थीं। इससे ज्यादा सामानकी कमरेमें गुञ्जायश नहीं थी। कमरे-की खिड़कियाँ बन्द थीं। हवाकी कहींसे भी गुंजायश नहीं थी। कागज की मँहकसे सारा कमरा दुर्गन्धमय हो रहा था।

"आपने तो बहुत थोड़ी किताबें बतलाई थीं लेकिन इनकी संख्या तो मेरी कितोबोंसे पाँचगुनी होगी।"

"मुझे इनकी तादाद याद नहीं। जगहकी कमीके कारण मैं इन्हें ठीकसे रख नहीं सकता। बगलवाले कमरेमें थोड़ी और किताबें हैं।"

इतना कहकर वह मुझे बगलके सोनेवाले कमरेमें ले गया। इस कमरेमें किताबोंका उतना अम्बार नहीं था तोभी उनके ढेरने एक दीवारको बिलकुल छिपा रखा था। यह कमरा दो आदमियोंके सोने लायक हरगिज नहीं था।

हम लोग लौटकर बैठकमें आये। क्रिस्टा फर्सन एक-एक करके अपनी किताबें दिखलाने लगा। बीच-बीचमें वह उसासें भरता और अपना इतिहास कहता था।

"मैं इस मकानमें आठ सालसे रहता हूँ। मेरी दो शादियाँ हो चुकी हैं।

पहली पत्नीसे एक कन्या थी जिसे मरे कई साल हो गये। मेरी दूसरी पत्नी मेरी पहली पत्नीकी गवर्नेस थी।"

मैं चुपचाप उसका इतिहास सुनता रहा। बोला—देहातमें तो आपको इन्हें रखनेके लिए आलमारियाँ मिल जायँगी?"

उसका चेहरा उदास हो गया। वह विषादके साथ मेरी ओर देखने लगा। मैं कुछ कहने ही वाला था कि दरवाजेपर किसीके पैरकी आवाज सुनायी दी।

उसने चौंककर कहा—मेरी पुस्तकोंका उद्धार करनेवाले महाशय आ गये। भीतर आओ पम्फर्ट!

कमरेका दरवाजा खुला। पम्फर्टने प्रवेश किया। पम्फर्ट मेरा पुराना परिचित था यद्यपि इधर बहुत दिनोंसे मेरी मुलाकात नहीं हुई थी।

मुझे देखते ही उसने कहा—मुझे क्या मालूम कि आपको मि० क्रिस्टा फर्संनसे परिचय है!

"मुझे भी तुम्हें यहाँ देखकर अचरज हो रहा है।"

क्रिस्टा फर्सन विस्मयके साथ हम लोगोंकी तरफ देखने लगा।

पम्फर्ट—सब कुछ ठीक हो गया है। आप जब चाहें इन्हें अलग कर सकते हैं।

क्रिस्टा०—आपकी इस कृपाके लिए धन्यवाद। पर अब इसकी कोई जल्दी नहीं है। एक-दो दिनमें मैं आपको निश्चित उत्तर दूँगा।

इतना सुनकर वह जानेके लिए उद्यत हुआ। मैं भी विदा लेकर उसके साथ ही बाहर निकला।

मकानसे बाहर निकलकर मैंने सन्तोषकी साँस ली। मेरे साथीका भी दम घुट रहा था। उसने भी बाहर निकलते ही जम्हाई ली।

हम लोग रिजेण्ट पार्ककी तरफ पैदल ही चले। उसने कहा—यह मकान मेरी चाचीका है। क्रिस्टा फर्सनने अनजानकारीमें अपनेको बर्बाद कर दिया। चालीस सालकी अवस्थामें वह एकदम निर्धन हो गया और किरानीका काम करने लगा। पाँच साल बाद उसने दूसरा विवाह कर लिया।

पम्फर्ट—क्या इनकी पत्नीसे आपका परिचय है ?

"नहीं, लेकिन मैं परिचय पानेके लिए उत्सुक हूँ पर तुमने यह क्यों पूछा !"

"यह जितने सज्जन हैं उनकी पत्नी भी उतनी ही अच्छे स्वभावकी हैं। मैं इन लोगोंके साथ पाँच सालतक एक ही मकानमें रह चुका हूँ। मुझे इस बातपर विस्मय होता है कि ऐसी लक्ष्मीको वह इस तरह कैसे रखे हुए है। यदि वह मेरी पत्नी होती तो उसके आरामके लिए पाकेटमारी करनेमें भी मैं नहीं हिचकता।

"तब वह अपनी जीविका खुद चलाती हैं ?"

"अपनी ही नहीं, इनकी भी। वह एक दूकानमें नौकरी करती हैं। तीस शिलिङ्ग साप्ताहिक मिलता है। यही इनकी सारी आय है और यह इसमेंसे भी किताबें खरीदता रहता है।"

"क्या इस शादीके बाद उसने कोई काम नहीं किया ?"

"पहले तो कहीं काम करता था लेकिन जबसे बीमार पड़ा तबसे कामधाम छोड़कर बैठ गया। वह दिनभर किताबकी दूकानोंकी खाक छाना करता है। लेकिन वह विचारी एक शब्द भी नहीं बोलती।"

"पर वे लोग लण्डन क्यों छोड़ रहे हैं ?

"मैं वही कहने जा रहा था। इनकी पत्नीके कोई रिश्तेदार हैं। वे लोग हैं तो बड़े धनी लेकिन आजतक इस गरीबकी सुधि नहीं ली। उनमेंसे एक श्रीमती क्रीटिङ्ग हैं। नार्फोकमें इनकी एक कोठी है। उसमें कोई रहता नहीं। कभी-कभी वहाँ उनका लड़का शिकार खेलने जाया करता है। वह इनकी पत्नीकी रिश्तेमें चाची लगती हैं। बड़ी उदारतासे उन्होंने मुफ्तमें मकानमें रहनेकी इजाजत दे दी है। भोजनादिका प्रबन्ध इन लोगोंको खुद करना होगा। इसका मतलब यह हुआ कि जो कोई वहाँ जायगा उसके खाने पीनेका भी प्रबन्ध इन्हें ही करना पड़ेगा।

"लेकिन मिस्टर फर्सन तो वहाँ जाना नहीं चाहते होंगे।"

"यह तो स्वाभाविक है क्योंकि बिना पुस्तकोंके वह जी नहीं सकता पर अपनी पत्नीके ख्यालसे वह तैयार है। लेकिन उसके बचनेकी आशा कम ही है। मेरी चाचीका कहना है कि वह किसी भी दिन अपनी जीवनलीला समाप्त कर सकती है। कभी कभी उसकी हालत एकदम खराब हो जाती है। लेकिन वह अपनी व्यथा कभी प्रगट नहीं होने देती। बड़ी ही गम्भीर प्रकृतिकी है। हाँ, कभी कभी वह देहातमें रहनेकी इच्छा जरूर प्रकट कर देती है। इसीसे उसकी वेदना का पता चलता है। अभी उस दिन मैंने उन्हें देखा था। मैं तो उन्हें पहचान ही नहीं सका। उनकी आकृतिमें इतना बड़ा परिवर्तन देखकर मैं तो दंग रह गया। कुछ ही दिन पहले वे सत्रह अठारह सालसे ज्यादा नहीं प्रतीत होती थीं। वह हँसती थीं तो मोती झरता था।

तब तो पति पत्नीकी उम्रमें बहुत ज्यादा अन्तर होगा ?" कमसे कम बीस सालका। उनकी उम्र चालीसके लगभग होगी।

इतना कहकर मैं क्षणभर कुछ सोचने लगा। बोलाः—इसे अनमेल विवाह तो नहीं कह सकते ?"

अनमेल कौन कह सकता है ? पति-पत्नीमें एक बार भी अनबन नहीं हुई। एक बार यहाँसे हट जानेके बाद फिर इनको किसी बातकी चिन्ता नहीं रह जायगी। वह अपनी किताबोंको······।'

"तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि उसने ये सब किताबें अपनी पत्नीकी कमाईसे खरीदी हैं ?

"नहीं, कुछ तो उसने अपनी पुरानी किताबोंमेंसे बचा रखी थीं, कुछ अपनी कमाई से खरीदीं। एक बार इसने मुझसे कहा था कि किताबोंके पीछे उसे कभी कभी ६ आने पैसेमें ही दिन काटना पड़ा है। किताबोंके पीछे वह दीवाना रहता है। तोभी वह एक नम्बरका भलेमानस है। जिसके संसर्गमें आता है सभी उसे चाहने लगते हैं। मुझे तो उसका जाना बहुत ज्यादा अखरेगा।'

लेकिन मैं उसके चले जानेके लिए ही प्रार्थना करने लगा। उसका इतिहास सुनकर मेरा मन खराब हो गया। मेरे हृदयमें उसकी पत्नीके प्रति सहानु-

भूति जाग्रत हो उठी। यहाँसे देहात चले जानेपर उस बिचारीको कुछ भी तो आराम मिलेगा। मुझे क्रिस्टा फर्सनके जीवनसे डाह होने लगी। उसे आजतक अपने अभावों की जरा भी चिन्ता नहीं थी। बिना किसी झंझटके दिनरात पुस्तकोंसे उलझा रहता है। यदि उसे इनसे वंचित होना पड़े तो कोई हर्जकी बात नहीं। मैंने पम्फर्टसे कहा:—रविवारको मैं फिर आऊँगा। शायद उस दिन उनकी पत्नीके दर्शन हो जाँय।"

(३)

रविवारको तीसरे पहर मैं तैयार ही हो रहा था कि पम्फर्ट मेरे यहाँ आया। उसके चेहरेपर झुँझलाहट थी। वह जोरोंसे पैर पटक रहा था। उसे देखकर मुझे विस्मय हुआ। मेरा पता वह लेगया था पर मुझे लेशमात्र भी आशा नहीं थी कि वह मेरे यहाँ आवेगा। क्योंकि वह थोड़ा घमण्डी था और किसीके यहाँ आना-जाना वह अपनी शानके खिलाफ समझता था।

उसने मुँह बनाकर कहा:—सब खतम हो गया। वे लोग नहीं जा रहे हैं। क्यों? उन किताबोंके कारण? ऐसा भी कभी देखा सुना गया है!"

"परसों श्रीमती कीटिंग यहाँ आई थीं। आजके पहले उन्होंने कभी यहाँ तक आनेका कष्ट नहीं उठाया था। शायद इन लोगोंके जानेके सम्बन्धमें ही बातें करने आई थीं। श्रीमती कीटिंग बहुत थोड़ी ही देर तक यहाँ ठहरीं। जब वे नीचे उतर रही थीं तो बड़बड़ा रही थीं। मेरी चाचीने उनकी बातें सुन लीं। "असंभव! एकदम असंभव!! मैं इस बातकी कल्पना तक नहीं कर सकती। मैं किसी भी हालतमें इन पुरानी किताबोंके अम्बारको अपने घरमें नहीं भरने दे सकती। मकानकी वायु दूषित हो जायगी। इस तरहकी बातें न मैंने कभी देखी और न सुनी।" इतना कहते वे नीचे उतरीं और अपनी गाड़ीपर बैठ कर चली गईं। मेरी चाचीने सारी बातें सुन ली थीं। वह चट ऊपर पहुँचीं जहाँ पति पत्नी उदास बैठे थे। मेरी चाचीको देखते ही दोनोंके मुँहसे सूखी हँसी निकल पड़ी। उन्होंने सारी बातें मेरी चाचीसे कह दीं। श्रीमती क्रिस्टा फर्सनने अपनी चाचीको लिख दिया था कि उनके पतिके पास बहुत किताबें

हैं जिन्हें वे अपने साथ ले जाना चाहते हैं। उन्हीं किताबोंको देखने वे आई थीं और अपना अन्तिम फैसला देकर वे चलीं गईं। अब इन लोगोंको दोमेंसे एक चुन लेना था। या तो किताबें छोड़ दें या जाना स्थगित कर दें।

"क्रिस्टा फर्सन राजी नहीं होगा।"

"मैं समझता हूँ कि उनकी पत्नी ने देखा होगा कि इतना बड़ा त्याग मि० क्रिस्टा फर्सनके लिये बहुत घातक होगा। जो हो, उन लोगों ने किताबें रखना ही उचित समझा इसलिये जाना स्थगित कर दिया। आज तक इससे ज्यादा रञ्ज मुझे कभी भी नहीं हुआ था।"

मैं चुपचाप सोच रहा था। मुझे क्रिस्टा फर्सनकी मानसिक अवस्था समझने में देर न लगी। श्रीमती कीटिंग को बिना जाने ही मेरे मनने कबूल कर लिया कि उनकी कृपा एक तरहसे बोझ हो जाती। मैंने कहा—इस निर्णय से श्रीमती क्रिस्टा फर्सन को जरा भी वेदना नहीं हुई होगी क्योंकि उनका जीवन त्यागमय रहा है। उन्होंने असीम कष्ट उठाकर भी अपने पतिको सुखी रखने का यत्न किया है।"

मेरी इस बातपर पम्फर्ड बिगड़ गया और श्रीमती क्रिस्टा फर्सन तथा श्रीमती कीटिंगको भला-बुरा कहने लगा। उसने कहा—इससे बढ़कर नीचता और क्या हो सकती है।"

मैं उसकी बात से सहमत हो गया।

(४)

कई दिन बीत गये। क्रिस्टा फर्सन का हाल जानने के लिये मैं अधीर हो उठा। अपने डेरे से निकलकर मैं उनकी तरफ चला। मकान के सामने पहुँचकर ऊपर की तरफ ताका। वह उदास मन खिड़कीपर खड़ा था। उसके चेहरेसे चिन्ता टपक रही थी। मुझे उसने ऊपर बुलाया। पर मेरे प्रवेश करनेके पहले ही वह नीचे उतर आया। बोला—"चलिये, थोड़ा टहल आया जाय।"

उसके चेहरेसे परीशानी टपकती थी। कुछ दूर तक हमलोग चुपचाप चलते गये। मैंने पूछा—सुना है आपने लण्डन छोड़ने का विचार त्याग दिया?

आपने मि० पम्फर्डसे सारी बातें सुन ही ली होंगी। कोई चारा नहीं। सम्प्रति तो हमलोगोंको यहीं रहना है।

मैंने इतना चिन्तित कभी किसीको नहीं देखा था। वह नीची गर्दन किये मेरे साथ चल रहा था। वह हर तरह क्षुब्ध था मानों उसने कोई बहुत बड़ा अपराध किया है।

बोला—किताबोंको लेकर सारा बखेड़ा हो गया। आप जानते ही हैं कि मेरी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है। मेरी पत्नीके जिस सम्बन्धीने अपना मकान हमलोगोंको देनेकी कृपा की थी वह मेरी पुस्तकोंको घातक रोग समझती हैं। इसलिये हमलोगोंको मजबूरन यहीं रह जाना पड़ा।

मैंने जोर देकर पूछा—क्या आपकी पत्नी देहातमें रहनेके लिये राजी थीं?

मेरे मुँहसे ये शब्द तो निकल गये। पर मैं पछताने लगा क्योंकि इन बातोंसे उसे मार्मिक वेदना हुई होगी।

लेकिन उसने बड़ी दीनतासे कहा—मैं समझता हूँ कि वे भी चाहती थीं?"

"क्या आप अपनी पुस्तकोंका कोई प्रबन्ध नहीं कर सकते थे? कोई दूसरा मकान लेकर उन्हें रख देते?"

मेरे प्रश्नका उत्तर उसके चेहरेसे ही मिल गया। उसकी निर्धनताकी छाया मैंने वहां स्पष्ट देखी। उसने कहा:—हमलोगोंने उस पहलूपर विचार ही नहीं किया। जाना स्थगित करना ही हमलोगोंने तै कर लिया।

मैंने बात बढ़ाना उचित नहीं समझा! उससे छुट्टी ली और घर वापस आया।

एक सप्ताह बाद मुझे पम्फर्डका खत मिला। उसने लिखा था:— श्रीमती क्रिस्टाफर्सन सख्त बीमार हैं।

इस समाचारसे मुझे बड़ी चिन्ता हुई। तीसरे पहर मैं फिर उस तरफ गया। उस दिन खिड़कीपर कोई नहीं था। बड़े सोच विचारके बाद मैंने अन्दर जाकर पम्फर्डकी चाचीसे मिलनेका निश्चय किया। मेरे खटखटानेपर उन्होंने ही दरवाजा खोला।

उन्होंने मुझे कभी नहीं देखा था लेकिन जब मैंने अपने आनेका उद्देश्य बतलाया तो वे मुझे एक कमरेमें ले गयीं और बैठाकर बातें करने लगीं।

"श्रीमती क्रिस्टाफर्सन परसोंसे ही बीमार हैं। परसों उनपर मूर्छाका आक्रमण हुआ। बादको बुखार आ गया। रातभर वे बेचैन रहीं। डाक्टर बुलवाया गया। वह उन्हें उस कमरेमेंसे निकालकर दूसरे कमरेमें ले गया। तबसे वे वहीं पड़ी हैं। वे हिल डोलतक नहीं सकतीं। क्रिस्टाफर्सन रात दिन उनके सिरहाने बैठा रहता है। उसकी हालत भी अच्छी नहीं है। पागल सा हो रहा है।

"वे अचानक इस तरह बीमार क्यों पड़ गयीं ?"

"कारण तो स्पष्ट है। एक तो कठोर परिश्रमसे उनका शरीर यों ही जर्जर हो रहा था। उसपर इतना बड़ा सदमा ! उसे यह बर्दाश्त नहीं कर सकी।

"इस सम्बन्धमें पम्फर्टसे मुझसे बातें हुई थीं। उनका मत है कि मि० क्रिस्टाफर्सनने इस मामलेमें पूरी स्वार्थपरता दिखायी। यह बात उस समय उनकी समझमें नहीं आयी।"

"मेरा भी यही ख्याल है। अब वह अपनी भूल समझने लगा है। वह मुझसे कुछ कहता नहीं लेकिन—"

इसी समय क्रिस्टाफर्सन घबराया हुआ वहां आया और उस महिलासे बोला:—आप जरा ऊपर चलिये !

"क्या बात है" महिलाने पूछा !

क्रि०——उसकी हालत बिगड़ती जा रही है। देर न कीजिये।

व्याकुलताके साथ उसने मेरी तरफ देखा और मुझसे बिना कुछ कहे उन्हें लेकर ऊपर चला गया। मैं अपनी जगहपर चुपचाप बैठा रहा। थोड़ी देरके बाद वह पुनः मेरे पास आकर बैठ गयी। बोली——घबरानेकी कोई बात नहीं है। यदि उन्हें अकेला छोड़ दिया जाय तो नींद आ जायगी। वह उसके सिरहाने बैठकर हर दो मिनटपर उसका हाल पूछ पूछकर उसे परीशान करता रहता है। मैं उसे नीचे लेती आयी हूँ। यदि आप उसके साथ कुछ देर इधर उधरकी बातें करें तो उसे तसल्ली होगी।

मैं उठकर उनके कमरेमें चला गया। क्रिस्टाफर्सन सिरपर दोनों हाथ रखकर कुर्सीपर बैठा था। उसका चेहरा विषादपूर्ण था। मुझे देखकर वह उठा लेकिन लड़खड़ाकर फिर बैठ गया। उसने मेरा दोनों हाथ पकड़ लिया पर शर्मसे उसकी आँखें ऊपर नहीं उठती थीं। मैंने उसे साहस दिलानेके लिये कुछ कहना आरम्भ किया पर उसका उलटा ही असर हुआ।

बोला—आपका सब कहना सुनना बेकार है। वह मर रही है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि लोग क्या कहेंगे।"

"तुमने किसी अच्छे डाक्टरको दिखलाया है?"

"डाक्टरसे क्या होगा! मैंने बड़ी नादानी की।"

मैं उसके पास चुपचाप बैठा रहा। इसी समय दरवाजेपर खटखटकी आवाज हुई। वह उछलकर खड़ा हो गया और नीचेकी तरफ दौड़ा, मैंने समझा कि वह पागल हो गया है।

थोड़ी देरके बाद वह वापस आया। वह उसी प्रकार खिन्न था। बोला—डाकिया था। मैं एक पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

बातचीत करना असम्भव समझकर मैंने उसे सान्त्वना दिया, और चलना चाहा लेकिन उसने मुझे जाने नहीं दिया।

अपराधीकी भाँति उसने मुझसे कहना शुरू किया—मैं तुमसे कह देना चाहता हूँ कि मुझसे जो हो सका मैंने सब कर डाला है। ज्यों ही वह बीमार पड़ी मैंने बीमारीके कारणपर सोचना आरम्भ किया। मैं समझ गया कि निराशा ही इस बीमारीका कारण है। मैं तुरत श्रीमती कीटिंगके यहाँ यह कहने गया कि मैं अपनी सारी किताबें बेच डालूँगा। लेकिन वे घरपर नहीं थीं। मैं खत लिखकर छोड़ आया। मैंने अपनी बेवकूफीके लिये उनसे क्षमा माँगी और उनकी कृपाकी भीख चाही। पर उन्होंने अभीतक कोई उत्तर नहीं दिया।"

उसके साथमें एक सूचीपत्र था जो इसी डाकसे आया था। उसने उसे देखा भी नहीं। उठाकर फेंक दिया। कमरेमें इधर उधर टहलने लगा। बोला—मैं चूक गया! उसने जरूर कहा कि पुस्तकोंको नष्ट करनेकी अपेक्षा

मैं लन्दनमें ही रहना पसन्द करूँगी। लेकिन इसके प्रतिकूल उसने कभी कुछ कहा ही कहाँ! मैं कितना नीच और पतित था कि उसके इस त्यागको चुपचाप स्वीकार कर लिया। क्या मैं नहीं समझता था कि इसका उसपर क्या असर पड़ेगा? क्या मैं नहीं देखता था कि देहात जाने मात्रके ख्यालसे उसका चेहरा खिल उठता था? मैं उसकी बीमारीका कारण जानता था। अवश्य जानता था। लेकिन एक कायर स्वार्थीकी भाँति मैंने उसे यह यातना भोगने दिया। मैंने उसे मौतके मुँहमें ढकेल दिया।

"श्रीमती क्रीटिंगका उत्तर आता ही होगा। उत्तर तुम्हारे अनुकूल ही होगा।"

अब आकर ही क्या करेगा। मैंने उसे मार डाला। वह कभी उत्तर नहीं देगी। वह धनके मदमें चूर है और मैंने उसके अभिमानपर चोट की है।

वह क्षणभर चुप रहा। फिर पागलोंकी तरह बकने लगा—वह मर रही है। ये पुस्तकें ही उसकी मृत्युका कारण हैं, इन्हींके लिये मैंने उसकी जिन्दगी बेच डाली।

इतना कहकर उसने कई पुस्तकें हाथमें उठा लीं। मेरे देखते देखते उसने पुस्तकोंको खिड़कीके रास्ते सड़कपर फेंक दी। पुस्तकें सड़ककी पटरीपर धमसे गिर पड़ीं। मैंने उठकर उसे पकड़ लिया और समझाने लगा।

उसने चिल्लाकर कहा—उनकी ओरसे मुझे नफरत हो गयी है। अब मैं उन्हें देखना नहीं चाहता। इन्हींके कारण मेरी प्यारी पत्नीका अन्त हो रहा है।

इतना कहते कहते वह रो पड़ा। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा निकल पड़ी। मैं उसे सम्हाले रहा। उसने करुणाके साथ मेरी ओर देखा। फिर कहने लगा—यदि तुम जान पाते कि वह हमारे लिये क्या थी। जिस समय मेरा विवाह हुआ मेरी उम्र उससे २० साल अधिक थी। मेरा सब कुछ स्वाहा हो चुका था। सिवा कठिन परिश्रम और चिन्ताके उसको मुझसे कुछ नहीं मिला। वर्षोंसे मैं उसकी कमाईपर गुजर करता आ रहा हूँ। मैंने इन पुस्तकोंके पीछे उसे भूखी रखा। कितने शर्मकी बात है! शराब और जुएसे कम

बुरी यह लत मेरे लिये नहीं थी। मैं प्रतिदिन पछताता था और कसमें खाता था पर इससे उबर नहीं सका। उसने कभी एक शब्द भी इसके खिलाफ नहीं कहा। मैं चुपचाप बैठा रहा। उसके काममें कभी हाथ बटाने भी नहीं गया। वह चुपचाप सब कुछ बरदाश्त करती गयी। मैं सैकड़ों बार उस दूकानकी तरफसे गया और किताब खरीदकर वापस आया। मैंने एक बार भी उसकी दशापर ध्यान नहीं दिया।"

इसी समय किसीने दरवाजा खटखटाया। मैंने दरवाजा खोल दिया। मकान मालिकिन उन किताबोंको हाथमें लिये विस्मयसे मेरी ओर देखने लगीं।

मैंने कहा—इन्हें उधर ही रखिये। यहाँ मत लाइये। क्रिस्टाफर्सन मेरे पीछे खड़ा था उसके चेहरेसे मालूम हुआ कि वह मेरी बात समझ गया है पर उसे कुछ कहनेका साहस ही नहीं हुआ। मैं चुपचाप उसे वापस ले गया और शान्त करने लगा। मेरे जानेके पहले ही डाक्टर आया। उसने रोगीकी हालत अच्छी बतलायी। रोगीको नींद आ रही थी। उसने रोगीको चुपचाप सोनेके लिये छोड़ देनेकी सलाह दी।

मैंने भी क्रिस्टाफर्सन से विदा ली। उसने कहा:—मेरा अपना कोई नहीं है। खोज खबर लेते रहियेगा। इस विपत्तिमें आप ही एकमात्र बन्धु हैं।

दूसरे दिन आनेका वादा करके मैं वापस आया।

× × × × × × × ×

ठीक समयपर मैं क्रिस्टाफर्सनके यहाँ पहुँच गया। वह मेरी प्रतीक्षामें था क्योंकि दरवाजा खटखटानेके पहले ही वह उसे खोलकर मेरे सामने खड़ा हो गया। उसके चेहरेपर प्रसन्नता थी। उसने मेरा दोनों हाथ कसकर दबाया। कहा—"खत आ गया, मुझे मकान मिल जायगा।"

"आपकी पत्नीकी तबीयत अब कैसी है।"

"पहलेसे बहुत अच्छी है। रात उसे खूब नींद आयी। पहली डाकसे खत मिला। मैंने उसे शुभ संवाद सुना दिया, लेकिन असली बात छिपा रखी। उसकी अभीतक यही धारणा है कि किताबें साथ जायँगी। वह कितना प्रसन्न है।

लेकिन वहां पहुँचनेके पहले ही मैं इन्हें बेच डालूँगा। उसे कानोंकान इसकी खबर नहीं लगेगी। वहाँ पहुँचनेपर जब उसे मालूम भी होगा तो कोई हर्ज नहीं।

क्रिस्टाफर्सनने अपनी पत्नीके बचानेके लिये जो त्याग किया था उससे उसे प्रसन्नता थी। उसने मेरे आनेसे पहले ही एक दूकानदारको खत लिख दिया था जो सारी पुस्तकें खरीद लेगा।

"मैंने पूछाः—क्या तुम अपने लिये कुछ भी न रखोगे ?"

"एक दो आलमारी किताबोंकी रखनेमें कोई हर्ज नहीं था। उनके बिना मैं जी भी नहीं सकता पर मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं एक भी किताब नहीं रक्खूँगा। अब मैं इस जीवनमें उनकी ओर आँख उठाकर देखना भी नहीं चाहता।"

मैं—लेकिन तुम्हारी पत्नी ? कभी-कभी वे भी कुछ कहना चाहेंगी तब ?

इस प्रश्नपर वह विचार करने लगा। अन्तमें यह तै हुआ कि असबाबके साथ कुछ चुनी पुस्तकें भी भेज दी जायँगी। दो चार बकस किताबोंके लिये श्रीमती क्रोटिंगको कोई एतराज नहीं होगा।

उसीके अनुसार सारा काम किया गया। सारी किताबें इस तरह चुपचाप हटा दी गयीं कि श्रीमती क्रिस्टाफर्सनको उसकी गन्धतक नहीं मिली। क्रिस्टाफर्सन अपनी इस विजयपर फूला नहीं समाता था। लेकिन उनके चले जानेका विषाद उसे चेहरेपर साफ झलकता था। बात करते करते वह उनकी बातें सोचने लगता था लेकिन सबसे ज्यादा खुशी उसे इस बातसे थी कि उसकी पत्नी अब चंगी हो जायगी। इस घटनाने उसे और भी बूढ़ा बना दिया था!

लन्दनसे विदा होनेके पहले श्रीमती क्रिस्टाफर्सनसे मेरी भेंट हो गयी। वे दुबली पतली थीं। बीमारीने उन्हें और भी जर्जर और पीला बना दिया था। वे बहुत खूबसूरत नहीं थीं। लेकिन उनके चेहरेसे साहस और वफादारी साफ झलकती थी। उनके चेहरेपर हर्ष या विषाद कुछ नहीं था; पर उनकी आँखोंमें पतिभक्तिकी स्पष्ट छाया थी।

अल्टिमा थूले (प्रकृतिका पुजारी)

जाड़ेकी रात थी। कड़ाकेकी सर्दी पड़ रही थी। मैं अपनेको कम्बलसे लपेटकर पड़ा था कि मुझे अल्टिमा थूलेकी याद आ गयी। मैं कलम दावात लेकर उसीकी कहानी लिखने बैठ गया। अल्टिमा थूले मेरा अन्तरंग मित्र था।

केनिंगस्टन गार्डनमें वह एक छोटी लड़कीके साथ प्रतिदिन तीसरे पहर आया करता था। वे दोनों चुपचाप किसी झाड़ीके नीचे बैठ जाते या किसी पेड़के नीचे बैठकर आकाशकी तरफ देखते अथवा पानीकी तरफ झुककर बत्तकोंकी किलोल निहारते या पेटके बल लेटकर तितलियोंका फुदकना देखते या पीठके बल पड़े आकाशकी तरफ देखते। कभी-कभी दोनों खड़े होकर चिड़ियोंको चारा दिखाते। चिड़ियाँ उनके चारों ओर मँडरातीं और कभी-कभी आकर उनके हाथोंपर बैठकर चारा भी चुँग जातीं। वे सभीकी दृष्टि आकृष्ट करते। बालिका बड़ी ही सुन्दर थी। उसके काले केश नागिनोंके समान फैले हुए थे। उसकी काली आँखें हिरनके बच्चोंको मात करती थीं। उसके चिबुक पतले और नुकीले थे। लेकिन उसके बदन परका कपड़ा तङ्ग था। अगर वे लोग बैठे न रहते तो बालिका बूढ़ेको हमेशा आगेकी ओर खींचती। बूढ़ेके पैर भी सदा आगे बढ़नेके लिये आतुर रहते थे। वह धूमिल भूरा ओवरकोट पहने रहता था और उसके सिरपर धारीदार मुलायम भूरी हैट शोभा देती थी। उसके पैरमें काले रंगका पैन्ट था जो मुश्किलसे जूतोंतक पहुँचता था। उसकी पोशाकसे गरीबी साफ झलकती थी। लेकिन उसके चेहरेपर अजीब शान्ति विराजती थी जो आकृष्ट किये बिना नहीं रहती थी। उसके पिचके गालोंपर विचित्र लाली विराजती रहती थी। उसकी नीली आँखोंमें तेज था। मैं तो उसे

पागल ही समझता था। जब वह अहातेकी छड़ोंपर हाथका सहारा देकर गालोंको पिचकाकर और होठोंको बाहर निकालकर खड़ा रहता था तो यही मालूम होता था कि हवाके झोंकेके साथ ही वह चिड़ियोंकी तरह मधुर स्वरमें चहकने लगेगा।

पहले दिन मैं उसकी तरफ आकृष्ट हुआ लेकिन बहुत दिनोंतक शर्मने मेरा पैर इस तरह जकड़कर रखा कि मैं उसके पास जा न सका। एक दिन रास्तेमें मेरी उससे अकेलेमें भेंट हो गयी। उसका चेहरा उदास था लेकिन उसी तरह चमकता था। वह मेरे पास ही बेंचपर बैठ गया। उसके दोनों हाथ घुटने-पर थे और वह आप ही आप बड़बड़ाने लगा—"ईश्वर हमलोगोंके ही समान नहीं होगा।" मैंने देखा कि यदि इसे टोका न जायगा तो यह इसी तरह देर तक बकता रहेगा। इससे मैंने उससे पूछा—क्यों?

उसने बिना किसी तरहका विस्मय प्रकट किये ही कहा—मेरी मकान-मालकिनकी लड़कीका देहान्त हो गया। उसकी उम्र केवल सात साल-की थी।"

"क्या वही लड़की जो तुम्हारे साथ आया करती थी?"

"क्या आपने उसे देखा था? बड़े भाग्यकी बात है!"

"तुम्हारे साथ मैं उसे फूलों, पेड़ों और पत्तोंके साथ खेलते देखा करता था।"

उसका चेहरा खिल उठा। बोला—"मुझ बूढ़ेके लिये वह बहुत बड़ा सहारा थी।" इतना कहकर वह पानीकी ओर निहारने लगा। उसके बोलनेका ढङ्ग निराला था। क्षणभरके बाद वह फिर मेरी तरफ मुड़ा और कहने लगा—"मुझे वह बहुत ही प्यारी थी। मैंने इस वज्रपातकी कभी कल्पनातक नहीं की थी। कोई वस्तु संसारमें सदा कायम नहीं रहती। उसकी वाणी धीमी पड़ गयी। बोला—"जब मैं हारमनो थियेटरमें अभिनय करता था तो मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि कभी मेरा यहाँसे विछोह होगा। कैसे सुखके दिन थे वे! सङ्गीतका यही सौन्दर्य है। आदमी सङ्गीतके प्रवाहमें अपनेको खो बैठता है।" इतना कहकर वह चिड़ियोंकी तरह मधुर बोली बोलने लगा।

"फूलों और चिड़ियोंमें क्या ही सौन्दर्य और मधुर रस भरा रहता है। साधारणसे साधारण फूलमें भी स्वर्गीय सौन्दर्य देखनेको मिलता है। एक फूलकी तरफ इशारा करके उसने कहा—"क्या आपने ऐसा स्वर्गीय सौन्दर्य कहीं देखा है ? इतनेपर भी एक आदमीने मुझसे कहा कि उन्हें गायें भी नहीं पूछतीं। यह कैसे सम्भव है ? यद्यपि मेरा जन्म किंगस्टनमें हुआ था तो भी मुझे देहातका बहुत कम ज्ञान है।"

मैंने कहाः— लेकिन मेरी ओर तो गायें इसे बड़े चावसे खाती हैं। मेरी तरफके किसान तो बनगोभीको खूब पसन्द करते हैं।

"आपकी बातोंसे मुझे बहुत सन्तोष हुआ। उनलोगोंकी बातोंसे मुझे बड़ी वेदना हुई थी।"

जब मैं चलनेके लिये तैयार हुआ तो उसने उठकर कहा—"आपसे बातें करके मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।"

"मुझे भी बड़ा आनन्द आया। मैं यहाँ प्रायः तीसरे पहर आया करता हूँ। आपसे बराबर भेंट हो सकती है।"

"बड़े भाग्यकी बात है। मुझे फूल और मनुष्य दोनों प्यारे हैं, यद्यपि कभी कभी उन्हें समझना कठिन हो जाता है।"

इसके बाद मैं उससे बिदा हुआ और वह उसी मुद्रामें फिर वहीं बैठ गया।

(२)

दो सप्ताह बाद !

मैंने उसे आहातेके रेलिंगपर खड़े देखा। उसकी गोदमें एक भद्दी बिल्ली थी। मुझे देखते ही उसने कहा—"मैं लड़कोंको पसन्द नहीं करता। वे सब इस गरीबको सता रहे थे। इसके गलेमें रस्सी बांधकर तालाबकी तरफ खींचे लिये जा रहे थे। इसके शरीरमें कई जगह चोट लग गयी है। लड़के कमजोर और बूढ़ोंसे नफरत करते हैं।"

उसने उस बिल्लीको मेरी ओर बढ़ा दिया। वह मुर्दोंकी तरह उसकी गोदमें पड़ी थी। उससे बढ़कर निरीह जानवर मैंने कभी नहीं देखा था।

"बिल्ली संसारके सभी जीवोंमें विचित्र होती है। उसकी जिन्दगी बहुत बड़ी है।

जब वह यह कह रहा था, बिल्लीने अपना मुंह खोल दिया मानों वह उसके कथनका विरोध कर रही हो।

मैंने पूछा—तुम इसे क्या करोगे?

"यह मरणासन्न है। मैं इसे अपने साथ ले जाऊँगा?

"क्या मौत उसके लिये वरदान नहीं होगी?"

"यह अवस्था-विशेषपर निर्भर है। शायद थोड़ी सेवा इसे शान्तिप्रद हो। उसकी आँखोंसे मालूम होता है कि अभी उसमें जीवन है।

"क्या मैं भी तुम्हारे साथ कुछ दूर चल सकता हूँ?"

"आपकी कृपा होगी।" उसने प्रसन्न होकर कहा। हमलोग साथ साथ चले। उसका चेहरा उस माताके समान ममतापूर्ण था जो अपने बच्चेको दूध पिला रही हो, लोग हमलोगोंकी तरफ विस्मयसे देखते थे।

उसने कहा – कल आपको यह दूसरी ही नजर आयेगी। मुझे इसे छिपाकर ले जाना पड़ेगा। मेरे पास इस तरहके लावारिस दो तीन जानवर और भी हैं। मेरी मकानवाली इससे बहुत कुढ़ती है।"

"क्या मैं इसमें तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूँ?"

"ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं डेरेपर पहुँचकर घंटी बजा दूंगा। वह ज्यों ही नीचे उतरेगी मैं चुपचाप ऊपर चढ़ जाऊँगा। वह समझेगी कोई लड़का होगा। लड़के अकसर ऐसा करते हैं।

"क्या वह तुम्हारे कमरेमें नहीं जाती?"

उसने हँसकर कहा—मेरे पास एक ही कमरा है। मैं स्वयं झाड़ू बुहारू कर लेता हूँ। यदि मेरे पास साधन भी होता तो मैं उससे यह सब काम न लेता। यदि आप मेरे डेरेतक चलना ही चाहते हैं तो आप मि० थामसनका पता

पूछकर उसे बातोंमें उलझा लेंगे। थामसन मेरा ही नाम है। सङ्गीत समाजमें लोग मुझे मोरोनेली कहा करते हैं, यद्यपि मेरा जन्म इटालीमें नहीं हुआ है।"

"अच्छी बात है। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

"आपकी दया है, पर मेरे डेरेमें आपके बैठने योग्य कुछ नहीं है।" हमलोग बागसे निकलकर लैंकेस्टर फाटककी तरफ चले। थोड़ी दूर आगे बढ़नेपर हमलोग एक तङ्ग गलीमें घुसे। ऊँचे-ऊँचे मकान गलीको दोनों तरफसे घेरे हुए थे। वहाँ पहुँचकर उसने अपनी जेबसे एक पुराना अखबार निकाला और उसीमें बिल्लीको लपेट लिया। बोला—"मकान मालकिन विचित्र महिला है। वह स्काटलैण्डकी है।"

इतना कहकर वह एक मकानके पास खड़ा हो गया और घण्टी बजायी।

मकानका दरवाजा खुला। हमलोग भीतर घुसे। दरवाजेके भीतर एक दुबली पतली नाटी औरत खड़ी थी। उसका चेहरा भद्दा और लम्बा था। उसकी बोली कर्कश थी। उसने पूछा—अखबारमें क्या लपेटे हो?

"कुछ तो नहीं।"

"नहीं क्यों? मैं उस बिल्लीको ऊपर नहीं जाने दूँगी। बीमार बिल्लीको मैं मकानमें नहीं रहने दूँगी। यदि आप अपनी हरकतोंसे बाज नहीं आयेंगे तो मुझे मजबूर होकर नोटिस दे देनी पड़ेगी।" एक साँसमें ही वह इतनी बात कह गयी।

उसी समय मैंने आगे बढ़कर पूछा—क्या मिस्टर थामसन इसी मकानमें रहते हैं?

मौका पाकर थामसन सरककर ऊपर चढ़ गया।

"इन्हींका नाम थामसन है जो बीमार बिल्लीको लेकर अभी ऊपर गये हैं। क्या आप उनसे मिलना चाहते हैं? ऊपरके तल्लेपर वे रहते हैं। मैं उनसे तङ्ग आ गई हूँ। वे मुझे सदा परीशान करते रहते हैं।"

"आप सच कहती हैं। वह ऐसा ही आदमी है।"

उसने मेरी ओर देखा और बोली—उनका हृदय बड़ा ही विशाल है।

लेकिन समझकी मात्रा उनमें बहुत ही कम है। उन्होंने क्या नहीं बटोर रखा है। इस तरहके बूढ़े आदमीमें समझ होनी चाहिये। अपने तो भूखों मरता है और उन जानवरोंके लिये प्राण देता रहता है।"

उसने मेरी ओर सापेक्ष दृष्टि डाली। कहा—यदि आप उनसे मिलने जा रहे हैं तो जरा उन्हें समझाइये। मुझे तो वह अपने कमरेमें ही जाने नहीं देते। मैं स्वयं नहीं समझ पाती कि मैं उसे किस तरह रहने देती हूं।"

वह तिनतल्लेपर रहता था। सीढ़ियाँ साफ सुथरी थीं। मैं ऊपर चढ़ गया और अटकलसे एक दरवाजा खटखटाया। उसने बाहर आकर कहा—आह ! आप हैं। मैंने समझा था कि मालकिन हैं।

कमरा लम्बा चौड़ा था। एक कोनेमें खाट पड़ा था और दूसरे कोनेमें दराजोंका खाना। उसके ऊपर सुराही और बरतन रखे थे। दीवारमें एक पिंजड़ा टँगा था। कमरेसे साबुन और चिड़ियोंकी दुर्गन्ध आ रही थी। दीवारमें खूंटियाँ गड़ी थीं और ऊपर चिड़ियोंके बैठनेके लिये तख्ते रखे थे। खिड़कीमें जाल लगी थी। कोनेमें स्टोव रखा था और खूंटीपर ड्रेसिंग गाउन था यही थामसनकी सामग्री थी। इस बिल्लीके अलावा तीन और बिल्लियाँ और चार चिड़ियाँ उनके पास थीं। एकको छोड़कर बाकी सभी पगु थे। बिल्लियाँ मुझसे दूर हटकर दीवारसे सटकर बैठी थीं लेकिन वह जिधर ही जाता था वे उसे निहारती रहतीं थीं। एक कठफोड़वाको छोड़कर सभी चिड़ियाँ पिंजरेमें थीं। कठफोड़वा उसकी बांहपर आकर बैठ गया।

मैंने पूछा—तुम एक ही जगह चिड़ियों और बिल्लियोंको कैसे रख लेते हो ?

उसने कहा—इसमें खतरा अवश्य है पर आजतक कोई दुर्घटना नहीं हुई है। जबतक उनके पैर दुरुस्त नहीं हो जाते वे पिंजड़ेसे बाहर नहीं आ सकतीं। उसके बाद वे उन तख्तोंपर बैठती हैं। लेकिन अच्छा होते ही वे चली जाती हैं। खिड़कीपर वह जाल तभीतक रहता है जबतक उनके पैर ठीक नहीं हो जाते। कल यह जाल इनलोगोंके लिये हटा दिया जायगा।"

"तब ये सब उड़ जायँगे ?"

"हा, दोनों तोते और यह मैना ?"

"और यह कठफोड़वा ?"

"आप ही इससे पूछिये ! क्या जी, तुम भी जाना चाहते हो ।" लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया ।

"क्या ये बिल्लियाँ भी बिपत्तिकी मारी थीं ?"

"हा, संकटापन्न लोग ही मुझे याद करते हैं !" इतना कहकर वह नयी बिल्लीके लिये दूध गरम करने लगा । कठफोड़वा उसके सिरपर जा बैठा । मैंने विदा होनेकी आज्ञा माँगी । उसने कहा—"फिर भी कभी कृपा कीजियेगा ? क्या आपने कभी इस तरहका कठफोड़वा देखा है ? कैसा विशाल है इसका हृदय !"

उसकी बातोंपर सोचता हुआ मैं नीचे उतरा । रास्तेमें मकान मालकिनसे भेंट हुई । उसने पूछा---"उनसे भेंट हो गयी ! मैंने उसे क्यों रखा है ! लेकिन यह मेरी बेटीको बहुत प्यार करता था । उसकी मृत्युपर वह रो पड़ा था ।

इन जानवरोंको बटोरकर उसने मुझे तंग कर रखा है । फिर भी मैं उसे हटाती नहीं । वह जायगा ही कहाँ । उसका अपना कोई नहीं है । वह भी विचित्र आदमी है । स्वयं तो हवा पीकर रहता है लेकिन इन जानवरोंके चारोंकी चर्चा सदा किया करता है । जब मैं यह देखती हूँ, कि ये जानवर उसे ही खाये चले जा रहे हैं तो मेरा धैर्य जाता रहता है । इन हरामखोरोंके पीछे यह पागल रहता है । मेरी समझमें सदासे उसकी यही हालत रही है । इसीसे वह कहीं टिक नहीं सका । उसे जरा भी समझ नहीं है ।"

उसने मेरी ओर इस तरह देखा मानों वह जानना चाहती है कि मैं उसके यहाँ क्यों आया था ।

(३)

इधर उसने बागमें आना छोड़ दिया था । इसलिये मैं उससे मिलने

गया । गलीके कोनेपर मैंने एक भालू देखा । वह मदारीके इशारेपर नाच रहा था । मदारी लोगोंको रिझाकर पैसा वसूल कर रहा था ।

थामसन भीड़में खड़ा होकर तमाशा देख रहा था। उसने मदारीसे कहा—"तुम अपने भालूको पिछले दोनों पैरोंपर खड़ा करो तो मैं एक आना दूँगा ।"

मदारीने दाँत निकालकर भालूकी पीठपर बेंत मारा । भालू दोनों पिछले पैरोंपर खड़ा हो गया ।

थामसन—यदि तुम उसे अगले दोनों पैरोंपर खड़ा कर दो तो दो आना दूँगा ।

मदारी फिर दाँत चियारकर भालूकी पीठको अपने बेंतसे ठोकनेवाला ही था कि सामनेसे पुलिस आती दिखाई पड़ी । मदारी अपना भालू लेकर भागा । भीड़ छँट गयी ।

थामसनने मुझसे कहा—यदि यह भालू मुझे मिल जाता तो मैं उसे बड़े चावसे रखता और सिखलाता पर मैं उसे लेकर क्या करूँगा । वह घरमें तो उसे रखने नहीं देगी ।

हमलोग आगे बढ़े । वह कहने लगा—"भालू असाधारण जानवर होता है । उसकी आँखोंसे बुद्धिमत्ता टपकती है । उसकी सृष्टि भी अनोखी होती है । मेरी बिल्लियोंको आज भोजन नसीब नहीं होगा । वही तीन आना लेकर मैं उनके लिये भोजन खरीदने निकला था ।"

मैंने कहा—"आज मेरी ओरसे उनकी दावत है ।"

उसने मेरा निमन्त्रण स्वीकार कर लिया । हमलोग मछली खरीदने चले । हमलोग मछलीकी दूकानपर खड़े हो गये । दूकानदारके चेहरेपर एक मुस्कुराहट दौड़ गई । मैंने उसे लक्ष्य किया । लेकिन मेरे मित्रका ध्यान उस तरफ नहीं था । वह मछलियोंको गौरसे देख रहा था । बोला—"मछलियोंकी सृष्टिकी अनोखी रचना है । जरा उनकी चाईंटाको देखिये । क्या आपने कभी ऐसी रचना देखी है ?"

हमलोगोंने पाँच मछलियाँ खरीदीं। अपने झोलेमें रखकर वह चला। वह मन ही मन कल्पना कर रहा था कि सभी बिल्लियोंको एक-एक मछली मिलेगी।

इसके बाद तो उससे अकसर भेंट होती जब वह अपनी बिल्लियोंके लिये भोजन खरीदने निकलता। उनकी संख्या दिनदिन बढ़ती जा रही थी। वह सदा विश्वके रचना-वैचित्र्यपर बातें करता और हारमनी चेटरकी चर्चा करता। वह दस सालसे बेकारीका जीवन बिता रहा था। जब मैं उसकी जीविकाकी बातें छेड़ता तो वह ठंढी साँस लेकर कह देता :—उसकी चर्चा मत कीजिये।"

जब मैं उसके यहाँ जाता तो मकान मालकिन मुझसे दो बातें अवश्य करती।

वह कहती :—मैं घरसे कभी बाहर नहीं निकलती। घर अकेला किसपर छोड़ूँ।"

"पर घर तो कहीं भाग नहीं जायगा।"

इसपर वह मेरी ओर इस तरह देखती मानों इसपर भी उसे विश्वास नहीं है।

उसके जीवनमें भी कोई कुछ नहीं था। दिन रात कड़ा परिश्रम करके वह अपना निर्वाह करती थी। फिर भी उसने थामसनको अपने घरमें टिका रखा था जो दिन रात जानवरोंको बटोरने और सृष्टिकी विचित्रताकी खोजमें लगा रहता था। शायद उस स्वर्गीय बालिकाने इन दोनोंको एक सूत्रमें बाँध दिया था।

एक दिन मैंने मकानवालीको बहुत परीशान पाया। तीन दिनसे थामसन सख्त बीमार था। उसने मुझसे कहा—तीन दिनसे उसने आँख भी नहीं खोली है। उसने जान बूझकर अपना सर्वनाश किया है। इन बेहूदी बिल्लियोंके पीछे उसने अपना स्वास्थ्य बिगाड़ा है। मैंने आज सबको खदेड़ बाहर किया। अब ये उस घरमें कभी भी घुसने नहीं पायेंगी।

"यह तो आपने अच्छा नहीं किया। उसकी हालत और भी खराब हो जायगी।"

उसने अपनी गर्दन टेढ़ी करके कहा :—आप भी क्या कहते हैं। मैंने यहीं क्या कम किया कि इन गन्दे जानवरोंको अपने घरमें इतने दिनतक रहने दिया। इस वक्त भी यह बेहोश पड़ा उन्हींकी बातें बड़बड़ा रहा है। उसने मुझे किसी थियेटरके मि० जैक्शनको लिखनेके लिए कहा। मैंने उन्हें खत लिख दिया है। ओह! यह शैतान कठफोड़वा यहीं रह गया है। यह पकड़ा ही नहीं जाता। इसी तरह उसकी तकियापर बैठा रहता है। जब मैं पास जाती हूँ तो उठकर दूर जा बैठता है।

"डाक्टर लोग क्या बीमारी बतलाते हैं?"

"डबल नेमोनिया। पैरमें सर्दी लगनेसे। इसे कोई देखनेवाला भी नहीं है। मुझे ही सुश्रूषा करनी पड़ती है।

अपने कमरेमें वह अचेत पड़ा था। खिड़कीसे सूर्यकी किरणें कमरेमें झाँक रही थीं। कठफोड़वा उसकी तकियापर बैठा था। उस भयानक ज्वरमें भी उसके चेहरेपर उद्विग्नता नहीं थी। उसकी आधी चेतना लुप्त हो गयी थी।

थामसन बड़बड़ाने लगा :—मि० जैक्शन! वे आते ही होंगे। वह मेरा यह सब भार सम्हाल लेंगे। मैं मरने लगूँगा तो उन्हींके ऊपर इनका भार छोड़ जाऊँगा। मेरी मकान मालकिन भी विचित्र महिला हैं। मैं भोजन नहीं चाहता। मैं पेटू नहीं हूँ। मुझे साँस लेते रहने दें। इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं चाहता।"

उसका बड़बड़ाना सुनकर कठफोड़वा उसके पाससे हटकर इधर उधर इस प्रकार उड़ने लगा मानों किसी भावी विपत्तिकी शङ्कासे वह भयभीत हो गया है।

क्षणभर बाद उसने मुझे पहचाना। कहा—मैं बहुत ही कमजोर हो गया हूँ। बचनेकी आशा बहुत कम है। सन्तोष है कि मेरे पीछे रोनेवाला कोई नहीं है। यदि वे आ जाते तो अच्छा होता। इतना कहकर उत्तेजनामें वह उठकर बैठ गया। मुझसे बोला—मिहरबानी करके खिड़कीसे जाल हटा दीजिये। मैं अपनी बिल्लियाँ चाहता हूँ। इसने उन्हें भगा दिया। मैं इन्हें उसके हवाले करना चाहता हूँ। मेरे मरनेके बाद मेरे रुपयोंसे वह उनका पालन करता रहेगा।

उसके इस प्रलाप और उत्तेजनासे मैं भयभीत हो गया। मैंने खिड़कीसे जाल हटा दिया। वह सुस्त होकर धड़ामसे बिस्तरेपर गिर गया। खिड़कीका रास्ता खुलते ही एक-एक करके पाँच बिल्लियाँ जमा हो गयीं और दीवारसे सटकर बैठ गयीं। उसने ज्यों ही बकना बन्द किया कठफोड़वा भी आकर उसके सिरहाने बैठ गया। उसकी आँखोंमें असाधारण तेज था। सूर्यकी किरणें उसके बिस्तरपर खेल रही थीं। चञ्चल किरणोंको देखकर उसने कहा—"आपने कहीं इससे भी असाधारण वस्तु देखी है।" इसके बाद उसकी आँखें बन्द हो गयीं। मैं चुप-चाप खिड़कीके पास बैठा रहा और मन ही मन खिन्न होकर यही सोचता था कि उसने इन बिल्लियोंका भार मुझपर क्यों नहीं सौंपा।

थोड़ी देर बाद उस गलीमें मोटरकी आवाज सुनाई पड़ी। मकान माल-किन दौड़ी मेरे पास आयी। बोली—वह आ गये।"

मैंने बाहर जाकर देखा कि एक भद्र पुरुष सामने खड़े हैं। उनके वेष-भूषा और पोशाकसे मालूम होता था कि वे सम्पन्न हैं। मैंने पूछा—क्या आप ही का नाम मि० जैकसन है?

"जी हाँ, मेरे साथीकी कैसी हालत है?"

मैंने उन्हें बगलके कमरेमें ले गया और कहने लगा—उनकी हालत अच्छी नहीं है। लेकिन उन्होंने खास मतलबसे आपको बुलाया है।

"जरा सुनूँ भी तो।"

"उन्होंने दो-चार पशु-पक्षियोंको आश्रय दे रखा है और वे चाहते हैं कि उनके मरनेके बाद आप उनकी देख-रेख करें।"

अपने पैण्टको अपनी छड़ीसे ठोंकते हुए मि० जैकसनने पूछा—क्या सचमुच उसकी हालत इतनी नाजुक है।

"उनके बचनेकी बहुत कम आशा है। शरीरमें केवल हाड़ और चमड़ा रह गया है। सारा शरीर सूखकर काँटा हो गया है।

जैकसन—आपने अभी कहा है—एक चिड़िया और निराश्रित बिल्लियाँ—इनका कोई हिसाब नहीं है। बचपनसे ही उसमें यह पागलपन था और अन्त-

तक वह कायम रहा। मैं समझ नहीं सका था कि उसने मुझे क्यों बुलाया है? हमलोग उसे आजतक एक गिन्नी तिमाही देते रहे हैं। हर तरहसे वह उसका मुस्तहक था। तीस सालतक उसने इस थियेटरमें काम किया। एक दिन भी गैरहाजिर नहीं हुआ। फ़्लूट बजानेमें उसका कोई सानी नहीं था। उसे यह काम छोड़ना नहीं चाहिये था। यदि कोई सबसे उत्तमकी तलाश न करे तो वह कम अच्छा नहीं था। शुरूमें मेरी ही क्या हालत थी। यदि मैं उसका ही अनुकरण करता तो मेरी भी हालत उसीकी तरह रहती। लेकिन मैंने सब काम काज सम्हाला। समयके अनुसार काम किया। आदमियोंको हटाते बढ़ाते रहे। लेकिन इसका हृदय विशाल था। मैं वह दिन अपने जीवनमें कभी भी नहीं भूल सकता। मुझे एक आदमीको हटाना था। मैं बारी बारीसे सबका नाम ले गया। वह सबका विरोध करता रहा। किसीकी गृहस्थी बड़ी है, परिवारका पालन पोषण करना है, कोई इतना नादान है कि सड़कपर खड़ा होकर भीख भी नहीं माँग सकता। इसपर मैंने कहा :—आपकी सब बातें ठीक हैं लेकिन किफायतसारीके ख्यालसे एक आदमीको मुझे हटाना ही है। वह चुप रहा। और आप जानते हैं कि उसने क्या किया? दूसरे ही दिन उसने अपना त्याग-पत्र भेज दिया। उस समय उसकी उम्र ६० सालसे ऊपर थी। यह उम्र नयी नौकरी खोजनेकी नहीं है। मैंने उसे लाख समझाया लेकिन वह अपनी बातपर दृढ़ रहा। तबसे आजतक वह बेकार रहा। अचानक मुझे मालूम हुआ कि वह फाका कर रहा है। तभीसे मैं यह रकम देने लगा और आजतक देता आ रहा हूँ। सदासे उसकी यही हालत रही है। अपने शरीरकी उसने कभी भी परवा नहीं की। मैं उसके पशु पक्षियोंको अपने पास रख लूँगा। इसकी वह चिन्ता न करे। यदि यहाँसे अच्छे नहीं हैं तो बुरे भी नहीं रहेंगे।" उसने उस खाली कमरेमें दृष्टि दौड़ाते हुए कहा—वह हारमनी थियेटरमें हमलोगोंकी सेवामें तीस सालतक रहा। हमलोगोंने उसकी बदौलत बहुत कुछ कमाया।"

मैंने कहा—यह जानकर उसे बहुत शान्ति मिलेगी।

जैक्सन—आप इसकी जरा भी चिन्ता न करें। किसी दिन आकर आप

अपनी आँखों देख लेंगे कि मैं उन्हें कितने यत्नसे रखता हूँ। यह लीजिये मेरा पता—अल्टिमा थूले, निम्ब्लेडन" लेकिन यदि सचमुच उसका अन्त निकट है तो एक बार मुझे उससे भेंट कर लेनी चाहिए। हमलोगोंका वह पुराना साथी है !"

हमलोग दबे पाँव उसके कमरेमें पहुँचे। मकान मालकिन उसके सिर-हाने बैठी क्रुद्ध दृष्टिसे बिल्लियोंकी तरफ देख रही थी। हमलोगोंके प्रवेश करते ही वह उठ खड़ी हुई और कमरेसे बाहर हो गयीं। उन्होंने मेरी ओर घूमकर कहा—अब आप समझ गये होंगे कि मेरे सिरपर कितना काम रहता है और क्यों मैं घरसे बाहर नहीं निकलती।"

हमारे दोस्तकी बेहोशी तबतक दूर नहीं हुई थी। लेकिन उनकी आंखें बन्द नहीं थीं मानो वे निर्निमेष दृष्टिसे उन चीजोंको देख रही थीं जिन्हें हमलोग नहीं देख पाते थे। उनकी आंखोंमें असाधारण तेज था। उनके पैताने तीन मिनटतक खड़ा रहनेके बाद मि० जैक्सनने मेरे कानमें कहा—वह तो विचित्र तरहसे ताक रहा है। आप मेरी तरफसे उससे कह देंगे कि उन आश्रित पशु पक्षियोंकी वह चिन्ता न करें। मैं उनकी देख रेख कर लूँगा। मुझे खांसी आ रही है। कहीं यहाँ खाँसनेसे वह जग न पड़े। इसलिये मुझे छुट्टी दीजिये।"

इतना कहकर वे दबे पाँव कमरेसे बाहर हो गये।

मैं होश आनेकी प्रतीक्षामें बैठा रहा। पांचों बिल्लियाँ एक टकसे उसकी ओर देख रही थीं। मैं नहीं समझ सका कि वे उसे देख रही थीं या उस कठफोड़वे-को जो उसके तकियेपर बैठा था। थोड़ी देरमें मकान मालकिन आ गयी। मैं मि० जैकसनका संवाद उनसे कहकर वापस चला आया।

दूसरे दिन तड़के ही मैं उसके यहाँ फिर पहुँचा। तबतक उसकी आत्मा कूंच कर गयी थी। मकान मालकिनका चेहरा उतरा हुआ था। उसने कहा—"उसे फिर होश नहीं हुआ। आज सबेरे ही उसकी आत्मा कूंच कर गयी।"

इतना कहकर वह मुझे उसके कमरेमें ले गयीं। कमरेमें उसकी लाश पड़ी

थी। मकानवालीने सफेद चद्दरसे उसे ढँक दिया था। उसने खिड़कीका परदा हटा दिया। उसके चेहरेपर अटल शान्ति विराज रही थी। मुखाकृतिमें जरा भी मलिनता नहीं आयी थी जैसा मरनेपर हुआ करता है। माळूम होता था कि कोई ईश्वरका दूत शान्तिकी गोदमें सो रहा है। उसके बगलमें ही वह कठफो-ड़वा चुपचाप बैठा उसके चेहरेकी ओर देख रहा था।

उसने परदा गिरा दिया और बाहर चली गयी। उसने बिल्लियोंको उस कमरेमें बन्द कर दिया था जिसमें मैं मि० जैक्सनके साथ बैठा था। उसने कहा—ज्यों ही उसका आदमी आवेगा मैं इन्हें उसके हवाले कर दूँगी। पर उस कठफोड़वेका क्या होगा। वह मुझसे पकड़ा ही नहीं जाता। यह निरन्तर उसीके पास बैठा रहता है। कुछ अजीबसा माळूम देता है।

मुझे भी वह दृश्य विचित्र माळूम हुआ।

मकानवाली—"अन्तिम संस्कारके लिये एक फूटी कौड़ी भी नहीं छोड़ गया। उसने क्षणभरके लिये भी अपनी चिन्ता नहीं की। मैंने थोड़ा थोड़ा बचाकर रखा है।" इतना कहकर वह रोने लगी।

जैक्सनको उसकी मृत्युका समाचार तारद्वारा दे दिया गया था। अन्तिम संस्कारके बाद मैं "अल्टिमा थूले" यह देखनेके लिये गया कि उसने अपना वादा पूरा किया है या नहीं।

उसने पूरा किया था। मकानके बाहर उसने एक कोठरी साफ करवाकर दीवारसे सटकर पाँच गद्दे रखवा दिये थे। एक बर्तनमें दूध भी रखा था। इससे ज्यादा आराम उन जानवरोंको नहीं दिया जा सकता था।

उसने मुझसे पूछा :—आपका क्या खयाल है? अपनी समझसे मैंने पूरा प्रबन्ध कर दिया है।"

मैंने लक्ष्य किया कि इतनेपर भी उसका चेहरा उदास है। उसने कहा :—बिल्लियोंको लेकर मुझे बड़ी चिन्ता है। पहले दिन तो वे ठीक तरहसे रहीं। दूसरे दिन तीन गायब हो गयीं और आज सवेरे ही मालकिनने कहा कि सभी लापता हैं। मैंने उन्हें भोजनका कष्ट नहीं दिया। मैं उन्हें हर तरहका

भोजन पेटभर देता रहा। मैंने मछलीका भी प्रबन्ध कर दिया था। तो भी वे नहीं टिक सकीं। मुझे बड़ी निराशा हुई।

इसी समय एक बिल्ली दरवाजेपर दिखाई पड़ी। मैं उसे अच्छी तरह पहचानता था क्योंकि उसका एक ही कान साबित था। गुर्राते हुए उसने हमलोगोंकी तरफ देखा। जैक्सनने बड़े दुलारसे उसे पुकारा लेकिन उसकी आवाज सुनते ही वह दबककर झाड़ियोंमें भाग गयी।

मि० जैक्सनने ठंढी साँस लेकर कहा :—पशुओंमें भी ज्ञानकी झलक मिलती है।

इसके बाद वह मुझे बागमें ले गया। बागके बीचमें एक बड़ासा पिंजड़ा लटक रहा था। उसमें विविध प्रकारके फल रखे हुए थे।

मैंने पूछा—क्या यह उस कठफोड़वेके लिये है ?"

उसने कहा—हाँ, आपको मालूम नहीं होगा, पहले तो वह पकड़ा नहीं जाता था। दूसरे दिन सुबह जब मेरे आदमी गये तो वह उसके मृत शरीरपर मरा पड़ा था। इससे बढ़कर मर्मस्पर्शी दृश्य दूसरा क्या हो सकता है। मैंने उसके आरामका सारा प्रबन्ध किया था। अल्टिमा थूलेमें वह बड़े आनन्दसे रहता।

इतना कहकर उन्होंने एक सुन्दर सिगार निकाला और मेरी तरफ बढ़ाया। सिगार हाथमें लेकर मैंने उनसे पूछा—आपने अपने मकानका नाम आल्टिमा थूले क्यों रखा है ?"

यह प्रश्न मेरे दिलमें बहुत दिनोंसे उठ रहा था।

उसने कहा—क्या उसका उत्तर इस मकानको देखते ही आपको नहीं मिल गया! क्या इस मकानमें आपको कोई विशेषता नहीं दृष्टिगोचर हुई ?"

"बहुत सुन्दर मकान है। आरामके सभी उच्चकोटिके साधन यहाँ मौजूद हैं।"

"आपके मुँहसे इसकी प्रशंसा सुनकर मुझे बहुत ज्यादा सन्तोष हुआ। मैंने

इसे सजानेमें कोई कसर नहीं उठा रखा है। अपने दिनको सभी आरामसे काटना चाहते हैं। आपके ही कथनानुसार मैं अपने प्रयासमें सफल हुआ हूँ।"

इसके बाद मैं अपने डेरेपर वापस आया। मेरे कानमें उसके शब्द गूँज रहे थे और मेरी आँखोंके सामने वही दृश्य नाच रहा था कि थामसन मरा पड़ा है और उसके शरीरपर वह जानवर कठफोड़वा भी मरा पड़ा है। वह एक विशाल आत्मा था जिसे इस जीवनमें कभी सफलता नहीं मिली थी।

अभागेका भाग

सबेरा हो गया था। लेकिन कुहरेके कारण चारो ओर अन्धकारका साम्राज्य था। मि० कर्टेण्टी बिस्तरेपर लेटे लेटे अपने भाग्यको कोस रहे थे। मि० कर्टेण्टी भद्र पुरुष थे। कुलीन घरमें उनका जन्म हुआ था। लांगशाके जास कर्टेण्टीके सगोत्री थे। जास कर्टेण्टीसे कहीं भद्र और सज्जन थे वे। उन्होंने कभी भी कोई ऐसा आचरण नहीं किया था जिसके कारण किसीके सामने उन्हें सिर झुकाना पड़े। उनकी अन्तरात्मा पवित्र थी। ६० सालमें एक बार भी उन्हें किसीके सामने सिर नवाना नहीं पड़ा था, उनकी मर्यादाको ठेस नहीं लगी थी। वे सदा तनकर खड़े रहते थे। वे बड़े ही आत्माभिमानी और स्वतन्त्र प्रकृतिके थे। एक बार उनके मालिकने उनके नामके साथ 'मिस्टर' शब्दका प्रयोग नहीं किया तो उन्होंने नौकरी छोड़ दी। दूसरी नौकरी उन्हें तुरन्त मिल गयी लेकिन उनका स्वामी मर गया इससे नौकरी छूट गयी। प्रायः सालभरसे वे बेकार बैठे थे। आमदनीकी कोई दूसरी सूरत नहीं थी। साठ सालके बूढ़ेको नौकर रखनेके लिए कोई तैयार नहीं था। साथ ही उन्होंने किसी काममें विशेष दक्षता नहीं प्राप्त की थी। उन्हें सदा दरबानी, वगैरहके काम मिले थे, जहाँ कोई काम नहीं करना पड़ता था। इसलिए जिन्हें काम करना पड़ता था उनसे वे अपनेको ऊँचा समझते थे।

एक बार उन्होंने अपने इस भावको अपने दामादपर भी प्रकट किया। उसे यह बहुत बुरा मालूम हुआ। उनका दामाद जिम क्रापर लांगशाकी किसी

खानमें काम करता था। मि० कर्टेण्टीके विचारसे उनकी पुत्री हेरियटने अपनेसे हीन व्यक्तिसे विवाह कर लिया था। मि० कर्टेण्टीको गलत भ्रम था कि उनके ये विचार उनकी पुत्री और दामाद नहीं जानते। उन्हें इस बातसे चिढ़ थी कि बेटी और दामाद बराबर उनकी आर्थिक सहायता किया करते थे। वे लोग इतने बेवकूफ नहीं थे कि सीधे उनके हाथपर रुपये लाकर रख देते क्योंकि वे जानते थे कि ऐसा करनेसे ससुर दामादका सम्बन्ध सदाके लिये छूट जायगा। इसलिये जब उन्हें मालूम होता था कि मि० कर्टेण्टीके पास पैसे नहीं हैं तो वे चुपचाप कुछ रुपये उनकी जेबमें रख देते थे। मि० कर्टेण्टी चुप-चाप उनका सदुपयोग करते। उन्होंने कभी यह जाननेकी कोशिश नहीं की कि ये रुपये कहाँसे आये।

इस तरह असन्तोष और अशान्तिके बीच यह सालभरका लम्बा अरसा बीत गया।

इसी समय एक दुर्घटना उपस्थित हुई। मि० कर्टेण्टीकी पत्नीने एक दिन उनसे कहा कि हेरियट कहती थी कि जिन कहता है कि यदि सास ससुर चाहें तो उसके साथ रह सकते हैं। उन लोगोंने धीरे-धीरे मदद देना भी बन्द कर दिया। अब मि० कर्टेण्टीके सामने दो ही रास्ता रह गया या तो भूखों मरें या बेटी के यहाँ रहनेकी तौहीन सहें। मि० कर्टेण्टी आत्माभिमानी थे। इसलिये यह अधम जीवन उन्हें कभी स्वीकार नहीं था। वे इस बातकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि वे अपने दामादके घर जाकर उसका टुकड़ा तोड़ें। उन्होंने अपनी पत्नीसे साफ साफ कह दिया। इसपर उनकी पत्नीने कहा कि वे भले ही न जायँ पर उनकी पत्नी तो अवश्य ही चली जायँगी। उन्होंने समझा कि इस निर्णयसे उनकी पत्नी उन्हें दामादके घर चलनेके लिये बाध्य करना चाहती हैं। पर मि० कर्टेण्टी ऐसे जीव नहीं थे कि कोई दबाकर उनसे काम करवा लेता।

बुधको उन्हें मालूम हुआ कि शनीचरको ही उनकी पत्नी अपने दामादके घर चली जायंगी। शुक्र आ गया। दुर्घटनाने स्थूलरूप धारण करना शुरू किया। जीवनभर मि० कर्टेण्टी भविष्यके लिये ही चिन्तित रहा करते थे।

इसके लिये उनके सगे संबन्धी सदा उनपर हँसा करते थे लेकिन क्या इस घटनाने उनकी चिन्ताको सार्थक नहीं सिद्ध कर दिया ? क्या कभी उन्होंने गलत सोचा था ? उनकी कंजूसीकी लोग नकल मचाया करते थे। वे कंजूस नहीं थे। वे सदा किफायतसारीसे काम लेना चाहते थे। क्या उनकी किफायत-सारीमें सार्थक नहीं थी ? धनके नामपर डाकघरके सेविंग खातामें उनके कुछ रुपये जमा थे। सेविंग बंकमें खाता खोलनेपर किसीने उन्हें ताना तो नहीं दिया था लेकिन वक्त बवक्त लोग उसकी चर्चा अवश्य ही किया करते थे।

इसी समय क्रेहंगर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्सका भोंपू बज उठा। यही मि० कर्टेण्टी की सबेरेकी घड़ी थी क्योंकि उनके पास अपनी कोई घड़ी नहीं थी। इसके साथ ही चारों ओरसे दूसरे कारखानोंके भोंपू बज उठे। यह सातका बिगुल था। मि० कर्टेण्टीने बिस्तर छोड़ा और इतमीनानसे कपड़ा पहनने लगे। वे सारा काम इतमीनानसे करते थे। जब कभी वे कामकी तलाशमें निकलते तो इतमीनानके साथ। (यद्यपि उनकी धारणा थी कि कामको उन्हें खोजना चाहिये) वे स्वभावसे ही जल्दबाज नहीं थे। उनका कहना था कि जल्दीबाजी मर्यादाका शत्रु है। मर्यादाके लिये इतमीनानका समय चाहिये। पहले तो उन्होंने अन्धेरेमें ही कपड़ा पहना। उसके बाद उन्होंने रोशनी जलायी और उसके धुँधले प्रकाशमें अपने पुराने ब्रशसे जूता झाड़कर उसकी रही सही गर्द साफ की।

एक छोटे कमरेमें उनकी सारी गृहस्थी थी। कभी उन्होंने भी समूचा मकान किरायेपर लिया था और इस कमरेसे उस कमरेमें जाने तथा टेबुल कुर्सियोंपर तनकर बैठनेका सौभाग्य प्राप्त किया था और उनकी पत्नीको अलग रसोई घरमें भोजन पकानेका अवसर मिला था।

वे अपनी युवती, कम अक्ल और चिड़चिड़ी पत्नीसे सदा दुखी रहते थे। वास्तवमें उन्हें युवती नहीं कहा जा सकता था क्योंकि वे नानीकी पदवी प्राप्त कर चुकी थीं लेकिन विवाहके वक्त उनकी उम्र उन्नीस और मि० कर्टेण्टीकी तीस सालकी थी इसलिये उनकी दृष्टिमें वे जवान ही थीं। वे पचासवें सालको छू रही थीं, लेकिन मुसीबतकी जिन्दगी बितानेके कारण अपनी उम्रसे कहीं ज्यादा बूढ़ी हो गयीं

थीं तोभी मि० कर्टेण्टी उन्हें बेवकूफ, नादान बच्ची ही समझते थे। इससे वे सदा दुखी रहते थे। शनीचरको तो उन्होंने अपने दामादके यहाँ चली जानेका निश्चय ही कर लिया था चाहे मि० कर्टेण्टी जायँ या न जायँ। यदि वे अपना मत नहीं बदलते तो उन्होंने मि० कर्टेण्टीको अपने भाग्यपर छोड़ देनेका संकल्प कर लिया था।

दूसरे दिनतकके भोजनका सामान तो उनके पास था। उसके बाद क्या होगा? उनकी पत्नी, बेटी और दामाद सभी सोचते होंगे कि उसके बाद यह जिद्दी बूढ़ा क्या करेगा। सिर्फ मि० कर्टेण्टी समझते थे कि क्या होगा।

जूता साफ करनेके बाद उन्होंने सिरपर कंघी फेरी और रोशनी बुझा दी। अन्धेरा दूर हो गया था। पृथिवी अपनी धुरीपर उसी तरह अनवरत गतिसे चलती जा रही थी लेकिन मि० कर्टेण्टीको इसकी कोई चिन्ता नहीं थी। उन्होंने इतमीनानसे कपड़ा पहना, गलेमें ऊनी मफलर लपेटा, टोप पहना और घरसे बाहर निकल पड़े।

फिर भी उनके लिये सवेरा ही था क्योंकि समयकी उन्हें कभी कमी नहीं रहती थी। वे तेजीसे लेकिन इतमीनानके साथ डक स्कायरकी तरफ चले। रातमें काम करनेवाले कुलियोंसे लदी एक ट्रामगाड़ी वेस्लियन चैपलसे डक स्कायर होकर हैनब्रिजकी तरफ जा रही थी। मि० कर्टेण्टी पटरीपर चले जाते थे और अपना हाथ मलते जाते थे क्योंकि जनवरीके महीनेमें यहाँ घनघोर सर्दी पड़ती है। इतना करते रहनेपर भी वे किसीको लक्ष्य नहीं होने देना चाहते थे कि उन्हें सर्दी सता रही है। अन्तमें उनकी निगाह डाकियेपर पड़ी। वे डाकियाके सामने आकर खड़े हो गये। उन्हें देखते ही डाकियाने आदरके साथ अभिवादन किया। उन्होंने मर्यादित ढंगसे नमस्कारका उत्तर दिया और डाकियासे डाकघरका बदामी लिफाफा लिया। एकान्तमें उन्होंने लिफाफा खोला। उसमें डाकघरके सेविंग खातासे दो शिलिंग निकालनेका अधिकारपत्र था। इसके बाद उन्होंने अपनी भीतरी जेबसे अपना पासबुक निकालकर देखा। उनके नाम बीस पाउण्ड जमा था। उन्होंने चुपचाप पास बुक और चालान जेबमें रख ली।

इसपर किसीको विस्मय नहीं होना चाहिए। हर एक दूरदर्शी आदमीको संकटकालके लिए कुछ न कुछ बचाकर रखना चाहिए। सालभरके कठिन दिनमें भी उन्होंने इस बीस पाउण्डको सम्हालकर रखा था। कैसी भी विपत्ति क्यों न घेरे हो, उससे भी भयानक विपत्तिके घेरनेकी संभावना बनी रहती है। ये ही बीस पाउण्ड इस समय उनकी मर्यादाकी रक्षा कर उनके स्वाभिमानको कायम रख सकते थे।

वापस आनेपर उनकी पत्नीने पूछा:—इतने तड़के कहाँ गये थे ?

"दवाखाने।"

(२)

शामको साढ़े सात बजे !

मि० कर्टेण्टी अंधेरेमें कुर्सीपर बैठे थे और उनकी पत्नी पलंगपर लेटी थीं। वे एकाएक उठ खड़े हुए और अपने मफलर और टोपकी तरफ बढ़े। उस दिनके भोजनके बाद रोटीके कुछ टुकड़े और थोड़ी चाय बची थी। तीसरे पहर मि० कर्टेण्टी एक बार बाहर गये थे और सेविंग बंकसे चालान भुना लाये थे। इस बीचमें उनकी पत्नी कहीं बाहर गयी थीं या नहीं, कोई नहीं कह सकता। दिनभर पति पत्नीमें बातचीत नहीं हुई थी। रंजिशके कारण नहीं बल्कि यही कैफियत प्रति दिन रहती थी। दूसरे दिन होनेवाली घटनाकी किसीने चर्चातक नहीं की। इस संबंधमें मुँह खोलनेका साहस उनकी पत्नीको नहीं था।

कभी कभी वे अपनी बेटीसे यह कह देनेके लिए सोचतीं—"हमलोगों-को अपने भाग्यपर छोड़ दो, जो बदा होगा, होकर रहेगा।" मि० कर्टेण्टीके स्वाभिमान और जिद्दके सामने उनको यही सूझता था। जब मि० कर्टेण्टी दर-वाजेसे बाहर होने लगे तो उन्होंने पूछा—इस वक्त कहाँ चले ?

"दवाखाने !"

बिना उनकी तरफ देखे ही मि० कर्टेण्टी घरसे बाहर हो गये। यदि उनकी तरफ उन्होंने दृष्टि फेरी भी होती तो अन्धेरेमें उन्होंने उन्हें नहीं देखा होता। तो भी उन्हें रोशनी जलाकर क्षणभरके लिये उन्हें देख लेना चाहिये था क्योंकि तीस

सालकी सङ्गिनी आज उनसे अलग हो रही थी। लेकिन उनकी भावुकता ठंडी पड़ गयी थी, दुर्भाग्यकी चक्कीके नीचे पिस गयी थी। इसलिये वे चुपचाप घरसे बाहर हो गये। वे जानते थे कि उनकी जबान पत्नी खो जायगी और सोती रह जायगी।

वह रात रूखी और भयावनी थी। उन्हें वेजउड़ इंस्टीट्यूटके निःशुल्क पुस्तकालयमें उस दिन जानेका इरादा नहीं था तो भी वे वहाँ जानबूझकर चले गये। उस संस्थाकी भीड़-भक्कड़से भी उन्हें उस दिन सन्तोष मिल रहा था। उन्होंने दवाओंका शब्दकोष उठा लिया और ऐसे मनोयोगसे उसे पढ़ने लगे मानों बाइबिलका पाठ याद कर रहे हों।

उनका मस्तिष्क ठीक तरहसे काम कर रहा था। उसमें किसी तरहका गोलमाल नहीं था। उनकी पत्नी चाहे भले ही चली जायें पर वे अपने दामादके घर किसी भी हालतमें जानेवाले नहीं थे। वह जाय और आराममें जिन्दगी बिताये। बंकवाले बीस पौण्ड उनके किसी कामके नहीं होंगे क्योंकि वे चलेंगे ही कितने दिन। अकेले अपना गुजर कुछ दिनतक वे उससे भले ही कर लें लेकिन उनके सगे सम्बन्धियोंको मालूम हो जायगा कि इनके पास रुपया अवश्य है और यह बात वे किसीको जानने देना नहीं चाहते थे। क्योंकि इसमें वे अपनी तौहीन समझते थे। इसके साथ ही जब ये बीस पाउण्ड खतम हो जायँगे तब क्या होगा? फिर वही समस्या उठ खड़ी होगी। नहीं, मैं बहुत बरदाश्त कर चुका। अब तो मेरे सामने एक ही प्रश्न तै करना रह गया है—'जिन्दा रहना या नहीं।'

शब्दकोषमें साफ साफ लिखा था—"तरल सायनाइड, खासकर पोटासियम सायनाइड जिसे फोटोग्राफर तथा इलक्ट्रो प्लेटर बहुधा काममें लाते हैं, बाजारमें साधारण तौरसे पाये जाते हैं। उनका प्रभाव एसिडसे कम घातक नहीं होता।"

इससे अधिक स्पष्ट और क्या हो सकता था। ये बातें वे पहलेसे ही जानते थे लेकिन आज पुनः अपनी यादको ताजा कर लेना चाहते थे ताकि भूल न हो जाय। विषका क्या असर होता है उसे पढ़नेका उन्होंने कष्ट नहीं

उठाया। उसे भी उन्होंने पहले पढ़ लिया था। जहर खानेके बाद बड़ी बेचैनी होती है, सारा शरीर जलने लगता है।

उन्होंने धीरेसे किताब बन्द कर दी और चलते बने। उस वक्त क्या किसीने इस बातकी कल्पना की होगी कि उसी रातको वे सभी मानव समाजसे अलग होनेकी तैयारी करेंगे।

वहाँसे वे सेण्ट लूकस स्क्वायरमें क्रिचलो कम्पनीकी दूकानपर पहुँचे। वर्सलेमें यह सबसे पुराना दवाखाना था। इसके मालिकसे इनकी साधारण जान पहचान थी। उन्हें सन्देह होने लगा कि वह सायनमाइड देगा या नहीं। उन्नीसवीं सदीके उस युगमें विष खरीदनेकी कोई मनाही नहीं थी। कोई भी आदमी कीमत देकर इच्छानुसार विष खरीद सकता था। उन्होंने अपने मनमें कहा—यदि वह मुझसे कुछ पूछेगा तो सीधे कह दूँगा कि ईलेक्ट्रो प्लेटिंगके लिये चाहिये। उसे मालूम ही है कि कुछ दिनोंतक मैंने इस तरहकी एक कम्पनीमें काम किया है।

पर उसकी दूकान बन्द हो गयी थी। मि० कर्टेण्टीके लिये यह भी एक दुर्घटना ही थी। कमबख्तको उसी दिन दूकान बन्द रखनी थी। अभी आठ बजनेमें दस मिनट बाकी था। आठ बजेसे पहले उसे दूकान बन्द करनेका कोई अधिकार नहीं था। मालूम होता है कि उसका दिमाग बिगड़ रहा है?

मि० कर्टेण्टीने जानबूझकर देर की थी ताकि अपना काम पूरा करनेके लिये उन्हें पूरा एकान्त मिले। लेकिन एकान्तकी खोजमें उन्होंने अतिशयतासे काम लिया। अब वे साल्टर कम्पनीकी तरफ बढ़े। इसकी दूकान टाउनहालसे भी आगे शहरके दूसरे छोरपर थी। यह दूकान नौ बजेतक खुली रहती थी। वे दूकानमें घुस गये। संयोगवश दूकान एकदम खाली थी।

मि० साल्टर सामने आकर खड़े हो गये और आदरके साथ पूछा—आपको क्या चाहिये?"

मि० कर्टेण्टीके होंठ सूख रहे थे। अपनी जीभसे उन्हें तर करते हुए उन्होंने कहा—"शीलस 'एसिड" ।

मि० साल्टरने विस्मयके साथ मि० कर्टेण्टीकी तरफ देखा। पर उन्होंने इसपर जरा भी ध्यान नहीं दिया।

"किस कामके लिये आपको यह चाहिये। क्या फोटोग्राफीके लिये ?

"हां"

"कितना दे दूँ"

"एक ड्रामकी शीशी"

"आपको विषवाले रजिस्टरपर दस्तखत करना होगा।'

"अच्छी बात है।"

मि० साल्टरने ऐसिडकी बोतल निकाली, शीशीमें भरकर कागजमें लपेटा और मि० कर्टेण्टीकी तरफ उसे बढ़ाया। उसी समय एक संभ्रांत महिलाने दूकानमें प्रवेश किया। मि० साल्टरने बड़े अदबसे उसे नमस्कार किया और उसकी तरफ घूम पड़े।

शीशी मि० कर्टेण्टीके हाथमें थी। उनके चेहरेपर विजयका चिह्न नाच उठा। वह कोई साधारण शीशी नहीं थी। उसमें वह जादू भरा था जिसके सामने ईश्वर भी सिर झुका सकता था। भूत और भविष्यकी उलझनोंका वह संक्षिप्त उत्तर था। उनके स्वाभिमान मर्यादा और विजयका वह एकमात्र उत्तर था। मि० कर्टेण्टी विजयीकी तरह उस शीशीको लेकर खड़े थे। इसके प्रतापसे वे इस असार संसारसे मुक्तिलाभ करने जा रहे थे जिस संसारसे वे तंग थे! वे निर्भय थे क्योंकि भयसे कल्पनाका उदय होता है और कल्पनासे वे कोसों दूर थे। उन्हें बाइबिलके आदेशों और धार्मिकताका भी विचार नहीं रहा। वे उस समय पूरे नास्तिक बन गये थे। अपने आपके सिवा उन्हें दूसरा कोई ख्याल उस समय नहीं था। एक बार उनके ध्यानमें मरनेके बाद लाशकी जाँचका ख्याल आया पर उसे उन्होंने हठात् अपनेसे दूर कर दिया। वे विजयी तो हो चुके थे।

उस महिलासे बात करते हुए मि० साल्टरने कहा—-एक शिलिंग दो पेंस दे दीजिये।"

मि० कर्टेण्टी—क्या कहा ? एक शिलिंग दो पेंस ! इसका दाम तो दस पेंससे ज्यादा नहीं होना चाहिए ।

मि० साल्टर—यही दाम है !

"पर मैं इतना नहीं देनेका !" इतना कहकर उन्होंने ऐखिडकी शीशी उसके सामने रख दी और बड़बड़ाते हुए दूकानसे बाहर हो गये ।

"वह अपनेको क्या समझता है ? क्या वह अपनी सारी दवाओंकी कीमत मुझसे ही वसूल कर लेना चाहता है ? पर मुझे वह ठग नहीं सकता था । लोग मुझे कंजूस कहते हैं । कहने दो । लेकिन ईमानदारी भी कोई चीज है ! उसने मुझे ठगना चाहा ! जो उस शीशीका एक शिलिंग दो पेंस देगा, वह नगद नहीं दे सकता । उधार लेनेवाले भले ही उतना दाम दें । मैं उतना दाम क्यों देने लगा । हैनाब्रिजका फ्रेसन कम्पनी आधा पाइण्टके लिए भी दस पेंससे ज्यादा नहीं ले सकती, बल्कि साढ़े नौ पेनीमें ही वहाँ मिल जायगा । उसकी दूकान दस बजेतक खुली रहती है । मैं वहीं जाऊँगा । वह गरीबोंका दोस्त है । वह मिहनतसे पैसा कमाना जानता है । इसीलिए वह सबसे पहले दूकान खोलता है और सबसे बाद बन्द करता है ।"

राहगीरोंने इनका बड़बड़ाना सुना । इनकी तरफ देखने लगे । मि० कर्टेण्टीको यह अच्छा नहीं लगा । वे चुपचाप हैनाब्रिजकी तरफ चले । वे अपने विचारोंपर दृढ़ थे । कोई भी शक्ति उन्हें डिगा नहीं सकती थी । लेकिन वे तुच्छ भी नहीं बनना चाहते थे ।

(३)

ब्रस्लेसे हैनाब्रिज जानेका एक रास्ता उडिसन लेनसे होकर गया है । यह सबसे नजदीकका रास्ता है लेकिन गन्दा रहनेके कारण सबसे ज्यादा तकलीफ-देह भी है । तो भी उन्होंने उसी रास्तेसे जानेका निश्चय किया क्योंकि उसी गलीमें उनका घर था और वे अपनी पत्नीके बारेमें जान लेना चाहते थे कि वे क्या कर रही हैं । कमरेमें अंधकारका साम्राज्य था । अपनी पत्नीकी इस किफा-

यतसारीसे उन्हें क्षोभ हुआ क्योंकि वे उनसे लड़नेका बहाना चाहते थे और रोशनीका इतनी देरतक जलते रहना बहुत बड़ा बहाना होता।

लेकिन मि० साल्टरसे वे बेतरह बिगड़े थे। मि० साल्टरकी ठगहारीके कारण ही तो उन्हें इतनी रातमें हैनाब्रिजतक जानेका कष्ट उठाना पड़ रहा था। उनका गुस्सा धीरे धीरे बढ़ता गया और वे क्रोधसे जलने लगे।

ग्लीक रिजके पास उडिसन लेन ट्रफलगार रोडसे मिलती है। उसके आगे फुटबाल खेलनेका मैदान है। आगेके नुक्कड़पर मिट्टीके बर्तनोंके कारखाने हैं। पास ही एक नया कारखाना बन रहा था।

ज्यों ही वे इस कारखानेके पास पहुँचे उन्हें किसी चीजके जलनेकी गन्ध मालूम पड़ी। वे खड़े हो गये और उसी तरह गन्धकी टोह लेने लगे जिस तरह बाघ रक्तके गन्धकी टोह लेता है। वे इस काममें इतने तन्मय हो गये कि अपना क्रोध और उद्देश्य एकदम भूल गये। उनकी नाकने उन्हें बतला दिया कि आसपास कहीं आग लगी है।

उन्होंने कारखानेकी ओर आँख उठाकर देखा। सामनेकी खिड़कियाँ उसी तरह नीरव थीं। वहाँ धूँआका कोई चिह्न नहीं था। लेकिन उनकी नाक उन्हें धोखा नहीं दे सकती थी। कारखानेका फाटक बन्द था। इसलिए वे भीतर नहीं घुस सकते थे। वे अहातेके अगलबगल दौड़ने लगे। पीछेकी दीवार आगेसे कम ऊँची थी। वे दीवारपर चढ़ गये और अहातेके आँगनमें कूद पड़े। वहाँ खड़े होकर उन्होंने देखा कि एक तल्लेकी खिड़कीसे धुँएका अम्बार उठ रहा है। भीतर आग धधक रही थी।

मि० कर्टेण्टीकी आत्मा जाग उठी। मि० साल्टरकी ठगीकी बात वे एकदम भूल गये। पेशेका जोश उनमें उमड़ पड़ा। सङ्कट और अग्निकाण्डके इस सङ्कटमें भी वे प्रसन्न हो रहे थे। उन्होंने अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया। वे दीवार फाँदकर सड़कपर आये और पुलिसकी तलाश करने लगे। लेकिन पुलिसका कहीं पता नहीं था। परोपकारके काममें सहायता करनेके लिये पुलिस नहीं बनी है, यदि आप ठगी और चोरीके काममें प्रवृत्त हों तो पुलिस आपके

बगलमें खड़ी दिखाई देगी। सड़कपर एकदम सन्नाटा था। तीन लड़कियाँ हाथमें हाथ दिये पटरीपर गाती चली जा रही थीं। उन्हें छोड़कर मि० कर्टेण्टी आगे बढ़े। थोड़ा आगे बढ़नेपर उन्हें एक मकानमें रोशनी दिखाई दी। डाक्टर अमरिंगटनका मकान था। मि० कर्टेण्टीको इस समय मर्यादाका ध्यान नहीं रहा। वे मकानकी तरफ बेतहाशा दौड़ पड़े और जोरसे घण्टी दबायी।

दरवाजा खुला। एक अधेड़ दाई सामने आकर खड़ी हो गयी। उसने मि० कर्टेण्टीको गौरसे देखा। बोली—क्या तुम्हें बहुत ज्यादा उतावली है?

मि० कर्टेण्टी—क्या तुम्हारे यहाँ टेलीफोन है?

दासी—यदि हो भी तो तुम्हें छूने कौन देगा?

"छूना कौन चाहता है। अपने मालिकसे कह दे कि मि० काल क्रफके नये कारखानेमें आग लग गयी है। वे लोग दमकलके लिए टेलीफोन कर दें।"

दासी उनकी बात सुनकर चौंक उठी। उसके पैर आगे नहीं बढ़े। इसपर मि० कर्टेण्टीने कहा—"सो रही है क्या?"

इतना कहकर वह कारखानेकी तरफ भागे। उसी तरह चहारदीवारी फाँदकर वे फिर भीतर दाखिल हुए। जहाँ आग धधक रही थी उसके पास ही उन्हें बालूकी ढेर दिखाई दी। पास ही एक बाल्टी पड़ी थी। उन्होंने बाल्टीमें बालू भरे और अँधेरेमें सीढ़ीको टटोलते हुए अपनी नाककी सहायतासे उसी तरफ आगे बढ़े जहाँ आग लगी थी।

लकड़ीके तख्ते भभकनेवाले ही थे कि बाल्टीका बालू उन्होंने उसपर फेंका। लेकिन आगको तोपनेके लिए काफी बालू नहीं था। खाली बाल्टी लेकर वे नीचे उतरने लगे तो सीढ़ीसे फिसलकर गिर पड़े और उनका घुटना छिल गया। उन्होंने चोटकी जरा भी परवा नहीं की। वे बाल्टी भर-भरकर तख्तेपर फेंकने लगे। उनका श्रम सफल हुआ। आग बुझ गयी।

इस कामको पूरा करके मि० कर्टेण्टी बाहर बरामदेमें जाकर खड़े हो गये। वहाँसे सड़ककी रोशनी साफ दिखाई देती थी। लेकिन उन्हें कोई नहीं देख सकता था। उन्होंने देखा कि सड़कपर लोगोंकी भीड़ जमा हो रही है जो ऐसे

अवसरोंपर केवल तमाशा देखनेके लिए इकट्ठा हो जाते हैं लेकिन हाथ-पैर हिलनेतकका नाम नहीं लेते। पर पुलिस या दमकलका कहीं पता नहीं था। उसी समय एक ट्राम गाड़ी उधरसे गुजरी। वह अपने रास्ते चली गयी। मि० कर्टेण्टी उसी तरह खड़े बाहरकी तरफ देखते रहे। एक बार पुनः विजयका चिह्न उनके चेहरेपर झलक उठा।

डाक्टर अमरिंगटन घरमें नहीं थे। उनकी पत्नीने दमकलको ही नहीं बल्कि कारखानेके मालिक मि० कालक्रफको भी टेलीफोन कर दिया था। मि० कालक्रफ अपने दो-चार दोस्तों और नवविवाहिता पत्नीको लेकर थोड़ी देरमें वहाँ आ धमके।

इन्हें देखकर मि० कर्टेण्टी कराहते हुए नीचे उतरे। आगका कोई चिह्न अवशेष नहीं रह गया था। इसलिए मि० कालक्रफने चिल्लाकर कहा—कहाँ आग लगी है? किस शैतानने यह संवाद भेजा।

इसी समय मि० कर्टेण्टीने सामने आकर कहा—अब आग कहाँ है? आग तो मैंने बुझा दी।

मि० कालक्रफ तेज मिजाजके आदमी थे। बिना समझे-बूझे उनके मुँहसे निकल पड़ा—तुम कौन हो? यहाँ किस तरह पहुँचे।

मेरा नाम मि० कर्टेण्टी है। यदि आप ऊपर चलें तो मैं आपको दिखलाऊँ कि मैंने क्या किया है।

मि० कर्टेण्टीकी दृढ़तासे मि० कालक्रफका स्वर मुलायम हो गया और उनके मनसे यह आशंका भी जाती रही कि आगके बहाने बदमाशोंका दल कुछ दूसरा ही अभिनय करना चाहता है।

चारों ओर घुप अंधेरा था। मि० कालक्रफने कहा—"सलाई जलाओ।"

मि० कर्टेण्टी—मैं सिगरेट नहीं पीता।

आगत सज्जनोंमेंसे एकके पास टार्च था। उन्होंने टार्च जलाया। टार्चके प्रकाशमें सभी लोग ऊपर गये और दुर्घटनावाले कमरेके सामने खड़े हो गये। मि० कर्टेण्टीने आदिसे अन्ततक सारी बातें कह डालीं और अपने

घुटनेकी चोट भी दिखायी। लकड़ीके जलनेकी उस समयतक गंध आ रही थी इसलिए मि० कर्टेण्टीकी बातें प्रमाणित हो गयीं।

सभी लोग मि० कर्टेण्टीके साहस और तत्परताकी प्रशंसा करने लगे। मि० कालक्रफने जेबसे एक गिन्नी निकालकर मि० कर्टेण्टीकी ओर बढ़ाते हुए कहा—तुम्हारी सेवाके लिए यह तुच्छ पुरस्कार है।"

मि० कर्टेण्टीने धन्यवाद देते हुए उसे ग्रहण किया।

मि० कालक्रफने हँसकर पूछा—आप इस तरहके काममें बड़े सिद्धहस्त प्रतीत होते हैं।

मि० कर्टेण्टीने इस तरहके अपने कई कारनामोंका वर्णन किया।

मि० कालक्रफ—आजकल आप कहाँ काम कर रहे हैं?

मि० कर्टेण्टी—आजकल तो खेलकूदमें ही दिन बीतता है।

मि० कालक्रफ क्षणभर चुप रहनेके बाद बोले—आपने अपना क्या नाम बतलाया था?

"मि० कर्टेण्टी।"

"देखो कर्टेण्टी, मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ। इसके बाद कुछ कहनेका उन्हें साहस नहीं हुआ।

मि० कर्टेण्टीको काफी सबक मिल चुका था इसलिये नामके पहले "मिस्टर" शब्दका योग न होनेपर भी वे नाराज नहीं हुए।

"मेरे यहाँ कोई पहरेदार नहीं है। क्या तुम यह काम कर सकते हो?"

मि० कर्टेण्टीने वह पद स्वीकार कर लिया।

यकायक वे कमरेसे बाहर झपटे। और लोग भी उनके पीछे हो लिये। टार्चकी रोशनी उनकी पीठपर पड़ रही थी। नाककी तरह इस वक्त उनका कान अपना काम कर रहा था। दमकल अपने सारे साजसमाजके साथ वहाँ पहुँच गया था। दमकलवालोंने काफी मुस्तैदीसे काम लिया था। खबर मिलनेके चालीस मिनटके भीतर ही वे पहुँच गये थे। मि० कर्टेण्टीने खिड़कीसे बाहर सिर

निकालकर दमकलवालोंको झिड़कते हुए कहा—आग बुझा दी गयी। अब तुमलोगोंकी कोई जरूरत नहीं रही। अपना रास्ता नापो।"

मि० कालक्रूफकी पत्नीने कहा —"आप तो बड़े मुस्तैद मालूम होते हैं। ऐसी मुस्तैदी तो मैंने कम ही लोगोंमें देखी है।" इतना कहकर उन्होंने अपनी कोमल बाहु मि० कर्टेण्टीकी गर्दनपर रख दी।

(४)

डक स्क्वायरमें एक होटल है जो रातको देरतक खुला रहता है। यहाँका भोजन बहुत ही स्वादिष्ट होता है। उसकी गन्ध इतनी मनोमोहक और आकर्षक होती है कि राह-चलते भी उसका स्वाद लेनेके लिए लोग मुड़ पड़ते हैं और अनायास होटलमें घुस जाते हैं।

मि० कर्टेण्टी इसी होटलमें गये और थोड़ी भूनी मछली खरीदी। वहाँसे वे ड्रेगन होटल गये और एक बोतल बियर शराब खरीदी। एक मोमबत्ती भी ले ली। घर पहुँचकर उन्होंने अपनी कुंजीसे घरका दरवाजा खोला। मोमबत्ती जलायी। सीढ़ियोंपर ही बूट उतार दिया और दबे पाँव अपने कमरेकी तरफ इन सामानोंसे लदे बढ़े।

उनकी पत्नी गाढ़ निद्रामें थीं। कैण्डिलकी रोशनी भी उन्हें जगा नहीं सकी। उन्होंने बड़े प्रेमसे उनके चेहरेकी तरफ देखा। उनका हृदय जोरोंसे धड़क रहा था। इतना सामान लेकर सीढ़ोपर चढ़नेकी वजहसे हुआ होगा। उनका हृदय प्रफुल्लित तथा उनके चित्तमें चंचलता थी। शायद आजकी सारी घटनाकी स्मृतिके कारण ऐसा हुआ हो। यदि यह आगकी दुर्घटना न हो गयी होती तो इस समयतक न जाने वे किस दुनियामें होते अथवा आज उन्होंने जो फजूलखर्ची की थी वह भी इसी कारण हो सकता था।

मछलीकी सुगन्धके प्रभावसे एक सुन्दर स्वप्न देखकर उनकी पत्नी जाग उठीं। उन्होंने देखा कि हाथमें कैण्डिल लिये मि० कर्टेण्टी उनकी ओर झुके हुए हैं।

मि० कर्टैण्टीने बड़े प्रेमके साथ कहा—कम्बलसे अपना शरीर मजेमें ढँक लो नहीं तो सर्दी लग जायगी।

वे उन्हें गलेसे लगाकर चूम लेना चाहते थे लेकिन कुछ समझकर उन्होंने ऐसा नहीं किया।

पतिकी इस मधुरतासे मुग्ध होकर उन्होंने पूछा—तब कब हम दोनों बेटीके यहाँ चले चलेंगे ?'

"मैं नहीं जाऊँगा।"

उसने उदास होकर कहा—मैं तो जाऊँगी। वे मुझे प्रेमसे रखेंगे। खेद इतना ही है कि मुझे अकेले जाना पड़ेगा।

"तुम्हें भी नहीं जाना होगा। मुझे नौकरी मिल गयी। इन मछलियोंको सम्हालकर रखो।

वह उठ बैठीं और पतिको चूम लिया। उनके रास्तेमें कोई बाधा नहीं थी।

मि० कर्टैण्टीने बड़े प्यारसे कहा—"अरे! तू तो काँप रही है।" इतना कहकर उन्होंने अपनी पत्नीको सावधानीसे कम्बलमें लपेट दिया।

स्कूल मास्टर

काठके फर्शपर घोड़ोंकी टाप सुनाई पड़ी। अस्तबलसे एक-एक करके तीनों घोड़े—काउण्ट नूलिन, जायण्ट और मैका—बाहर किये गये। तीनों सुन्दर और कीमती थे। शेलेस्टोवने जायण्टपर चारजामा रखा और अपनी सबसे छोटी लड़की माशासे कहा—बेटी, मेरी गोडे फ्राई! तुम इसपर सवार हो जाओ।

वह उचककर घोड़ेपर सवार हो गयी। उसकी बहन वेरिया मैकापर और निकिटिन काउण्ट नूलिनपर सवार हो गये। अफसर लोग अपने-अपने घोड़ेपर सवार हो गये। इस तरह यह जुलूस अस्तबलसे बाहर निकला।

निकिटिनने देखा कि तबसे बराबर माशाकी नजर उसीपर रहती है। वह उसकी ओर तिरछी नजरसे देखकर कभी-कभी कहती भी जाती है—"रिकाबपर पैर जमाये रहना। काउण्ट नूलिन बड़ा ही नटखट है।" चाहे जो भी कारण रहा हो, जायण्ट दो दिनसे बराबर काउण्ट नूलिनके बगलमें ही चलता रहा। निकिटिन स्निग्ध दृष्टिसे बराबर माशाको देखता, मन-ही-मन प्रफुल्लित होता, कभी-कभी उससे दो बातें भी प्रेमसे कर लेता। उसने अपने मनमें कहा—"संकोच और डरनेकी क्या बात है। कल मैं अपने मनकी बात उससे जरूर कहूँगा।"

सात बजे शामका वक्त था। ठंढी हवा चल रही थी। फूलोंकी महकसे मस्तीमें झूमते हुए पेड़ोंको चूम-चूमकर अनिल उनके सौरभसे प्रेमी जनोंको उन्मत्त बना रहा था। नगरके पार्कमें बैंडका बजना आरम्भ हो गया था। जन-समूह हँसता और मस्तीमें झूमता उसी तरफ जा रहा था। ये लोग भी अपने घोड़ेपर सवार होकर उसी तरफ चल पड़े। सैनिकोंने अफसरोंको सलाम किया।

छात्रोंने निकिटिन को। इस दलको देखकर सभी मुग्ध थे। कैसा सुहावना था वह समय! आकाशमें बादलोंके नीले टुकड़े इधर-उधर तैर रहे थे। सड़कके दोनों तरफ सुन्दर पेड़ोंकी कतार दोनों तरफकी अट्टालिकाओंको चूम रही थी।

वे लोग नगरसे बाहर निकले और सड़कपर घोड़ोंको सरपट छोड़ दिया। सड़कके दोनों तरफ हरे भरे खेत थे। फसलें उनमें लहलहा रही थीं। बड़ा ही मनोहर दृश्य था।

वेरियाके बगलमें जो अफसर चल रहा था उसके घोड़ेको देखकर माशाने निकिटिनसे कहा—"यह मैं स्वीकार करती हूँ कि पोलिस्कका घोड़ा नितान्त सुन्दर है। लेकिन उसमें ऐब भी है। उसके दाहने पैरमें जो सफेदी है उसे वहाँ नहीं होना चाहिये था। इसके अलावा वह अपनी गर्दन सदा हिलाता रहता है। अब यह आदत नहीं छूट सकती। वह जिन्दगीभर इसी तरह गर्दन हिलाता रहेगा।"

अपने पिताकी भाँति ही माशाको घोड़ोंसे प्रेम था। जब वह किसीका सुन्दर घोड़ा देखती तो उसके दिलमें जलन होने लगती और जब उनमें वह कोई दोष देख पाती तो बहुत ही खुश होती। निकिटिनको घोड़ोंकी कोई जानकारी नहीं थी। घोड़ा दुलकी चलता है या कदम, वह रिकाबके जोरपर या लगामसे घोड़ेपर कब्जा रखता है, दोनों बातें उसके लिए समान थीं। एक बातसे वह अवश्य खिन्न था। उसके बैठनेका तरीका स्वाभाविक नहीं था। जो अफसर घोड़ेपर ठीक तरहसे बैठना जानते हैं उन्हें देखकर माशा अवश्य खुश होती होगी। इससे वह अफसरोंसे मन-ही-मन जलता था।

आगे बढ़नेपर उन्हें एक बाग मिला। किसीने कहा कि इस बागमें चलकर पानी पीना चाहिये। सब लोग अन्दर गये। घोड़ेसे उतरकर वे लोग टहलने लगे। जिन्होंने इन्हें पहचाना, इनके पास आ गये। उनमें फौजका डाक्टर भी था। निकिटिनको स्कूलका छात्र समझकर उसने पूछाः—क्या गर्मीकी छुट्टी मनाने आये हो?

"नहीं, मैं यहीं रहता हूँ। शिक्षकका काम करता हूँ।"

"क्या कहा ? शिक्षक ! इसी उम्रमें आप शिक्षक बन गये ?"

"मैं छब्बीस सालका हुआ। आप क्या समझते हैं। ?"

"मूछँ दाढ़ी आपको भले ही निकल आयी है लेकिन आपको देखकर बाईस-तेईस सालसे ज्यादा कोई नहीं कह सकता। आप तो एकदम बच्चे से लगते हैं।"

निकिटिनने अपने मनमें कहा—यह मुझे अभी बच्चा समझता है। कोई उससे उसकी कमसिनीकी बातें करता तो उसे बहुत बुरा मालूम होता। खासकर औरतों और स्कूली लड़कोंके सामने। शिक्षकके पदपर नियुक्त होनेके बाद उसे अपनी कमसिनीपर स्वयं क्रोध आता था। स्कूलके लड़के उसका अदब नहीं करते थे और बूढ़े लोग उसे "युवक" कहकर पुकारते थे।

सूरज पश्चिम दिशामें डूब रहा था। आकाश लाल हो रहा था। वे लोग लेट पड़े। इस समय भी माशा निकिटिनके बगलमें ही थी। इस समय उसने माशापर अपना प्रेम प्रकट कर देना चाहा लेकिन उसे डर लगा कि उसकी बातें अफ़सर और वेरियो सुन लेंगे। इससे वह चुप रहा। माशा भी चुप थी। उसकी चुप्पी और इस तरह उसको बगलमें माशाके चलनेका कारण वह समझता था। इससे मन-ही-मन वह खुश था और अनेक तरहकी सुखद कल्पनाएँ करता जाता था।

घर पहुँचे तो भोजन तैयार था। शेलेस्टोव अपने साथी अफसरोंके साथ गोलमेजके पास बैठकर आलोचना प्रत्यालोचना कर रहे थे। शेलेस्टोव कह रहे थे:—,'वह महज बेहूदापन है और कुछ नहीं।"

निकिटिन माशाको चाहता था, इससे उसके घरकी सभी बातें उसे प्यारी लगती थीं। उसके पिताका यह "बेहूदापन" शब्द भी—जिसका प्रयोग वे बहुधा किया करते थे—बहुत प्यारा मालूम होता था। यदि उसे किसी चीजसे नफरत थी तो उन बिल्लियों, कुत्तों और लक्का कबूतरोंसे जो रात-दिन गूँगाँ करते रहते थे। कुत्तोंकी संख्या इतनी ज्यादा थी कि इतने दिनोंके आने

जानेपर भी वह सिर्फ मुश्का और सोमको पहचान सका था। मुश्का रोगी और भद्दी थी वह निकिटिनको देखकर जल उठती थी। उसे देखते ही वह गुर्राने लगती थी। इसके बैठ जानेपर उसकी कुर्सीके नीचे घुस जाती थी और जब निकिटिन उसे दुरदुराने लगता तो वह जोरोंसे भूकना शुरू करती। इसपर घरके लोग कहते:—डरिये मत। वह काटती नहीं। बड़ी सीधी कुतिया है।

सोम लंबा था। रंग उसका काला था। उसकी पूँछ कड़ी थी। वह बड़ा ही सीधा-सादा था लेकिन भोजनके वक्त वह टेबुलके नीचेसे लोगोंकी देहपर चढ़ जाता था और चाटने लगता था। ठोंकने-ठठानेपर भी वह नहीं हटता था और अपने थूथनसे कपड़ा गन्दा कर देता था। निकिटिनको कई बार यह संकट झेलना पड़ा था। इससे वह उससे नफरत करता था।

वे लोग भोजनपर बैठे तो बहस छिड़ गयी। बहसका आरंभ वेरियाने किया। वेरिया माशासे ज्यादा सुन्दर थी, समझदार और बुद्धिमती भी थी। मर्यादाका उसे बहुत ख्याल रहता था। माँके स्वर्गवासके बाद बड़ी कन्याके नाते वह घरकी मालकिन भी थी। माशाको वह नादान बच्ची समझती थी।

उसके सामने कोई भी बात कहिये, वह बहस किये बिना नहीं रह सकती थी। बहस करनेका उसे रोग था। इस समय निकिटिनने परीक्षाकी बात छेड़ी थी। निकिटिनको बाधा देते हुए उसने कहा:—क्षमा कीजियेगा निकिटिन महाशय! आप कहते हैं कि परीक्षाएँ कठिन होती हैं; लेकिन इसमें दोष किसका है? आठवें वर्गके विद्यार्थीसे आप निबन्ध लिखवाना चाहते हैं और विषय देते हैं:—"पुश्किन एक मनोवैज्ञानिक!" पहले तो ऐसे गूढ़ विषय निबन्धके लिए नहीं दिये जाने चाहिये, दूसरे पुश्किन अभी भी मनोवैज्ञानिक नहीं था। कोचरिन और डोस्टावेस्कीकी बात छोड़ दीजिये पर पुश्किन तो कविके अलावा कुछ नहीं था।

निकिटिनने रुखाईसे कहा:—कोचरिन एक वस्तु है और पुश्किन दूसरी। दोनोंमें कोई समता नहीं। दोनों दो भिन्न चीजें हैं।

"मैं जानती हूँ कि स्कूलोंमें कोचरिनके ग्रन्थ नहीं पढ़ाये जाते। लेकिन यह तो बतलाइये कि पुश्किन किस तरह दार्शनिक थे।"

"आप यह कहना चाहती हैं कि वे दार्शनिक नहीं थे। यदि आप चाहें तो अपने मतके समर्थनमें मैं उदाहरण दे सकता हूँ।"

इतना कहकर निकिटिनने उनके ग्रन्थोंमेंसे कई अवतरण पढ़कर सुना दिये।

वेरिया—मुझे तो इन अवतरणोंमेंसे दार्शनिकताकी कहीं झलक भी नहीं मिलती। सच्चा दार्शनिक वह है जो मानव प्रकृतिके गूढ़तम वृत्तियोंका विश्लेषण करे और यहीं कवि की सूक्ष्मदर्शिता है।"

निकिटिनने आवेशमें कहा:—"मैंने आपकी मनोवैज्ञानिकताका अभिप्राय समझा। कोई भुथरे छुरेसे मेरा गला रेते और मैं गला फाड़-फाड़कर चिल्लाता हूँ, यही आपकी मनोवैज्ञानिकता है न?"

"यह आपकी अपनी कल्पना है। पर आप यह साबित न कर सके कि पुश्किन सचमुच मनोवैज्ञानिक था।

अफसरोंने उसका पक्ष लिया। कैप्टेन पोलिंस्कीने इस बातपर बहुत जोर दिया कि पुश्किन सचमुच बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक था। अपने मतके समर्थनमें उसने पुश्किनकी एक तीसरी किताबसे अवतरण दिया। लेफ्टनेण्ट कर्नेण्टने कहा कि यदि पुश्किन मनोवैज्ञानिक न होता तो मास्कोमें उसकी प्रतिमा नहीं स्थापित की गयी होती।

इसपर टेबुलके सबसे अन्तिम कोनेसे आवाज आयी:—वह बेहूदापन था। मैंने गवर्नरसे भी यही कह दिया था।

निकिटिन—इस तरहकी बहसका कहीं अन्त नहीं हो सकता। इसलिये मैं इसे आगे बढ़ाना नहीं चाहता। बहुत हो गया......

"धत्! बदमाश कुतिया! फिर बदनपर चढ़ आयी। भाग यहाँसे।"

टेबुलके बीचसे मश्का गुर्राने लगी।

वेरिया—तब तुम इस बातको स्वीकार करो कि तुम्हारा पक्ष गलत है।

इसी समय कुछ महिलाओंने प्रवेश किया और बहस आपसे आप रुक गयी। वे लोग सीधे बैठकमें चली गयीं, नाच-गाना आरम्भ हो गया।

नाच-गानके समय बूढ़ा शेलेस्टोव वहीं सिगरेट पीता रहा और लोगोंको देखता रहा। उपस्थित मण्डलीमें शेवाल्डीन नामके एक व्यक्ति भी थे। वे म्युनिसिपल बैंकके डाइरेक्टर थे। साहित्य—विशेषकर नाट्य साहित्यसे इन्हें प्रेम था। स्थानीय नाट्य परिषद्के ये ही संस्थापक थे। अभिनयोंमें भी काम करते थे। वे लम्बे और दुबले-पतले थे इसलिए नगरके लोग इन्हें "ममी" कहा करते थे। नाट्यकलासे इन्हें इतना प्रेम था कि इन्होंने अपनी मूँछ और दाढ़ी घुटवा रखी थी। इससे वे और भी 'ममी'की तरह लगते थे।

नाच-गानके बीचमें वे निकिटिनकी तरफ सरककर गये और कहने लगे—"मैं आपलोगोंकी बहस चुपचाप सुन रहा था। मेरा मत आपसे एकदम मिलता है। हमलोगोंके विचार एकसे हैं इसलिए हमलोगोंको परस्पर वार्तालापमें बड़ा आनन्द आवेगा। क्या हम्बर्गकी नाट्यकलापर लेसिंगकी पुस्तक आपने पढ़ी है ?

निकिटिन—जी नहीं,

शिवाल्डिन अवाक् रह गया। वह इस तरह अपना हाथ हिलाने लगा मानो उसकी अँगुलियाँ जल गयी हों। वह चुपचाप निकिटिनके पाससे दूर सरक गया।

शेवाल्डिनका निकिटिनके पास आना, यह सवाल पूछना और विस्मय प्रकट करना सब कुछ उसे विचित्र मालूम हुआ। तो भी वह गंभीर होकर सोचने लगा :—

"मेरे लिए शर्मकी बात है। मैं साहित्यका अध्यापक हूँ और अभीतक मैंने लेसिंगकी रचना नहीं पढ़ी है। मुझे उसे अवश्य पढ़ना चाहिये।"

भोजनके पहले सभी लोग "फेट" खेलने बैठ गये। दो गड्डी ताश लाये गये। एक गड्डी बाँट दी गयी और दूसरी गड्डी उलटकर टेबुलपर रख दी

गयी। दूसरी गड्डीमेंसे एक कार्ड उठाकर बूढ़े शेलेस्टोबने कहा :—जिसके पास यह ताश होगा उसे जखीरामें जाकर मालिनको चूमना होगा।

शेवाल्डिनके हाथमें वह ताश निकला। सबलोग उसे घेरकर खड़े हो गये, उसे जखीरामें ले गये और मालिनको चूमनेके लिए बाध्य किया। जब वह उसे चूमने लगा तो लोग थपोड़ी पीट-पीटकर हँसने लगे।

निकिटिनके भाग्यमें पादरीकी तरह सबका "अपराध स्वीकार" का काम था। बैठकके बीचोबीच एक कुर्सी रख दी गयी और वह उसपर आकर बैठा। एक दुशाला लाकर उसे ओढ़ा दिया गया। सबसे पहले वेरिया सामने आयी।

अँधेरेमें उसके कठोर चेहरेकी ओर देखनेका यत्न करते हुए निकिटिनने कहा :—मैं आपका अपराध जानता हूँ। किस उद्देश्यसे आप बराबर पोलिंस्की-के साथ सटी रहती हैं। हुसारके पीछे इस तरह लगे रहना बेमतलब नहीं हो सकता।

वेरियाने मुँह बनाकर कहा :—एकदम थर्ड क्लास !

इसके बाद निकिटिनने दुशालेके अन्दरसे दो स्थिर चमकीली आँखोंकी प्रभा देखी। अँधेरेमें किसीकी प्यारी सूरतकी झलक मिली और भीनी भीनी महँक—जो माशाकी विशेषता थी—उसकी घ्राणेन्द्रियको तृप्त करने लगी। उसने मिठासभरे शब्दोंमें कहा :—मेरी गोडफ्राई ! कहिये आपने क्या पाप किया है ?

माशाने आँखोंका कोना दबाया, जीभका कोना निकालकर उसे दिखाया और हँसती हुई चली गयी। दूसरे ही क्षण वह कमरेके बीचमें खड़ी होकर थपोड़ी पीटकर चिल्लाने लगी :—

"भोजन तैयार है ! भोजन तैयार है !!

सभी लोग रसोई-घरकी तरफ चले। भोजनके समय भी वेरिया चुप नहीं रही। इस समय पिता-पुत्रोंमें बहस छिड़ गयी। पोलिंस्कीने डटकर भोजन किया, प्यालेपर प्याला ढाला और एक लड़ाईका वर्णन करते हुए निकिटिनसे कहने लगा कि जाड़ेकी रातमें घुटनेभर कीचड़में उसे किस तरह खड़ा रहना

पड़ा था। शत्रु पासमें ही था। इसलिए न तो वह सिगरेट पी सकता था और न जबान हिला सकता था। रात अंधेरी थी, कड़ाकेकी सर्दी पड़ रही थी, तीखी हवा बह रही थी। निकिटिन उसकी बातें सुनता जाता था और तिरछी चितवनसे माशाको निहारता रहता था। वह भी निर्निमेष दृष्टिसे उसे देख रही थी। उसकी आँखें इस तरह स्थिर थीं मानो वह किसी गहरे विचारमें डूबी हो। निकिटिन प्रसन्न भी था और क्षुब्ध भी।

उसके मनमें बार बार यही प्रश्न उठता था:—वह इस तरह मुझे क्यों निहारती रहती है। यह ठीक नहीं है। लोग क्या समझेंगे! वह कितनी सुन्दर पर साथ ही नटखट है।

आधी रातको भोजन समाप्त हुआ। निकिटिन फाटकसे बाहर निकला तो एक-तल्लेकी खिड़की खुली और माशाने सिर बाहर निकालकर पुकारा—निकिटिन!

निकिटिन—कहो, क्या कहना चाहती हो?

माशाने कुछ कहनेके लिए मुहँ खोला पर जबानपर शब्द नहीं आये। क्षणभर चुप रहकर उसने कहा:—पोलिंस्की दो-एक दिनमें कैमरा लेकर आयेगा और हमलोगोंका फोटो लेगा। तुम आना मत भूलना।

"अच्छी बात है।"

माशा खिड़कीसे हट गयी। खिड़कीका द्वार बन्द हो गया। दूसरे ही क्षण पियानोकी-सी मधुर ध्वनि उसके कानमें पड़ी। उसने अपने मनमें कहा—यह भी विचित्र घर है। कबूतरोंके गुटुरगोंके सिवा यहाँ मनोरंजनका कोई दूसरा साधन ही नहीं दिखाई पड़ता।

शेलेस्टोवके मकानमें ही आनन्द-मंगल नहीं हो रहा था। ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ा अन्य मकानोंमेंसे भी पियानोका मधुर स्वर उसके कानमें पड़ने लगा।

निकिटिनका डेरा वहाँसे आध मीलपर था। इपोलिट इपोलिटिचके साथ उसने एक तल्ला ही किरायेपर ले लिया था। इपोलिटिच उसी स्कूलमें इतिहास

और भूगोलका शिक्षक था। दोनोंमें अत्यन्त घनिष्ठता थी। जिस समय निकिटिन डेरेपर पहुँचा इपोलिट चुपचाप बैठा अपने छात्रोंका नक्शा सुधार रहा था। उसके विचारमें भूगोलके अध्ययनमें शुद्ध नक्शा खींचना और इतिहासके अध्ययनमें घटनाओंकी तिथि याद रखना। वह रात-रातभर बैठा कभी नक्शा दुरुस्त करता रहता था और कभी घटनाओंका सिलसिलेवार तारीख लिखता रहता था।

उसके कन्धेपर हाथ रखकर निकिटिनने कहा—आजका दिन कैसा सुहावना था। इतनेपर भी तुम घरमें ही बैठे रह गये।

इपोलिट बातूनी नहीं था। या तो वह चुप रहता या प्रतिदिनकी साधारण घटनाओंकी बातें करता। उसने कहा—

"सचमुच मौसिम बड़ा ही सुन्दर है। सर्दी बीत रही है। इसके बाद गर्मी आ पहुँचेगी। सर्दीसे गर्मी कहीं अच्छी होती है। जाड़ेमें आग वगैरह जलानेकी झंझट उठानी पड़ती है लेकिन गर्मीमें यह सब नहीं करना पड़ता। सिवा एक सर्दीके कमरेमें आप खिड़की खोलकर पैर पसारकर सो सकते हैं और जाड़ेमें कितना भी छिपाकर अपनेको रखिये तो भी शरीर काँपा करता है।

इन नीरस बातोंसे निकिटिनका मन ऊब उठा। वह उठ खड़ा हुआ और बोला:—मैं अपने संबंधकी कुछ रोमांचक बातें कहना चाहता था लेकिन तुम तो भूगोलमय हो रहे हो। पर यदि तुमसे कोई प्रेमकी बातें छेड़े तो तुम उससे इतिहासकी घटना पूछने लगोगे। तुम्हारा इतिहास तुम्हींको मुबारक रहे।

इपोलिट—तुम इतने नाराज क्यों हो गये?

लेकिन उसको वास्तविक मलाल माशासे अपने दिलकी बातें न कहनेका था। दूसरा मलाल उसे इस बातका था कि उसकी प्रेमकी बातें सुननेवाला कोई नहीं था। वह अपने कमरेमें जाकर पलंगपर लेट रहा। अँधेरेमें वह उसी तरह पड़ा-पड़ा सोचने लगा—दो सालके बाद उसकी बदली पीटसबर्ग हो जायगी। माशा उसे विदा देने स्टेशनपर आवेगी और रो पड़ेगी। पीटसबर्गमें उसे

माशाके प्रेमपत्र मिलेंगे। वह जल्दी घर वापस आनेकी विनती करेगी और वह उसका उत्तर देगा। वह अपने खतको इस तरह शुरू करेगा।

"मेरी प्यारी चुहिया!"

वह इसी तरह पड़ा-पड़ा सोचने लगा।—पीटसवर्गसे वह लौटेगा। माशा स्टेशनपर ही उससे मिलेगी। मारे खुशीके वह उससे लिपट जायगी या वह उसे धोखा देकर चुपचाप रातको ही पहुँच जायगा। दबे पांव उसके कमरेमें पहुँचकर उसे जगायेगा। वह आँखें खोलेगी और सामने उसे देखकर खुशीसे उछल पड़ेगी।

दिन चढ़ आया था। पर निकिटन अभीतक सोकर उठा नहीं था। वह स्वप्न देख रहा था:—वह उसके मकानके पास पहुँचा है। माशा खिड़की-पर बैठी है। उसे देखते ही उसने कुछ कहा। वह नीचे उतरी और उसे साथ लेकर घूमने चली गयी। रास्तेमें उसे शेवाल्डिन मिला। उसने छूटते ही पूछा:—क्या तुमने लेसिंगकी रचना पढ़ी?

निकिटिन काँप उठा और आँखें खोल दीं। सामने खड़ा इपालिट कह रहा था:—क्या अभीतक सोते ही रहोगे? स्कूल चलनेका वक्त हो गया। कपड़े उतारकर सोया करो। देखो पैण्टकी क्या हालत हो गयी।

निकिटिन हाथ-मुँह धोकर तैयार हो गया। पहले घंटेमें उसे नवें वर्गको रूसी साहित्य पढ़ाना था। ज्यों ही वह कक्षामें घुसा उसकी दृष्टि ब्लैक बोर्डपर पड़ी। उसपर दो मोटे-मोटे अक्षर लिखे थे:—एम० एस०। एम० एस०-से मतलब था माशा शेलेस्टोव।

उसने अपने मनमें कहा:—इन दुष्टोंको इसकी गन्ध मिल ही गयी। इन्हें ये सब बातें किस तरह मालूम हो जाती हैं।

दूसरे घंटेमें वह पाँचवें वर्गमें गया। वहाँ भी बोर्डपर वे ही दोनों अक्षर लिखे थे। जब वह पढ़ाकर कक्षासे बाहर निकला तो सभी छात्र खिलखिलाकर हँस पड़े।

उसे रातको नींद नहीं आयी थी इससे उसका सिर भारी था। शरीर

भारी हो आया था। अंग-अंग टूट रहे थे। जो लड़के परीक्षाके पहले ही स्कूलसे खिसक जानेकी ताकमें थे वे चुपचाप शैतानी करते रहते थे। निकिटिन-की बेचैनी बढ़ रही थी। वह बार-बार खिड़कीसे बाहर झाँकता और बाहरका सुहावना दृश्य देखकर उसका मन चंचल हो उठता।

शामसे पहले उसे छुट्टी मिलनेवाली नहीं थी। तीन बजे स्कूल बन्द होगा। उसके बाद उसे उल्फके यहाँ जाकर उसके लड़केको पढ़ाना पड़ेगा। सात बजे स्कूलमें वाक्य-परीक्षाके संबंधमें शिक्षकोंकी बैठक थी।

शाम होनेके बाद उसे फुरसत मिली। वह सीधे शैलोस्टोवके घरकी तरफ चला। उसका हृदय धड़क रहा था। अपने मनकी बात माशासे कहनेके लिए उसने महीनोंसे तैयारी कर ली थी। सारी भूमिका बाँध ली थी। लेकिन इस समय वह सब कुछ भूल गया था। उसे शब्द नहीं सूझते थे। लेकिन उसने इतना निश्चय कर लिया था कि आज जिस तरह भी हो वह शादीका प्रस्ताव करके ही लौटेगा।

"मैं उसे बागमें बुलाऊँगा। कुछ देर टहलनेके बाद मैं उससे साफ साफ कह दूँगा।"

दालानमें कोई नहीं था। वह भोजनालयमें गया। वह भी सूना था। बैठकमें भी कोई नहीं था। ऊपरके तल्लेपर वेरियाका शब्द सुनाई पड़ा। वह किसीसे बहस कर रही थी और जखीरेसे कैंचीकी आवाज आ रही थी।

निकिटिन ऊपर चढ़नेके लिए आगे बढ़ा। उसी समय कालीसी कोई चीज हाथमें लिए माशा बगलके कमरेसे बाहर निकली और सीढ़ीकी तरफ झपटी।

निकिटिनने उसे बीचमें ही रोक कर कहा—मेरी! वह हाँफ रहा था उसके मुँहसे शब्द नहीं निकला। उसने एक हाथसे उसका हाथ पकड़ा और दूसरेसे वह काली चीज। वह भयभीत और चकित होकर उसका चेहरा देखने लगा।

निकिटिन अपनी बात शीघ्रतासे कह डालना चाहता था। यह अवसर वह खोना नहीं चाहता था। उसने कहा—मेरी! मेरे हृदयके भाव तुम

समझती हो। मैं उन्हें व्यक्त करना चाहता हूँ। लेकिन मेरे मुँहसे बात नहीं निकल रही है। न-जाने क्यों मेरा दिल धड़क रहा है। नीली चीज माशाके हाथसे सरककर जमीनपर जा गिरी। निकिटिनने उसका दूसरा हाथ भी पकड़ लिया। माशाके गालोंपर गुलाबी रंग दौड़ गया। उसके होंठ काँपने लगे। वह निकिटिनसे हटकर कोनेमें जा खड़ी हुई।

निकिटिनने अधीर होकर कहा—मेरी ! मैं किन शब्दोंमें अपने दिलका भाव तुमसे कहूँ। मेरा विश्वास मानो। मैं......

इतना कहकर उसने उसका मुँह चूम लिया। माशाने उसे गलेसे लगा लिया और उसकी छातीपर अपना सिर रख दिया।

इसके बाद वे दोनों बागमें चले गये और देरतक घूमते रहे। आकाशसे चन्द्रमा झाँक रहा था।

इसी तरह बहुत देरतक घूमते रहनेके बाद दोनों वापस आये। तबतक लोग नाच-घरमें जमा हो गये थे। कुछ देरतक नाच-गाना चलता रहा। फिर लोगोंने 'फेट' खेला। भोजनपर जानेके समय माशाने निकिटिनसे कहा—बाबूजी और वेरियासे तुम खुद कहना। मुझे लज्जा मालूम होती है।

भोजनके बाद निकिटिनने बूढ़े शेलेस्टोवसे बातचीत की, क्षणभर सोचनेके बाद बूढ़ेने कहा— तुम्हारे प्रस्तावसे मैं कृतज्ञ हूँ लेकिन मैं दो बातें तुमसे कर लेना चाहता हूँ। ये बातें मैं लड़कीके पिताकी हैसियतसे नहीं कर रहा हूँ बल्कि एक सच्चे शुभचिन्तकके नाते। तुम इसी उम्रमें शादी करनेके लिए व्यग्र क्यों हो ? इस उम्रमें तो किसानोंके लड़के ब्याहे जाते हैं और उसे मैं बेहूदापन समझता हूँ। लेकिन तुम ऐसी बेवकूफी क्यों करो। इसी कच्ची उम्रमें बन्धनमें पड़ना मुझे बुद्धिमानी नहीं प्रतीत होती।

बूढ़ेकी बातसे निकिटिन चिढ़ गया। बोलाः— मैं बच्चा नहीं हूँ। मैं अपने सत्ताईसवें सालमें प्रवेश कर चुका हूँ !

इसी समय वेरियाके शब्द सुनाई पड़े:—बाबूजी, मवेशियोंके डाक्टर आये हैं।

बात-चीत वहीं खतम हो गयी। माशा, वेरिया और पोलिककी निकिटिनको पहुँचाने आये। दरवाजेपर पहुँचकर वेरियाने कहा—आपके विद्वान् दोस्त मकानके अन्दर ही क्यों बन्द रहते हैं। हमलोगोंको दर्शन क्यों नहीं देते?

जिस समय निकिटिन पहुँचा इपोलिट बिस्तरेपर बैठा अपना पैण्ट उतार रहा था। निकिटिनने कहा—सो मत जाना! मैं अभी आता हूँ।

इपोलिटने पैण्ट उसी तरह चढ़ा लिया और पूछा—क्या बात है?

"मैं शादी करने जा रहा हूँ।"

निकिटिन जाकर उसके पास बैठ गया। उसके चेहरेकी तरफ देखते हुए बोला—माशा शेलिस्टोवसे मेरी शादी पक्की हो गयी। मैंने आज प्रस्ताव कर दिया।

"अच्छी बात है। लड़की तो अच्छी है, लेकिन कमसिन है।"

"निकिटिनने अपनी गर्दन हिलाकर कहा—हाँ, वह बहुत कमसिन है।"

इपोलिट—मैंने उसे पढ़ाया है। मैं उसे जानता हूँ। भूगोलमें तो बुरी न थी लेकिन इतिहास कुछ नहीं जानती। क्लासमें सदा असावधान रहती थी।

निकिटिनको अपने मित्रकी दशापर करुणा हो आयी। उसने मीठे स्वरमें कहा—दोस्त! तुम भी शादी क्यों नहीं कर डालते। कहो तो वेरियासे तुम्हारी शादी पक्की कर दें। बड़ी सुन्दर युवती है। यह बात सही है कि उसे बहस करनेका रोग है। लेकिन उसका हृदय बड़ा ही विशाल है। वह अभी तुम्हारी ही चर्चा कर रही थी। उसीसे शादी कर लो।

वह भली-भाँति जानता था कि वेरिया इस कुन्दजेहन और बुद्धूसे शादी करना कभी भी नहीं चाहेगी तो भी वह उसे उत्साहित करता रहा।

इपोलिट—विवाह गम्भीर विषय है। सब पहलूपर विचार करके ही कदम आगे बढ़ाना चाहिये। जल्दीबाजीमें यह काम नहीं करना चाहिये। दूरदर्शिता सदा सुखकर होती है। शादी-ब्याहके मामलेमें इसपर और भी जोर देना चाहिये। यहींसे मनुष्यका नया जीवन आरंभ होता है।

उसने वही पुराना राग अलापना शुरू किया। निकिटिनको उसका उपदेश

सुननेका धैर्य नहीं रहा। वह उठकर अपने कमरेमें चला गया। वह झटपट कपड़ा उतारकर सो जाना और कल्पना-जगत्‌में भ्रमण करना चाहता था। उसे अचानक याद आ गया कि उसने लेसिंग नहीं पढ़ा।

उसने अपने मनमें कहा—मुझे लेसिंगकी रचना अवश्य पढ़नी चाहिये। लेकिन मैं उसके लिए क्यों परेशान होऊँ।

उसकी आँख लग गयी और वह रातभर आनन्दकी नींद सोता रहा।

रातभर वह उन्हीं तीनों घोड़ोंको स्वप्नमें देखता रहा।

गिरजाघर लोगोंसे खचाखच भरा था। लेकिन यदि कोई मुँह खोलनेका साहस करता तो जो पुरोहित शादी करा रहा था, वह उसकी तरफ घूरकर देखता और रुखाईसे कहता—कृपया शान्त होकर बैठिये। ईश्वरसे डरिये।

मेरे अगुआ मेरे दो सहकर्मी थे और माशाके कैप्टेन पोलिस्की और लेफ्टनेण्ट जेरनेट। शादी धूमधामसे हुई। विवाहकी प्रतिज्ञा पढ़ते समय मेरा हृदय भर आया। मैंने अपने जीवनपर एक दृष्टि डाली। उसका क्रमिक विकास देखकर मैं फूला नहीं समाया। दो साल पहले मैं मामूली छात्र था। साधारण कोठीमें रहता था। न मेरे पास पैसे थे, न मेरा अपना कोई था। मेरा भविष्य अन्धकारमय था। इस समय मैं सरकारी स्कूलमें शिक्षक हूँ। मुझे निश्चित आमदनी है। मेरे ही लिए आज इतनी धूमधाम है, गिरजामें रोशनी जगमगा रही है। मेरे ही लिए तो यह कमनीय कामिनी हर्षातिरेकसे उत्फुल्ल है। कल्पनाके वे आनन्द जिनका अनुभव मैं पुस्तकोंमें किया करता था, आज मूर्तिमान होकर मेरे सामने खड़े हैं।

विवाहकी रस्म समाप्त हुई, भीड़ हम दोनोंको घेरकर खड़ी हो गयी। बधाइयाँ दी जाने लगीं। बूढ़े ब्रिगेडियर जेनरलने माशाको लक्ष्य कर कहा—"मेरी शुभकामना है कि तुम्हारा चेहरा सदा गुलाबकी तरह खिलता रहे।"

सभी लोग खुश थे। मैं भी मुस्कुरा रहा था। मेरे मित्र इपोलिटने मेरे पास आकर कहा—आजतक तुम अविवाहित थे और अकेले थे। आज तुम्हारा विवाह हो गया और तुम एकाकी नहीं रहे।

गिरजाघरसे हमलोग उस दो-मंजिले मकानमें गये जो मुझे दहेजमें मिला। इस मकानके अलावा हमलोगोंको बीस हजार रोबुल और एक चक भूमि मिली। उस जमीनमें मुर्गे और बत्तक बहुत थे जो देख-भालके बिना खराब हो रहे थे। घर पहुँचकर मैं पलंगपर लेट गया और सिगरेट पीने लगा। ऊपर मेहमान लोग हल्ला मचा रहे थे और आँगनमें बैण्ड बज रहा था। इसी समय वेरिया शराबका ग्लास लिये बैठककी तरफ गयी। उसका चेहरा उदास और उतरा हुआ था। वहाँ पहुँचते ही वह रो पड़ी। शराबका ग्लास उसके हाथसे गिरकर चूर-चूर हो गया। हमलोगोंने उसे पकड़कर सँभाल लिया। बगलके कमरेमें पलंगपर पड़ी हुई वह बड़बड़ाने लगी---

"भगवान! मेरे दिलकी बात कौन समझेगा। किसीको मेरी चिन्ता नहीं है।"

लेकिन सभी इस बातको समझते थे कि माशासे चार साल बड़ी होनेपर भी वह कुँआरी है। उसे माशासे ईर्ष्या नहीं हो रही थी। पर वह अपने भाग्यपर रो रही थी कि उसका समय बीतता जा रहा है।

सुबह पाँच बजे मैं अपनी डायरी लेकर आजके अपने आनन्दका वर्णन लिखने बैठ गया। मैंने सोचा था कि पूरे ६ पृष्ठोंमें मैं सविस्तर सब कुछ लिखूँगा और माशाको पढ़कर सुनाऊँगा। लेकिन जब कलम लेकर बैठा तो मेरी सारी कल्पना हवामें उड़ गयी। केवल वेरियाकी बातें ही मुझे स्मरण रहीं।"

बहुत दिनतक उसे डायरी लिखनेका अवसर नहीं मिला। अगस्तके आरंभमें ही स्कूलकी परीक्षाएँ थीं और पन्द्रहके बादसे ही पढ़ाई शुरू होती थी। वह नौ बजे स्कूल पहुँचता और दस बजते ही माशाके लिये व्यग्र हो उठता, बार-बार घड़ी निकालकर देखता। छोटे दर्जेमें वह किसी लड़केको डिक्टेशन बोलनेके लिए दे देता, लड़के लिखने लगते और वह आँख मूँदकर कल्पना-संसारमें डूबने-उतराने लगता। ऊँचे दर्जोंमें लड़के गोगल या पुश्किनके गद्य जोरसे पढ़ते तो भी वह ऊँघने लगता और उसकी आँखोंके सामने तरह-तरहके चित्र उपस्थित होते और वह कह उठता—सुन्दर! मानो ग्रन्थकारकी रचनाकी वह प्रशंसा कर रहा हो।

माशा प्रतिदिन उसके लिए जलपान भेज दिया करती थी। वह धीरे-धीरे स्वाद लेकर जलपान करता जिससे वह देरतक उसका आनन्द लेता रहे। उसका दोस्त इपोलिट उसके बगलमें बैठकर अपनी सूखी रोटी चबाता और आदरसे कहता—अन्नमें ही प्राण है।

स्कूलसे सीधे वह ट्यूशनपर चला जाता। वहाँसे उसे ६ बजे फुरसत मिलती। वह इस तरह व्याकुल होकर घरकी तरफ दौड़ पड़ता मानो वह सालोंसे बिछुड़ा हो। वह तेजीसे कमरेमें घुसता। माशाको हृदयसे लगाकर चूमता और उसका चेहरा मलिन देखकर व्यग्र हो उठता। दोनों साथ ही बैठकर भोजन करते। भोजनके बाद दोनों प्रेमालाप करते।

रविवार और छुट्टीके दिन तो वह घरसे बाहर कदम भी नहीं रखता था। छुट्टीके दिन वह माशाके काममें हाथ बँटाता। माशाने सुदक्ष गृहिणीकी तरह गृहस्थीको खूब सँवार लिया था। उसके पास तीन गाएँ थीं। उनके दूधसे वह अपने गृहस्थीकी सारी आवश्यकता पूरी करती थी। खाने-पीनेपर उसने पूरी निगरानी कर रखी थी। कभी-कभी मजाकमें दोपहरको निकिटिन उससे दूध मांग बैठता, माशा अस्तव्यस्त हो जाती क्योंकि दोपहरको दूध पीनेका नियम नहीं था। निकिटिन उसे अपनी ओर खींचकर गलेसे लगा लेता और कहता—मैं हँसी कर रहा था, दूध मुझे नहीं चाहिये।

कभी-कभी भण्डरियामें पनीर या अचारका पुराना सूखा टुकड़ा बचा मिलता तो वह गंभीर होकर कहती—इसे हमलोग भोजनके वक्त खायेंगे।

इसपर निकिटिन कहता—इस तरहके टुकड़े तो चूहा फँसानेके काममें आ सकते हैं।"

इसपर वह उत्तर देती—पुरुष गृहस्थी चलाना क्या जानें। नौकरोंके लिए एक ही बात है चाहे पावभर सामान चौकामें भेज दे या सेरभर।

निकिटिन कायल हो जाता और उसे छातीसे लगा लेता। उसकी हरएक बात निकिटिनको असाधारण प्रतीत होती।

कभी-कभी वह दार्शनिक बन जाता और गूढ़ विषयोंकी चर्चा करने लगा। माशा चकित होकर उसका मुँह निहारा करती।

अपने हाथोंसे उसका केश-पाश सँवारते हुए उसने कहा—प्राणेश्वरी! तुम्हें पाकर मेरा जीवन सार्थक है। लेकिन इस सुखको मैं आकस्मिक घटना नहीं मानता। इसे प्राप्त करनेके लिए मैंने यत्न किया और पाया। मनुष्य अपने आपका स्वयं निर्माता है। मैंने अपने बाहु-बलसे जो कुछ कमाया है उसीका उपयोग मैं कर रहा हूँ। यह स्वीकार करते हुए मुझे संकोच नहीं होता कि मैंने इसे अर्जित किया है और मैं इसका उपभोग करनेका हकदार हूँ। मेरा अतीत तुमसे छिपा नहीं है। मैं निराश्रय था, अनाथ था, निर्धन था! मैं इन कठिनाइयोंसे लड़ा और सुखका मार्ग खोज निकाला।

अक्टूबरमें स्कूलको गहरा धक्का लगा। इपोलिट बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गयी। दो दिन पहलेसे वह बेहोश था और बकझक करता था। बेहोशीमें भी वह वही बातें बकता जो सभी जानते-बूझते थे—वोल्गा कैस्पियन समुद्रमें गिरती है। घोड़े सूखी घास और जई खाते हैं।

उसके अन्तिम संस्कारके दिन स्कूल बन्द कर दिया गया। सभी शिक्षक और छात्र उसकी अर्थीके साथ गये। रास्तेमें जिन लोगोंने उसके शवको देखा, गर्दन झुका दी।

मुर्दनीसे वापस आकर निकिटिन अपनी डायरी लेकर बैठ गया और लिखा—"अभी हमलोगोंने इपोलिटको दफनाया है। ईश्वर उसकी आत्माको शान्ति दे। माशा, वेरिया तथा अन्य महिलाएँ हृदयसे रो रही थीं क्योंकि सभी जानती थीं कि इस गरीबको किसी रमणीका प्यार प्राप्त नहीं हो सका था। मैं कब्रपर उसकी प्रशंसामें दो शब्द कहना चाहता था लेकिन मुझे लोगोंने मना कर दिया क्योंकि स्कूलके अधिकारी-वर्ग उससे खुश नहीं रहते थे। शादीके बाद आज पहले-पहल मेरे दिलको ठेस लगी है।"

उस साल उल्लेख करने योग्य कोई घटना नहीं हुई।

इस साल जाड़ा हलका था। बर्फ साधारण गिरी। कुहरेका कहीं नामो-निशा

नहीं था। हवामें तीखापन नहीं था तो भी पुलिस नदीमें किसीको हलने नहीं देती थी क्योंकि उनकी समझमें पानी जम रहा था। निकिटिनको इस जाड़ेमें भी गरमी-का आनन्द मिल रहा था, उसे आनन्दका दूसरा साधन भी मिल गया। उसने विण्ट खेलना सीख लिया। बस एक ही चीजसे वह खिन्न था। वही उसके सुखमें बाधक हो रही थी। उसकी पत्नी अपने साथ कुत्तों और बिल्लियोंका झुण्ड लेती आयी थी। सवेरे कमरोंसे बदबू आया करती थी। कुत्ते बिल्लियोंमें अकसर झड़प हो जाया करती थी। मुश्काको दिनभरमें दस बार भोजन देना पड़ता था। इतनेपर भी वह निकिटिनको देखकर गुर्राने लगता था।

एक दिन वह क्लबसे तास खेलकर घर वापस आ रहा था। रात अँधेरी थी, पानी बरस रहा था। सड़क कीचड़से लथपथ हो रही थी। उसका हृदय किसी अज्ञात कारणसे क्षुब्ध था। इसके दो कारण हो सकते थे। एक तो उस दिन वह बारह रोबुल हार गया था और दूसरे लेनदेनका हिसाब करते समय उसके एक साथीने ताना देकर कहा था कि निकिटिनके पास अब पैसेकी कमी नहीं हो सकती अर्थात् उसकी पत्नी काफी रुपये लेकर आयी है। उसे हारनेका दुःख नहीं हो सकता था और जो कुछ उसके साथीने कहा था उसमें भी नाराज होनेकी कोई बात नहीं थी तो भी वह क्षुब्ध था और उसे घर लौटनेकी इच्छा नहीं हो रही थी।

सड़ककी लालटेनके नीचे खड़ा होकर उसने कहा---कैसा अनर्थ है।

उसने अपने मनमें कहा—"बारह रोबुल हार जानेका मुझे कोई सदमा नहीं हो सकता क्योंकि यह कोई बड़ी रकम नहीं है। यदि मैं मजूर होता तो मुझे एक-एक पैसेकी चिन्ता करनी पड़ती और इस तरह जूआ खेलने नहीं जाता। लेकिन इतनी रकम मुझे मुफ्त मिल गयी है। इसका मेरे लिये उतना ही उपयोग है जितना स्वस्थ मनुष्यके लिए दवाका। यदि अधिकांश लोगोंकी तरह मुझे रोटीकी चिन्ता होती, यदि जीवित रहनेके लिए संघर्ष करना पड़ता, यदि दिनरात जी तोड़कर परिश्रम करना पड़ता और तब रोटी, शान्त घर और सुखद गृहस्थीकी मुझे चिन्ता होती।"

वह व्याकुल हो उठा क्योंकि इस तरहके विचार कभी सुखद नहीं हो सकते थे।

जब वह घर पहुँचा तो माशा सो रही थी। उसके चेहरेपर मुस्कुराहटकी हल्की रेखा विराजमान थी। उसके बगलमें उसकी सफेद बिल्ली दबकी पड़ी थी। निकिटिनने रोशनी जलायी तो वह उठ गयी और एक ग्लास पानी पिया। उसने हँसकर कहा—मैंने आज बहुत मिठाइयाँ खा लीं। क्या तुम पिताजीके यहाँ भी गये थे?

निकिटिनने रुखाईसे कहा—नहीं।

पोलिंस्की, जिसपर वेरियाकी सारी आशा अवलंबित थी, की बदली कहीं अन्यत्र हो रही थी। इसलिए शेलेस्टोव भवनमें उदासी छायी थी।

माशाने कहा—आज बहन यहाँ आयी थीं। उन्होंने कुछ कहा नहीं, लेकिन उनका चेहरा उतरा हुआ था। मुझे पोलिंस्कीसे घृणा होने लगी है। वह मोटा और भद्दा है। उसके गाल गुलगुलाकी तरह फूले हैं। मैं तो उसे कभी भी पसन्द न करती। पर मैं उसे भलेमानस समझती थी।

निकिटिन—लेकिन उसकी भलमनसाहतमें क्या फर्क पड़ा?

"तब उसने मेरी बहनके साथ ऐसा दुर्व्यवहार क्यों किया?"

"दुर्व्यवहार कैसा?" बिल्ली अपनी देह तोड़ रही थी। निकिटिनको उसपर क्रोध आ रहा था। "जहाँतक मुझे मालूम है न तो उन्होंने शादीका कभी प्रस्ताव ही किया और न कोई वचन दिया।"

"तब वह उस घरमें क्यों आता जाता था। यदि विवाह नहीं करना था तो उसे इस तरह हेल-मेल नहीं बढ़ाना चाहिये था।

निकिटिनने रोशनी बुझा दी और पलंगपर लेट गया। लेकिन उसे सोनेकी इच्छा नहीं हो रही थी। उसका दिमाग एकदम खाली हो रहा था और कई विचार उसके दिमागमें चक्कर मार रहे थे। वह सोचने लगा—यह संसार जिसमें वह अपनी पत्नीके साथ सुखसे जिन्दगी बिता रहा है, इससे अलग एक दूसरी दुनिया भी है। उसी दुनियामें विचरण करनेकी उसे लालसा होने लगी।

क्या ही अच्छा होता यदि मैं किसी कारखानेमें काम करता होता, तब मैं मजूरों-की भरी सभामें भाषण देता, मजूरोंको उत्साहित करनेके लिए लेख लिखता और उनके लिए हर तरहका संकट सहता······वह कुछ ऐसा चाहता था जिसमें लग जानेसे वह अपनेको भूल जाता, अपने व्यक्तिगत सुखकी चिन्ताको छोड़ देता जिसमें उसे केवल आत्मतुष्टि ही प्राप्त होती। उसी समय उसके सामने शेवलिनका सफाचट चेहरा आकर खड़ा हो जाता मानो वह मुँह बनाकर उससे कह रहा हो—तुमने लेसिंगकी रचनातक नहीं पढ़ी है। तुम समयसे बहुत पीछे हो। तुम शिक्षक कैसे बन गये?

माशाने उठकर फिर पानी पिया। उसने उसके अंग-प्रत्यंगकी ओर देखा। उसे ब्रिगेडियर जेनरलके शब्द याद आ गये। वह मन-ही-मन हँस पड़ा।

उसकी हँसीका उत्तर चारपाईके नीचेसे मुश्काने गुर्राकर दिया।

उसका दिल क्रोधसे अभिभूत हो गया। वह मुश्काको भला-बुरा कहकर पीट देना भी चाहता था। उसका दिल धड़कने लगा।

उसने अपनेको सँभाला और कहा—चूँकि मैं तुम्हारे घर आता जाता हूँ इसलिए तुमसे विवाह करना मेरा कर्तव्य हो जाता है।

माशा—अवश्य! इसे तुम खूब समझते हो।

"बहुत खूब!" एक मिनट बाद उसने फिर यही दोहराया—

"बहुत खूब!"

अपने दिलकी धड़कनको मिटानेके लिए तथा बतबढ़ाव रोकनेके लिए वह वहाँसे उठकर अपने पढ़नेके कमरेमें चला गया और बिना तकियाके ही सोफापर लेट गया। थोड़ी देरके बाद वह फर्शपर पड़ गया।

अपनेको सान्त्वना देनेके लिए उसने कहा—ये बातें कैसी बेहूदी हैं। मैं शिक्षक हूँ। मेरा पेशा कितना ऊँचा है। मुझे किसी दूसरी दुनियाकी क्या जरूरत है। क्या ही बेवकूफीकी बातें हैं।······

लेकिन क्षणभर बाद ही उसने फिर दृढ़तासे कहा—क्या सचमुच मैं ईमान-दार शिक्षक हूँ। मैं मामूली सरकारी नौकर हूँ। ठीक उसी जेककी तरह जो ग्रीक

पढ़ाता है। शिक्षण मेरा धंधा नहीं हो सकता था और मैंने शिक्षक होनेकी शिक्षा नहीं प्राप्त की। इस काममें मुझे रुचि भी नहीं। मुझे छात्रोंके साथ व्यवहार करना भी नहीं आता। जो कुछ मैं पढ़ता हूँ उसका महत्त्व मुझे खुद नहीं मालूम होता। शायद मैं सही-सही बातें पढ़ाता भी नहीं। बेचारा इपोलिट बेवकूफ था तो क्या। सारे छात्र और अधिकारी-वर्ग उसकी योग्यता जानते तो थे। उससे ज्यादाकी उससे आशा नहीं कर सकते थे। लेकिन मैं तो ठीक उस जेककी तरह अपनी असलियतपर परदा डाले हुआ हूँ और सबको ठगता रहता हूँ क्योंकि मेरी पढ़ाईकी बड़ी प्रशंसा है और मैं सफल शिक्षक समझा जाता हूँ। ये विचार उसे डराने लगे। लेकिन दूसरे ही क्षण उसने उन्हें अपनेसे दूर हटाया। उसने अपने मनमें कहा—मेरी मानसिक दुर्बलताके कारण ये बेसिर पैरकी बातें मेरे मनमें उठ रही हैं।

दूसरे दिन सुबह रातकी बातें यादकर वह अपने ऊपर आप ही हँसने लगा। पर जो हो उसके मनकी शान्ति गायब हो गयी थी और उस मकानमें उसके लिए शान्तिका दर्शन होना असंभवसा प्रतीत हुआ। उसने देखा कि उसकी कल्पनाने उसे चारों ओरसे घेर लिया है और अशान्तिका प्रवेश उसके जीवनमें हो रहा है जिसकी भँवरमें पड़कर शान्ति और सुख डूब जायँगे।

रविवारके दिन स्कूलके प्रार्थना-गृहमें उसकी भेंट उसके सहशिक्षकों तथा डायरेक्टरोंसे हुई। उसने देखा कि सभीके जीवनमें अशान्ति और असन्तोष है लेकिन सभी उसे छिपानेमें व्यस्त हैं। वह अपनी अशान्ति और असन्तोषको छिपानेके लिए हँसने लगा और इधर-उधरकी बातें करने लगा। वहाँसे वह रेलवे स्टेशन गया और घंटोंतक गाड़ियोंका आना-जाना देखता रहा। यह एकान्त उसे बहुत ही सुखद प्रतीत हुआ।

घर वापस आनेपर उसकी भेंट वेरिया और उसके ससुरसे हुई जो भोजन करने आये थे। रोनेसे वेरियाकी आँखें लाल हो रही थीं और उसके सिरमें दर्द हो रहा था। शेलेस्टोवने डटकर भोजन किया। वे बराबर नौजवानोंकी शिकायत कर कहते जाते थे कि वे विश्वसनीय नहीं रहे और भद्रताका उनसे साथ छूटता

जा रहा है। उन्होंने कहा—"उसकी हरकतें बेहूदगीसे भरी हैं। मैं उसके मुँह-पर यह कह दूँगा।"

उनकी बातें सुनकर निकिटिन बराबर मुस्कुराता रहा। भोजनके बाद वह अपने पढ़नेके कमरेमें चला गया और भीतरसे दरवाजा बन्द कर लिया।

मार्चका महीना बीत रहा था। सूर्य अपनी प्रखर किरणें चारों ओर बिखेर रहा था। चारों ओर चहलपहल थी। यही समय था माशा उसके पास आती उसके गलेसे लिपट जाती और कहती कि घोड़ेकस तैयार हैं या गाड़ी जुती है और पूछती कि तुम कौनसा कपड़ा पहनोगे ताकि सर्दी न लग जाय। गत वर्षकी तरह इस साल भी बसन्त उसी धूमधामसे चढ़ाई कर रहा था। वही आनन्द और वही उत्साह वह चारों ओर बिखेर रहा था। लेकिन निकिटिन-को यह आनन्द शूलकी तरह चुभ रहा था। वह छुट्टी लेकर मास्कोमें जाकर अपने पुराने मकानमें कुछ दिन रहना चाहता था। बगलके कमरेमें पिता-पुत्री बैठकर पोलिस्कीकी आलोचना कर रहे थे। लेकिन उनकी बातें अनसुनी करके उसने अपनी डायरीके पन्ने खोले और लिखा—दयामय! मैं कहाँ हूँ। मेरे चारों ओर बेहूदगीका राज्य है। मैं तुच्छ लोगोंसे घिरा हूँ जिन्हें भोग-विलास और पकवानों तथा रमणियोंके सिवा और किसी बातकी चिन्ता नहीं है। मैं इस जीवनसे निराश हो गया हूँ। इस बेहूदगीसे बढ़कर कष्टकर और कुछ नहीं हो सकता। मुझे आज ही इनसे अपना पिण्ड छुड़ाना चाहिये नहीं तो मैं पागल हो जाऊँगा।"

सोहाग-रात

शादीके एक दिन पहले वर-वधू वरकी माताको प्रणाम करने गये। उसके पतिको मरे कई साल हो गये थे। तबसे वह वैधव्यका जीवन बिता रही थी। यही उसका सबसे छोटा पुत्र था। विवाहकी रस्म पूरी होनेके बाद ही पति-पत्नी हनीमून मनानेके लिये विदेश चल देना चाहते थे। इसलिए अन्तिम बार आशीर्वाद देनेके लिए उसने दोनोंको बुलाया था।

बरबधू आकर माँके पास बैठ गये। वह चुपचाप उनका मुँह निहारती रही। उसे वे दिन याद आ गये जब वह अपने विवाहकी तैयारी कर रही थी। उसके चेहरेका रंग बतला रहा था कि वह अपने मनमें सोच रही है—"मैं यह जीवन बिता चुकी हूँ। मेरे लिए यह नया अनुभव नहीं है।" वह अपने वैवाहिक जीवनकी बातें सोच रही थी।

बूढ़ीका इस तरह बीचमें टपक पड़ना वरबहूको अच्छा नहीं लगा। यह आनन्द उनका अपना था और वे नहीं चाहते थे कि इसमें कोई हिस्सा बटानेवाला हो। बूढ़ीका अपने अतीत जीवनसे इसकी तुलना करना उन्हें और भी भद्दा लगा क्योंकि उनकी कल्पनाके अनुसार उसमें इतना रस और माधुर्य नहीं ही रहा होगा। वे अपनी यात्राके बारेमें बातें करते रहे कि किस तरह वे लोग स्विट्जरलैण्ड जायँगे और वहाँसे इटलकी सैर करेंगे। उनकी बातें इस तरहसे हो रही थीं मानो वे लोग सब कुछ तै कर चुके थे और बीचमें रोककर किसी अन्य रमणीक स्थानपर जानेके लिए उनसे कुछ कहना बेकार था।

बूढ़ीने इस बातको स्पष्ट लक्ष्य किया तो भी उसने उसपर ध्यान नहीं दिया। युवकोंकी उच्छृंखलताका उसे परिचय था और वह उससे क्षुब्ध होने

वाली नहीं थी। उनकी जबानसे एक जगहका नाम न सुनकर उसे क्षोभ हुआ इसलिए दबी जबान उसने उसका जिक्र कर देना चाहा। बोली—"यदि रास्तेमें तुम्हें एंगेडाइन प्रदेशका बीवर्स नगर मिले तो······"

उसकी बात पूरी भी नहीं होने पायी थी कि उसका बेटा बोल उठा—"लेकिन माँ, हमलोग तो उस तरफ जायँगे ही नहीं।"

"मुझे अचरज मालूम हो रहा है क्योंकि वह जगह बहुत ही रमणीक है। तुम वहाँ जाते तो वीजन रोज लीके लोगोंसे मेरा नमस्कार कह देते।"

इसपर वधू बोल उठे—"क्या ही सुन्दर नाम है।"

माँ—लेकिन जैसा तुमलोग सोचते होगे इसके मतलब 'छोटे सफेद गुलाब' नहीं हैं। बल्कि, 'छोटा सफेद घोड़ा।' एंगडाइनके लोग इस तरहके नाम साधारणतः नहीं रखा करते। यह नाम जर्मनी और स्विट्जरलैण्डवालोंका दिया हुआ है। अगर तुमलोग वहाँ जाओगे तो तुम्हें······

वे लोग बीचमें ही बोल उठे—पर हमलोगोंको वहाँ जाना ही नहीं है।

बूढ़ीको वेदना हुई। लेकिन अपने मनके भावको छिपाकर वह उनकी बातें सुनने लगी। स्वयं और कुछ कहनेकी उसे इच्छा नहीं रही। बिना रोकटोक उन्हें जो कुछ कहना था कह गये और विदा लेकर चले गये।

उनके चले जानेके बाद बूढ़ीका चेहरा फिर उदास हो गया और पुराने ख्याल उसके मनमें हलचल मचाने लगे। उस भावनाके साथ एक छोटी कहानी थी जो उसके जीवनकी सबसे बड़ी घटना थी। यदि इस समय उसे उस घटनाका वर्णन करना पड़ा होता तो वह बड़े संक्षेपमें कह गयी होती लेकिन जब मनकी बात मनमें ही रह गयी तो उसने अपना पूर्ण विस्तृत रूप धारण कर लिया।

१८८० के लगभग उसकी शादी हुई थी। अपने पतिके साथ वह हनी-मून मनाने निकली थी। अलपुला घाटीसे होकर पति-पत्नी बीवर्स पहुँचे थे। गर्मीमें भी रास्ता बर्फसे ढँका था। वे लोग ६ घोड़ेकी गाड़ीपर सवार थे। आगे-आगे बिगुल बजानेवाला सवार था। गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। वे लोग गाड़ीसे उतरकर टहलने और एक दूसरेपर बर्फ फेंकने लगे। सूर्यकी रोशनी

इतनी तेज थी कि बर्फमें शीतलता नहीं रह गयी थी। इस तरह बर्फमें खेलनेमें इन्हें बड़ा मजा मिल रहा था।

रातको उन लोगोंने एक मठमें भोजन किया और अपनी मस्तीमें उन लोगोंने मेजमानको बहुत चिढ़ाया। वहीं उन लोगोंने पहले-पह ल'बीजन रोज ली'-का नाम सुना।

उन लोगोंने कहा——तब हमलोगोंको वहाँ जानेके लिए गुलाबके रंगके घोड़े भी चाहिए। हमलोग दूसरे रंगके घोड़ेपर वहाँ नहीं जायँगे। उन्हें उसी रंगका घोड़ा मिल भी गया क्योंकि उस दिन किसी वस्तुपर दूसरा कोई रँग था ही नहीं।

वह स्थान अतिशय रमणीक था। मेजमानने उन्हें अपने घरका सबसे उत्तम कमरा दिया। कमरा लंबा-चौड़ा था। कमरेमें नीचेसे ऊपरतक कामदार लकड़ियाँ जड़ी थीं। सूर्यकी किरणें जब उनपर पड़ती थीं तो वे चमक उठती थीं। एक तरफ पिज मुरे गल और पिज लंगायीकी बर्फसे ढँकी नीली चोटियाँ दिखाई देती थीं और दूसरी तरफ उनकी घाटी थी जिसकी निर्मल धाराके दोनों तरफ फलसे लदे पेड़ इस तरह झुके थे मानों उसकी अभ्यर्थना कर रहे हों। कामदार लकड़ियोंको छोड़कर समूचा मकान सफेद चूनेसे पुता हुआ था। वह दूधके समान स्वच्छ और निर्मल था।

वे लोग वहाँ कई दिनतक रहे। दिनभर चारों ओर घूमते-फिरते थे लेकिन क्लान्ति या थकानका कहीं नाम नहीं था बल्कि जब कभी वे पहाड़ोंपर चढ़ जाते तो शरीरमें नयी स्फूर्ति पैदा हो जाती और आनन्दकी मस्तीमें वे झूम उठते। एक दिन वे लोग नदीके उस पारके पहाड़की सैर करने गये। ऊपर चढ़नेपर उन्हें एक घाटी दो पहाड़ोंके बीचमें बहुत नीचे दिखाई पड़ी। वह एक नयी ही दुनिया थी। उसके झरने चमक रहे थे। हरी-भरी घास ऐसी सोहावनी मालूम होती थी मानों अभी किसीने उन्हें छूयातक नहीं है। विधाता-की इस नयी सृष्टिपर कालका प्रभाव नहीं पड़ा था। वे लोग देरतक उसे निहा-

रते रहे। उन लोगोंने वहाँ पहुँचना भी चाहा पर उतराई असंभव थी। उसको याद वे कभी भी नहीं भूल सके।

प्रकृतिकी रमणीयताके सुन्दर-से-सुन्दर दृश्योंका आनन्द लेते समय भी कभी-कभी उनके हृदयमें ऐसे भाव उठते जो स्वप्नकी तरह आते-जाते रहते हैं। इस तरहके भाव जब कभी उठते जिससे उनके अतीतकी याद जागकर प्रत्यक्ष हो उठती तो वे और भी प्रसन्न हो उठते क्योंकि उनके चारों ओरकी वास्तविकता और भी स्पष्ट हो जाती। जब वे पहले-पहल पलूड मार्काकी सैर करने गये तो पत्नीके हृदयमें यही भाव उठा था। घाटीके दोनों तरफ पाइनका जंगल था, बीच-बीचमें जमीनका एक टुकड़ा था, उस टुकड़ेमें जगह-जगह दलदल था। उसे देखकर उन्हें अपने घरकी याद आ गयी। और जब उन्होंने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और क्रेस्टामीराको देखा तो उन्हें मालूम हुआ कि यह ग्रेनाइट है। उस पहाड़को उन लोगोंने पहले-पहल देखा था। उसका नाम भी उन्होंने पहलेपहल सुना था, लेकिन उसके पत्थरोंमें तथा वहाँके दृश्योंमें इतना अपनापन न था कि वे दोबारा वहाँकी सैर करने जाते। यदि वे अपने भावको शब्दोंमें अंकित करना चाहते तो वे यही कहते---तुम, मैं तथा यह आनन्द तीनों वास्तविक हैं और यहाँकी भाँति हमलोग अपने घरपर भी यही आनन्दकी जिन्दगी बितायेंगे।

एक दिन वे लोग मौराज मुरैगल पहाड़पर चढ़ गये। वहाँसे उतरकर वे लोग पलूद मार्का जानेकी कोशिश करने लगे। पहाड़की चोटीपर उन्होंने खरगोशोंको चट्टानोंपर कूदते देखा। इन लोगोंको देखते ही वे चें-चें करके अपने बिलोंमें घुस गये। आगे बढ़े तो इन्हें बकरियोंका एक झुण्ड मिला। चरवाहा आग जलाकर ताप रहा था। उन लोगोंने उससे बातें कीं। चरवाहा अचम्भेके साथ उन्हें देखने लगा। बकरियाँ भी चौकन्नी होकर इन्हें निहारने लगीं। दोनोंकी आँखोंमें विस्मय था। प्राकृतिक जीवनका यह एक सुन्दर दृश्य था। उन्होंने चरवाहेको एक रुपया दिया। वह खुश होकर इन्हें आशीष देने लगा। उसकी खुशी बढ़ानेके लिए इन लोगोंने उसे एक रुपया और दिया। आगे

चढ़नेपर उन्हें रास्तेसे नीचे आल्प्स परके गुलाब फूलते हुए दिखाई पड़े। पत्नी मारे प्रसन्नताके उछल पड़ी और एक फूल लेना चाहा। लेकिन रास्ता इतना ढालू था कि पत्नीके लिए फूल तोड़ना असंभव था। इसलिए पति फूल तोड़नेके लिए आगे बढ़े। एक हाथसे उन्होंने अपनी पत्नीका हाथ पकड़ा और दूसरे हाथसे एक-एक फूल तोड़कर उन्हें देने लगे। एकाएक पति ठोकर खाकर सरक गया। पर चट दूसरे हाथसे गुलाबकी एक झाड़ी पकड़ी। उन्होंने गंभीर होकर धीमे स्वरसे कहा—"डरना नहीं। मेरा पैर बेठिकाने पड़ गया है। मैं लड़-खड़ा रहा हूं। पर कदम उठाते डर लगता है। यदि मैं इस पेड़को छोड़ दूं तो दूसरा पकड़ सकूंगा या नहीं, इसमें सन्देह है।" क्षणभरमें पत्नीने सारी स्थितिको समझ लिया और अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया। संकट साधारण नहीं था। यदि उसका पैर वहाँसे उखड़ता है तो नीचे वे कहाँ जाकर अटकेंगे इसका अन्दाज नहीं किया जा सकता था। उसने कहा—वहीं खड़े रहो, मैं शीघ्र ही.........

उसने अपना दुशाला उतारा और उसे रस्सीकी तरह लपेट डाला। पास ही पाइनके अनेक छोटे छोटे पेड़ थे। उसने फौरन सबसे मजबूत पेड़में दुशालेका एक छोर बाँधा और दूसरा छोर अपनी कलाईमें बाँधकर झुक गयी। उसने अपना हाथ फैलाकर कहा—मेरा हाथ पकड़कर पैर जमा लो।"

"मेरा पैर उखड़ा हुआ है। सारा बोझ तुमपर आ जायगा।"

"जैसा मैं कहती हूँ, वैसा चटपट करो। मेरा हाथ कसकर पकड़ लो। इस झाड़ीको छोड़कर दूसरी जगह पैर जमा लो। दाहिनी ओर एक मजबूत पेड़ है। मेरा हाथ पकड़कर तुम वहाँतक पहुँच सकते हो। फिर धीरे धीरे मेरा सहारा लेकर ऊपर चढ़ आओ।

पत्नीका चेहरा पीला पड़ गया था। पतिने उसकी ओर देखकर मुस्कुरा-दिया। उसकी सूझकी वह मन ही मन प्रशंसा करने लगा। कहा—"सारी बातें तुम्हारे दिमागमें इतनी जल्दी आ गयीं। मैंने भी यही सोचा था और भी कई

बातें मनमें आयी थीं। लेकिन यदि मैं अपना एक सहारा छोड़ देता हूँ और दूसरा टूट जाता है तो मेरा सारा बोझ तुमपर आ जायगा।

"कोई हर्ज नहीं, मैं सारा बोझ सम्हाल लूँगी।"

"लेकिन यदि दुशाला फट गया या पेड़ उखड़ गया तब?"

"व्यर्थके तर्कसे कोई लाभ नहीं। मेरा हाथ पकड़ो।"

"मैं तुम्हें भी अपने साथ नीचे खींच लाना नहीं चाहता।"

"यदि ऐसा ही होना है तो हो! मैं अकेली जाकर क्या करूँगी।"

इतना कहकर वह मुस्कुराने लगी। उसकी हँसीमें अनुराग था, उसका चेहरा चमक रहा था। उसने अपने मनमें कहा—यदि मरना ही है तो हम दोनों साथ ही क्यों न मरें। अब तो भयकी कोई बात नहीं रही। उसकी भी चिन्ता मिट जाती है।

उसने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया और जैसा उसने कहा था, वैसा ही किया। उसका पैर दूसरी झाड़ीपर पहुँच गया और खतरा दूर हो गया। उसके बाद वह धीरे-धीरे ऊपर चढ़ गया। दोनों पसीनेसे लथपथ होकर आमने-सामने बैठ गये और एक दूसरेका चेहरा देखने लगे। यह कहना सम्भव नहीं है कि वे श्रमकी बूँद थे या हर्षातिरेकके जो ऐसे अवसरोंपर बहुधा हुआ करता है। लेकिन क्षणभरमें वे हरे-भरे हो गये। एक दूसरेने कसकर चूमा और प्रेमालाप करने लगे।

संकट आया और चला गया। उसकी याद भी उस समय उन्हें नहीं रही; लेकिन उस संकटने उनके प्रेमको एक नया रूप दे दिया था। उनके हृदयमें कोमल भावनाओंका जो स्रोत बह रहा था उनमें स्नान कर उनका प्रेम निखर गया। दोनोंके हृदय एक ही भावसे इस प्रकार उच्छ्वसित हो रहे थे मानों दोनों शरीरमें एक ही प्राण साँस ले रहा था।

रास्तेमें वे रह-रहकर एक दूसरेसे सट जाते थे और उस हर क्षणमें प्रेमके एक नये झोंकेका वे अनुभव करते थे। यद्यपि बीच-बीचमें दूसरी भावनाएँ भी अपना काम करती जाती थीं।

पत्नीके विचार दूरतक नहीं जाते थे। वह रह-रहकर सोचती—मैं इससे भी ज्यादा सुख किस तरह पा सकती थी? वह इसका उत्तर पानेके लिए बेचैन हो उठती। लेकिन उसने जो कुछ किया था, उसीमें उसका उत्तर ढूँढ़नेका प्रयास वह कभी भी नहीं करती थी। उसे वह इतनी साधारण और मामूली बात समझती थी कि उसे याद रखना भी उसके लिए सम्भव नहीं था, इतना बड़ा उत्तर उसमें खोजना तो असम्भव था। यही उसके लिए बहुत था कि पतिका प्रगाढ़ प्रेम उसे मिल रहा था।

लेकिन क्या पति उस घटनाको कभी भी भूल सकता था। सारा दृश्य उसकी आँखोंके सामने नाच रहा था और उसके प्रत्येक शब्द उसके कानोंमें गूँज रहे थे। ऐसी पत्नी पाकर उसने अपना जीवन धन्य समझा और मन-ही-मन उसकी सराहना करने लगा। उससे पहले उसने उसका मूल्य नहीं समझा था। अब-तक तो वह केवल उसके रूपपर मुग्ध था और उसीसे आकृष्ट होकर उसने विवाह किया था मानो वह इसीके लिए पैदा हुई थी। उसे अपने अंकमें पाकर वह बेहद खुश था। उसने उसे भाग्यकी सबसे बड़ी देन समझा। लेकिन उसकी असली क़ीमत तो उसे उस दिन मालूम हुई जब उसका अन्त प्रायः निकट था। उसकी चमकती आँखें, और साहस-भरे कोमल शब्दोंमें उसे अनन्तकी वह झलक मिली जहाँ आत्माको अपनी सत्ताका यह बोध होता है कि वह अन्धकारसे कुछ भिन्न है। उसके मधुर प्रेममें पहले भी उसे इसका अनुभव हुआ था लेकिन उस दिन तो उसे उसका प्रत्यक्ष दर्शन ही हो गया। उस दिन उसने जाना कि पति-पत्नीका सम्बन्ध कैसा अटूट होता है।

जब वे लोग होटलमें वापस लौटे तो लोगोंने उनमें असाधारण भाव लक्ष्य किये। लोगोंका ख्याल बदलनेके लिए उन लोगोंने अपने हृदयके असली भावको छिपा रखना उचित समझा यद्यपि यह कठिन काम था। यह तो जानकर अनजान बननेके समान था, या जिस देशमें कोई कायदा-कानून न चलता हो वहाँ कायदेकी पाबन्दी करनेके समान था। लेकिन जब वे लोग एकान्तमें रहते तो उसी सुखका परिचय देते जो गुलाबकी झाड़ीके पास उस

ढालू चोटीपर उन्हें प्राप्त हुआ था। पुराना हो जानेपर भी उसमें नूतनता थी। क्योंकि प्रेम कभी पुराना होता ही नहीं, प्रीति तो क्षण-क्षण नयी होती रहती है।

खिड़कीसे होकर सूर्यकी किरणें कमरेमें झाँकने लगीं। पति उठ बैठा। खिड़कीको अच्छी तरह खोल दिया। प्रातःकालीन मन्द शीतल अनिल फूलोंकी सुरभिको बटोर-बटोरकर कमरेमें बिखेरने लगा और वह आनन्दसे उनका मजा लूटने लगा। खिड़कीके सामने फूलोंका जंगल था। फूलोंपर ओसकी बूँदें मोतीके दानोंके समान झलकती थीं। प्रातःकालीन सूर्यकी सुनहली किरणें उनके सौन्दर्यको द्विगुणित कर रही थीं। सामनेका नीला पहाड़ भी चाँदीकी चद्दर ओढ़कर खड़ा था। सारे दृश्यने विचित्र नूतन रूप धारण कर लिया था। यह प्रदेश निर्जन नहीं था। यहाँ लोग बसते थे तो भी सारा दृश्य इतना मधुर और कोमल था मानो अभीतक इनपर मनुष्यकी परछाईं नहीं पड़ी है, ठीक उस घाटीके समान जिसका दर्शन उन्हें उस दिन पहाड़परसे हुआ था। उसकी पत्नी अभीतक सो रही थी। वह उसे अपने बगलमें खड़ी देखनेके लिए उत्कण्ठित था तो भी वह उसकी नींदमें बाधा देना नहीं चाहता था। वह एकाग्रमनसे सोच रहा था—ऐसा सुखमय जीवन मैंने कभी भी नहीं बिताया है।

उसकी नजर खिड़कीके बगलवाली दीवारपर पड़ी। उसपर कुछ लिखा था। जो स्थान यात्रियोंके चित्तको अधिक आकृष्ट करते हैं वहाँ वे लोग बहुधा इसी तरह दीवारोंपर कुछ लिख दिया करते हैं। इस तरह साफ-सुथरी जगहोंके खराब होनेसे लोग उसी तरह भिनभिना उठते हैं जिस तरह मक्खीके बैठनेसे। वह उन्हें पढ़ने लगा। लिखावटका कहीं अन्त नहीं था। दूरतक यह सिलसिला चला गया था। सारी लिखावटमें उन नवदम्पतिके नामको जिन्होंने समय-समयपर अपने हनीमूनके प्रसंगमें यहाँकी सैर की थी। नामोंके नीचे तारीख भी थी। मानो अपनी सुखद यात्राका उन्होंने यहाँ याद छोड़ दी हो। कितने भोले थे वे, कितना रस उन्होंने लूटा था यहाँ। यही सोचता हुआ उसने अपनी

जेबसे पेंसिल निकाली और कामदार लकड़ीपर सुन्दर अक्षरोंमें लिख दिया। उसकी लिखावट सबसे अनोखी थी। उसके हृदयमें वह मुरलीकी ध्वनिकी तरह गूँज रही थी।

उसकी पत्नी पीछे खिलखिलाकर हँस रही थी। पूछा—तुम क्या कर रहे हो ?

उसकी कलई खुल गयी थी। वह शरमा गया। उसके मुँहसे निकल पड़ा—"ऊँह पागलपन कर रहा हूँ।" इसके बाद वह उसके पास गया और उसे उठाकर अपने साथ खिड़कीपर ले आया। उसने दीवारपर पतिकी परिचित लिखावटमें तीन मोहक शब्द लिखे देखे—

"मैं सुखी हूँ।"

वे शब्द, वह लिखावट उसके चित्तपर इस तरह गड़ गये कि एक युग-के बाद आज भी वह उन्हें उसी तरह स्पष्ट देख रही है और उनके साथ ही वे सारी घटनाएँ, सारे दृश्य आँखोंके सामने आकर खड़े हो गये और वह उन्हींके बीच डूबने-उतराने लगी।

लेकिन यदि कुछ उसके स्मृति-पटसे मिट गया था तो वह वही भाव था जो उसके मनमें उस समय उठा था और जिसे उस नाटकका प्रधान अंश कहना चाहिए था। क्या हुआ था, यह उसे याद था लेकिन वह कैसे हो गया उसकी क्षीण स्मृति मात्र ही उसे थी। यत्न करनेपर भी वह उस समयकी अपनी दशाकी याद नहीं कर सकती थी। इन चीजोंको सँजोकर रखनेके लिए स्मृतिके पास जगह नहीं, इस तरहके भाव उठते और विलीन होते रहते हैं। संकट दूर हो जानेके बाद वह उन भावोंको बटोरकर अपनेमें समेट सकती थी लेकिन उस घटनाके साथ ही जिस मधुर और कोमल भावका उदय हुआ जो एक हृदयसे दूसरे हृदयमें इस प्रकार बहने लगा कि कोई दूसरा भाव वहाँ नहीं ठहर सकता था। सुरतका आवेग चला गया लेकिन भावोंकी जो अमिट छाप हृदयपटपर पड़ी थी वह आज भी उसी तरह स्पष्ट थी। और उसके बगलमें

उसके वे तीनों शब्द—"मैं सुखी हूँ"—झलक रहे थे। उषाकी लालीमें जिनमें उसने अपने हृदयके सच्चे भावको भर दिया था।

वह अपने मनमें बहुधा सोचा करती, हमलोग जबतक साथ रहे उस सुखको कभी नहीं खोया यद्यपि वह सदा समान नहीं रहा। जीवनके स्रोतमें वह सदा एक समान रह भी नहीं सकता था। लेकिन उस क्षण वे लोग सुखकी चरम सीमापर पहुँच गये थे। वे लोग उसमें जीभर डुबकी लगा रहे थे। जीवनका प्रवाह उन्हें बहाकर जहाँ कहीं भी ले गया जबतक वे दोनों साथ रहे वे फिर सुखके उसी केन्द्र-बिन्दुपर पहुँच जाते थे। कम या बेश उसी सुखमें स्नान करने लगते थे।

(२)

कालकी गति विचित्र होती है। हम जो नहीं चाहते वह भी उसका चक्र हमसे करवा लेता है। ठीक यही हालत उसके पुत्र और पुत्रबधूकी हुई। इंगेडाइन उनकी यात्राके पथमें नहीं था। लेकिन वे इंगेडाइन पहुँच ही गये। घटना यों हुई। ईटालीमें हैजे का प्रकोप हुआ सरकारकी ओरसे हैजेका समाचार छिपाया गया। इसलिये चारों ओर अनावश्यक खबरें उड़ने लगीं। कोई कहता ईटालीके इस प्रदेशमें हैजा है, कोई कहता उस प्रदेशमें। जहाँ कभी भी हैजेका नाम नहीं सुना गया था वहाँसे भी हैजेके समाचार आने लगे। यात्रियोंका दल एक मार्ग छोड़कर दूसरे मार्गसे चला जहाँ हैजेकी खबर नहीं थी। वहाँ भी उन्हें यात्रियोंका एक दल मिला जिससे मालूम हुआ कि उधर भी हैजा है और भाग्यवश वे लोग शिकार होनेसे बच गये। कुछ लोग तो इससे घबरा गये थे मानो हैजेके कीड़े उनके शरीरमें घुस गये हों, लेकिन होटलोंमें जगाह पानेके लिए वे डरको छिपा रखते थे। ईटालीकी सरहदपर आतंक छाया था। सबको अपनी-अपनी चिन्ता पड़ी थी कि वह कहाँ जाय।

हमारे स्वेडिश दम्पतिने ईटालीकी सैरका पक्का इरादा कर लिया था। इसलिए वे यात्रियोंके दलमें इधर निकल आये। सेण्ट मारिजमें इतनी

भीड़ थी कि उन्हें ठहरनेकी जगहतक नहीं मिली। वे उत्तरकी तरफ बढ़े और अन्तमें वीपर्स आकर उन्हें शरण मिली। वे वीजेन रोजली होटलमें पहुँचे। होटलका नाम देखते ही उन्हें अपनी बूढ़ी माँकी याद आ गयी। वहाँ जानेके लिए उसका कितना आग्रह था। रास्तेकी तकलीफसे वे ऊब उठे थे। भयंकर गर्मीका सामना करनेके बाद उन्हें अचानक भीषण सर्दीका मुकाबला करना पड़ा था। शीत और बर्फके तूफानने इन्हें इस तरह झकझोर दिया था कि इनके चेहरे मलिन और धूमिल हो गये थे। इन्हें देखकर कोई नहीं कह सकता था कि ये नवविवाहित दम्पति हनीमून मनाने निकले हैं। लेकिन वहाँके लोगोंकी दृष्टि बड़ी तीक्ष्ण होती है। इन लोगोंको पहचाननेमें उन्हें देर न लगी। उन लोगोंने उन्हें वहीं ठहरनेके लिए कमरा दिया जिसमें किसी समय उनके माता-पिताने विश्राम ग्रहण किया था। कमरा पुराने ढंगका था तो भी इन्हें पसन्द आया। इसलिए उन लोगोंने तबतक वहाँ ठहरनेका निश्चय किया जबतक ईटालीसे हैजेका आतंक दूर न हो जाय। शाम होते होते यह विचार और भी दृढ़ हो गया क्योंकि उनकी तबीयत भारी मालूम होने लगी और भोजनालयसे वे लोग बीचमें ही उठ गये। पतिको बुखार आ गया। अब इन लोगोंके मनमें यह शंका उठने लगी कि दक्षिणकी तरफसे जो यात्री आ रहे थे उनसे उन लोगोंने बीमारीका कीड़ा पाया है। लेकिन दोमेंसे किसीने इसकी चर्चा नहीं की तो भी यह बात किसीसे छिपी नहीं रही। सबके मनमें यह सन्देह उठ खड़ा हुआ क्योंकि होटलका मालिक दूरसे ही उनसे कहने लगा कि वे लोग किसी दूसरे होटलमें चले जायँ। लेकिन अब उनके लिए वहाँसे हटाना सम्भव नहीं था। इसलिए होटलवालेने उनसे साफ कह दिया कि होटलके नौकर-चाकर उनके पास नहीं आवेंगे।

वधूके सामने कोई चारा नहीं था। उसने धैर्यके साथ यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उसने कहा—अभी ऐसे कोई लक्षण नहीं प्रकट हुए हैं जिनसे किसी तरहकी शंका की जाय, पर सावधान रहना ही श्रेयस्कार होगा। होटलवालेने डाक्टर बुला देनेका वादा किया लेकिन दूसरे दिनके पहले यह

असम्भव नहीं था। छूतको बढ़नेसे रोकनेके लिए जो भी उपाय सम्भव था उन लोगोंने कर डाला।

अब पतिने पूछा—तुम्हारी हालत भी तो अच्छी नहीं है। तुम सेवा-शुश्रूषाका भार कैसे उठा सकोगी।

"सफरकी थकावटसे मैं क्लान्त हूँ। मुझे बुखार तो नहीं है। मुझे दूसरा काम ही क्या करना है?"

यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता था कि उसे बुखार नहीं था, लेकिन बुखारकी बातको मनमें न लानेका उसने दृढ़ निश्चय किया; भयको उसने अपने दिलमें स्थान न देनेका पूरा यत्न किया। उसका सारा यत्न पतिको शान्त रखनेमें लग गया। पति भी इतना कमजोर हो गया था कि उसके मुँहसे शब्द नहीं निकलते थे। इसके अलावा उसके शरीरमें दर्द होने लगा और बेहोशी भी आने लगी थी। वह रातभर उसके सिरहाने बैठी रही और उसे आराम पहुँचानेका जो भी यत्न उससे हो सकता था करती रही।

सबेरे डाक्टर आया। उसने रोगीको देखा। कहा—चिन्ताकी कोई बात नहीं है। यह एक तरहकी पहाड़ी बीमारी है जो हवाके प्रवाहमें तेजीसे हेर-फेर हो जानेके कारण हो जाया करती है। लेकिन तो भी इन्हें अलग ही रखना अच्छा होगा। पत्नी जानती थी कि इन्हें अलग रहना ही होगा क्योंकि डरके मारे कोई इनके पास आनेका साहस भी नहीं करेगा। जब डाक्टरने वधूको देखना चाहा तो उसने यह कहकर साफ इन्कार कर दिया कि मुझे बीमार होनेकी फुरसत नहीं है। पर यह कहना कठिन था कि वह सचमुच भली-चंगी थी अथवा महज मनोबलसे चली जा रही थी।

दूसरे दिन उसकी अपनी तबीयत भी एकदम ठीक थी और डाक्टरने रोगीकी हालत भी अच्छी बतलायी।

असीम शान्ति और निस्तब्धताके थे वे दिन। इसका कारण यह नहीं था कि उनसे लोग दूर रहते थे। इसलिए उनकी शान्तिमें बाधा नहीं पड़ती थी, बल्कि समयका प्रवाह ही ऐसा हो रहा था, जीवनमें कहीं भी स्फूर्ति नहीं थी,

चहल-पहल नहीं थी। उनका प्रणय उसीका एक अंश था—सबसे उत्तम अंश—वह प्रणय जो पहलेके समान ही स्थिर और निश्चल था। यदि उसमें किसी तरहका परिवर्तन हो रहा था तो वह उसमें सादगी और विस्तार भर रहा था। जिस युगमें उन्होंने जन्म लिया था उस युगमें पहले युगकी अपेक्षा प्रणयकी अधिक चर्चा थी, पहलेसे कहीं अधिक उसपर लोग मनन करते थे। स्थूल जीवनसे लोग प्रणयका अलग अस्तित्व मानते थे और उसे सबसे ज्यादा अनमोल मानकर उसकी स्वतन्त्र पूर्णता चाहते थे, मानो वह एक फूल था पेड़से अलग जिसका सौन्दर्य-विकास किया जाय। लेकिन वह फूल, जबतक पेड़से लगा है, अपनी असली हालतमें रहेगा मानो उसकी देख-रेख बड़ी सावधानीसे नहीं की गयी है लेकिन उसकी देख-रेखके लिये व्यग्रता प्रकट करे तो उसका स्थायित्व ही सन्दिग्ध पूर्ण बना दिया जाता है। उसकी ऐसी दशा इसलिए और हो गयी क्योंकि ईमानदारीके नामपर जड़ताका परिचय देकर उसके अस्तित्वको ही सन्दिग्ध बना दिया गया। इसे हम जुआड़ीका जोश कह सकते हैं—"मैं इस दाँवपर अपना सब कुछ लगा देता हूँ। यदि यह दाँव नहीं आया तो मेरा सब कुछ चला गया।" यदि देखा जाय तो यह सब आदर्शकी आड़में सुरतकी प्यास है। चाहे उसमें कितने भी गम्भीर भाव क्यों न भरे हों, उनकी आड़में दंभकी मात्रा विद्यमान है जो खतरेसे खाली नहीं है।

इस दम्पतिके हनीमूनके सुखमें अभी कोई खलल नहीं पहुँचा था। इसके अलावा कोई निश्चित विधान भी इनके सामने नहीं था, तो भी निराशाकी झलक इन्हें मिल जाती थी। लेकिन इस बीमारीके एकान्तवासमें सारा बवण्डर शान्तसा हो गया। दोनोंके परस्पर भावमें बहुत सामञ्जस्य आ गया।

उपद्रवके सभी लक्षण दूर हो गये थे। खतरा आया और उसका मुकाबला करनेके लिए इन लोगोंको जो कुछ करना पड़ा, उसने इनके जीवनके मूल्यको और भी स्पष्ट कर दिया। वधूने देखा कि उसमें अपार साहस है और भयानक-से-भयानक सङ्कट आ उपस्थित होनेपर वह अपना कर्तव्य निश्चित करनेकी क्षमता रखती है और पतिने बाहरी सौन्दर्यके अतिरिक्त उसमें किसी अन्य महान्

वधूकी झलक पायी। बीमारीकी पीड़ाके अवसानके साथ-ही-साथ आनन्दके मधुर उच्छ्वासका उन्होंने अनुभव किया जो शान्त, प्रकाशमान, पर साथ ही गम्भीर था, जिसके प्रकाशमें उन्होंने एक दूसरको पहलेसे कहीं अधिक पहचाना।

बीमारीके बाद वे लोग जब पहले दिन बाहर निकलनेकी तैयारी करने लगे तो उस जगहके लिए उनके हृदयमें बड़ी ममता उत्पन्न हो उठी, एक नयी महानता उसमें आ गयी। सूर्यका दिव्य प्रकाश चारों ओर फैल रहा था, उसकी चमकसे कोना-कोना चमक रहा था। उस प्रकाशमें उन्होंने कमरेकी दीवारपर कुछ लिखावट देखी। वे लोग जमानेसे अंकित उन नामोंको विस्मय और तन्मयताके साथ पढ़ने लगे। उन्होंने अनुभव किया कि इन लिखनेवालोंके भाग्य इनके भाग्यके साथ जुड़े थे। वे लोग भी एक समय यहीं थे और हमेशाके लिए यहाँसे विदा हो गये। इसे पढ़कर वे लोग क्षणभरके लिए चिन्तित हो गये। लेकिन दूसरे ही क्षण दूसरे विचारने स्थान ग्रहण किया—"इस जगहका जो मूल्य हमलोगोंकी आँखोंमें है वह दूसरोंके लिए नहीं रहा होगा।"

अचानक वधूकी निगाह एक दूसरी लिखावटपर पड़ी। उसे देखते ही उसने चौंककर कहा—वह देखो! यहाँपर स्वेडिश भाषामें किसीने लिख रखा है। न तो लिखनेवालेका यहाँ नाम है और न तारीख है लेकिन लिखावट पुरानी है। दूसरी लिखावटोंको देखकर इतना तो स्पष्ट हो जाता है। ऐसी बात यहाँ किसने लिख दी।

पतिने पूछा—क्या लिखा है?

वधू—तुम खुद पढ़ लो। किसी स्वेडेन निवासीने ही लिखा होगा।

उसने जोरसे पढ़ा—"मैं सुखी हूँ।" इसके साथ ही उसके सारे शरीरमें बिजली दौड़ गयी। उसने लिखावट पहचान ली। और उसे स्मरण हो आया कि कहाँ और कैसे उसने पहले पहल "वीजेन रोजली" का नाम सुना था।

उसने नम्रतासे कहा—यह मेरे पिताका लिखा हुआ है। अपना हनीमून मनाने वे लोग यहीं आये थे।

वधू—अब तो मुझे भी याद आ रहा है।

दोनोंकी आँखोंमें आँसू उमड़ आये यद्यपि दोनों एक दूसरेको देखकर मुस्कुरा पड़े। उनके दिलमें उसकी याद जाग उठी जिसने इन पंक्तियोंको लिखा था और जो अपनी सारी खुशीको समेटकर समाधिमें शान्त पड़ा है, लेकिन उससे भी ज्यादा अभिभूत थे वे दोनों जीवनके रहस्य और एकतापर, उसके निरन्तर आवागमन और नूतनतापर, उसके सौन्दर्य और ताजगीपर, उसकी गम्भीरता और महत्तापर।

भाई

स्कूल-मास्टरका नाम वार्ड था और उसके भाईका अण्डर्स। वे एक दूसरेका बहुत ख्याल रखते थे, फौजमें साथ ही भर्ती हुए, साथ ही ट्रेनिंग लिया, साथ ही लड़ाईमें गये। एक ही टुकड़ीमें रहे, दोनों कारपोरेजके पद-तक पहुँचे। जब वे युद्धसे वापस आये तो लोगोंने इनकी बड़ी तारीफ की।

उसके बाद ही पिताका देहावसान हुआ। वे अच्छी जायदाद छोड़ गये थे। उसका बँटवारा करना कठिन था। इसे लेकर वे झगड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने आपसमें तय किया कि सारी सम्पत्ति नीलामपर चढ़ा दी जाय। जिसे जिस वस्तुकी आवश्यकता हो उसे वह खरीद ले और जो आमदनी हो उसे बाँट लिया जाय। वही किया गया।

लेकिन उनके पिता एक सोनेकी घड़ी भी छोड़ गये थे। उस प्रदेशमें वही एक सोनेकी घड़ी थी। इसलिए चारो ओर उसकी ख्याति थी। इस घड़ीके लेनेवाले बहुत लोग हो गये। लेकिन जब वही दोनों भाई डाक बोलने लगे तो दूसरे लोग हट गये। बड़ा भाई सोचता कि छोटा भाई यह घड़ी मुझे खरीदने देगा और छोटा भाई सोचता कि बड़ा भाई मुझे ले लेने देगा। डाक बढ़ने लगी और दोनों भाई एक दूसरेको घूरकर देखने लगे। जब बीस डालरकी बोली अण्डर्सने बोल दी तो यह वार्डको भला न लगा। डाक रुकी नहीं, बढ़ती गयी और तीसपर जा पहुँची। इतनेपर भी जब अण्डर्स नहीं रुका तो वार्ड सोचने लगा---अण्डर्स मेरी सारी नेकियोंको भूल गया। वह यह भी भूल गया कि मैं बड़ा भाई हूँ। डाक तीससे ऊपर चली गयी। अण्डर्स बोलता गया। अब वार्डने आँखें नीची कर लीं और एक साथ ही चालीस डालरकी बोली बोल दी। नीलाम-घरमें सन्नाटा छा गया। केवल अमीनने धीरेसे 'चालीस' शब्द

दोहराया। अण्डर्स सोचने लगा—अगर वार्ड चालीसतक जा सकता है तो वह भी आगे बढ़ सकता है। यदि वार्ड घड़ी मुझे नहीं लेने देना चाहता तो मुझे जरूर लेनेकी कोशिश करनी चाहिए। उसने डाक बढ़ायी। वार्डने इसे अपना बहुत बड़ा अपमान समझा। उसने धीरेसे पचास कह दिया। अण्डर्स इतने आदमियोंके सामने नीचा नहीं देखना चाहता था। उसने फिर डाक बढ़ा दी। वार्ड खिलखिलाकर हँस पड़ा।

उसने एक साथ ही सौ डालर कह दिया। यही उसकी अन्तिम बोली थी। उसने अपने मनमें कहा—इस बोलीके साथ अपना भाग्य भी मैंने दाँवपर रख दिया। इतना कहकर वह बाहर निकल आया और घोड़ेपर सवार होने लगा।

इसी समय किसीने आकर कहा—अण्डर्स चुप रह गया। घड़ी तुम्हारी हो गयी।

इस शब्दके कानमें पड़ते ही उसका मन खिन्न हो गया। उसे अपने भाई का ख्याल हो आया। घड़ीकी याद जाती रही। उसका एक पैर रिकाबपर जा पहुँचा, वह उसी तरह खड़ा रह गया। उसका दूसरा पैर नहीं उठा। लोग बाहर निकले। अण्डर्स भी बाहर निकला। उसने अपने भाईको घोड़ेपर सवार होनेके लिए तैयार देखा। उसके मनमें जो भाव उस समय उठ रहे थे उसका अण्डर्सको पता नहीं था। उसने कहा—"घड़ीके लिए तुम्हें बधाई है वार्ड, लेकिन आजसे तुम्हारा भाई तुम्हारे द्वारपर झाँकने भी नहीं जायगा।"

वार्डका चेहरा पीला पड़ गया था। घोड़ेपर चढ़नेके लिए दूसरा पैर ऊपर उठाते हुए उसने कहा—"तुम भी अपने दरवाजेपर मेरी परछाईं न देखोगे।" इतना कहकर वह चला गया।

उस दिनके बाद दोनों भाइयोंने उस मकानमें कदम नहीं रखा जिसमें अपने पिताके साथ वे रहते थे।

इस घटनाके थोड़े ही दिन बाद अण्डर्सकी शादी एक किसानकी लड़कीसे हुई। उसने वार्डको न्योता नहीं दिया। वार्ड भी विवाहोत्सवमें शामिल नहीं

हुआ। शादीके थोड़े ही दिन बाद अण्डर्सकी एकमात्र गाय मर गयी। मकानके उत्तर तरफ गो-शाला थी, वहीं वह सवेरे मरी पायी गयी। मृत्युका कारण किसी-की समझमें नहीं आया। इसके बाद तो एक-एक करके विपत्तियोंका ताँता लग गया। इसी तरह एक दिन उसके भुसौलमें आग लग गयी और जितना चारा वहाँ रखा था सब जलकर राख हो गया। रातको आग लगी। कोई नहीं जानता कि आग कैसे लगी। यह अण्डर्सपर सबसे बड़ी विपत्ति थी।

अण्डर्स रातभर रोता रहा। उसने कहा—"यह उसीकी करनी है जो मुझे नुकसान पहुँचाना चाहता है।" वह गरीब हो गया। काममें उसका मन नहीं लगता था।

उसी दिन शामको बार्ड उसके पास आया। अण्डर्स बिस्तरपर पड़ा था, लेकिन बार्डको देखते ही वह उछलकर खड़ा हो गया। बोला—"तुम यहाँ क्यों आये?" वह आँखें तरेरकर बार्डको देखने लगा।

बार्ड क्षणभर चुप रहा। बोला—तुमपर विपत्ति आ गयी है। मैं तुम्हारी मदद करने आया हूँ।

"यह सब तुम्हारी ही कृपाका तो फल है। यहाँसे चले जाओ नहीं तो अनर्थ हो जायगा।"

"अण्डर्स! तुम गलतीपर हो। मुझे खेद है कि......... ।"

"बार्ड ईश्वरके लिए यहाँसे चले जाओ।"

बार्ड दो कदम पीछे हट गया। बोला—"यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम वह घड़ी ले सकते हो।" वह काँप रहा था।

अण्डर्सने गरजकर कहा—"मेरे यहाँसे चले जाओ।"

बार्ड चुपचाप वापस चला गया।

(२)

अण्डर्सपर इस तरह विपत्ति आते देखकर बार्डका दिल पसीज गया। लेकिन घमण्ड उसका साथ नहीं छोड़ता था। कई बार वह गिरिजाघर गया। शुभ काम करनेके उसने अनेक संकल्प किये लेकिन उन्हें चरितार्थ करनेका

सामर्थ्य उसमें नहीं था। कई बार वह अण्डर्सके घरके नजदीक रुक गया लेकिन किसी-न-किसी कामसे वह वापस आ जाता। कभी किसीको वह अण्डर्सके पास बैठा देखता, कभी किसीको घरसे बाहर आते देखता या कभी अण्डर्सको लकड़ी चीरते देखता।

जाड़ेका अतवार था। वार्ड फिर गिरजाघर गया। उस दिन अण्डर्स भी वहाँ गया था। अण्डर्स दुबला हो गया था, उसके कपड़े फटे-पुराने थे। उनमें अनेकों पैबंदे लगे थे। जबतक प्रार्थना होती रही अण्डर्स दत्तचित्त पादरी की ओर देखता रहा। वार्डको वे पुराने दिन याद आ गये। दोनों भाई कितने प्रेमसे साथ रहते थे। अण्डर्स उसकी कितनी इज्जत करता था। वार्डने वेदीको छूकर संकल्प किया कि चाहे जो हो पर अण्डर्ससे मेल कर लेगा। इस संकल्पसे वह इतना अभिभूत हुआ कि वह वेदीसे वापस आकर अण्डर्सके पास जाकर बैठ जाना चाहता था। लेकिन व्यवधान वहाँ मौजूद था। अण्डर्स उसकी ओर ताकतातक नहीं था। प्रार्थनाके बाद भी व्यवधान ज्यों-का-त्यों रहा। अण्डर्सके साथ कई लोग थे। अण्डर्सकी पत्नी उसके साथ थी, जिसके साथ उसकी जान-पहचान भी नहीं थी। इसलिए उसने अण्डर्सके घरपर जाकर ही इतमीनानसे बातचीत करनेका निश्चय किया।

शामको वह अण्डर्सके घरकी तरफ चला। वह दरवाजेतक पहुँच गया। इसी समय भीतरसे किसीको कहते सुना—"आज वे वेदीके पास गये थे।" निश्चय ही वे आपके लिए चिन्तित थे। आपकी ही बात सोच रहे थे।" वार्डने पहचाना। वे शब्द अण्डर्सकी पत्नीके थे।

अण्डर्स—तुम्हारा ख्याल गलत है। मैं उसे जानता हूँ। अपने आपके सिवा उसे और किसीकी फिक्र नहीं रहती।

इसके बाद दोनों चुप हो गये। जाड़ेकी रात थी तो भी वार्ड पसीने-पसीने हो गया। पत्नी बर्तन साफ करने लगी, चूल्हेमें आग सों-सों कर रही थी, बच्चा रह-रहकर रो पड़ता था, अण्डर्स उसे थपथपा देता था। फिर पत्नीकी आवाज सुनायी पड़ी—

"मैं तो यही कहूँगी कि तुम दोनों एक दूसरेकी बात सोचते रहते हो, लेकिन तुम इसे स्वीकार नहीं करोगे।"

इसपर अण्डर्सने कहा—इस प्रसंगकी चर्चा न किया करो।

इसके बाद अण्डर्स घरसे बाहर निकलने लगा। वार्ड सरककर गुठौलमें छिप गया। अण्डर्स ईंधन ही लेने आया था। उसने अण्डर्सको साफ-साफ देखा। उसने अपना गुनहका चिथड़ा उतार दिया था और यूनिफार्म पहन लिया था। वार्डके पास भी ऐसा ही यूनिफार्म था। दोनोंने संकल्प किया था कि वे लोग इसे स्वयं नहीं पहनेंगे बल्कि अपने लड़कोंको विरासतमें दे जायँगे। लेकिन आज अण्डर्स दुर्भाग्यका शिकार हो रहा था। उसके सुडौल शरीरपर चीथड़े विराज रहे थे और वार्डकी जेबमें वह सोनेकी घड़ी टिकटिक कर रही थी, अण्डर्स अन्दर गया लेकिन ईंधन उठाकर बाहर निकल आनेके बजाय वह ढेरपर ओठँग गया और निर्मल आकाशकी ओर देखने लगा। चारो ओर तारे छिटक रहे थे। एक ठंडी साँस लेकर वह बोल उठा—मेरे भगवान्! दयामय करुणानिधान!

उस स्वरमें कितनी करुणा भरी थी। उस जीवनमें वार्ड उन्हें नहीं भूल सका। वह उसी वक्त अपने भाईसे लिपट जाना चाहा, लेकिन अण्डर्सने खाँस दिया और वार्डके पैर जहाँके तहाँ गड़े रह गये। इसके बाद अण्डर्सने ईंधन लिया और वापस चला गया। वह वार्डके इतने निकटसे गया कि लकड़ीसे उसका चेहरा छिल गया।

वार्ड जड़वत् उसी जगह खड़ा रहा। यदि शीतके प्रभावसे वह काँपने न लगता तो न जाने कितनी देरतक वह उसी तरह खड़ा रहता। वह वहाँसे बाहर निकला। वह मकानके अन्दर जाना चाहता था लेकिन कायरतासे वह इस प्रकार अभिभूत था कि उसे अन्दर जानेका साहस नहीं हुआ। तब उसने दूसरी युक्ति सोची। गुठौलके एक कोनेमें राखकी ढेर थी। उसमेंसे उसने दो-चार कोयला चुना। गुठौलमें गया। दरवाजा भीतरसे बन्द कर लिया। आग जलायी। आगके प्रकाशमें उसने उस खूँटीको खोजा जिसपर अण्डर्स

अपनी लालटेन लटकाता था, प्रतिदिन तड़के चारा देनेके वक्त अण्डर्स यह लालटेन जलाता था। वार्डने जेबसे घड़ी निकाली, उसे उसी खूँटीपर टाँग दी, आग बुझाई और चला गया। उसने समझा कि इस तरह उसने बाजी मार ली है। लड़कोंकी तरह वह अपनी जीतसे प्रसन्न था।

लेकिन दूसरे दिन सुबह उसने सुना कि अण्डर्सके भुसौलमें आग लग गयी और वह भुसौल जल गया। मालूम होता है कि आगकी एकाध चिनगारी छटककर सूखी घासमें चली गयी थी, उसने सोचा।

इस घटनासे वार्डको बड़ा विषाद हुआ। उस दिन किसी काममें उसका मन नहीं लगा। दिनभर वह चारपाईपर पड़ा रहा। सारे दिन प्रार्थना करता रहा। उसकी यह हालत देखकर उसके घरके लोग डर गये। शामके बाद वह घरसे बाहर निकला। चाँदनी रात थी। वह अपने भाईके मकानकी तरफ गया। राखको खोद डाला। उसमेंसे सोनेकी एक घली निकली। उस घड़ीका वही अवशेष रह गया था।

यही चीज लेकर वह उस दिन अपने भाईके यहाँ गया था। सारी बातें कहकर वह उससे क्षमा माँगना चाहता था और सुलह कर लेना चाहता था। लेकिन उसे निराश लौटना पड़ा था।

उस दिन शामको कुछ लड़कोंने उसे अपने भाईके मकानकी तरफ जाते देखा था। एक लड़कीने उसे राख उलटते पलटते भी देखी थी। उस घटनाके दूसरे दिन उसकी जो अवस्था थी वह भी लोगोंने देखा था। दोनों भाइयोंमें गहरी दुश्मनी चल रही थी यह भी लोग जानते थे। निदान, पुलिसमें इस बातकी रिपोर्ट की गयी। वार्डके घरकी तलाशी भी ली गयी लेकिन उसके खिलाफ कोई सबूत नहीं मिला। तो भी लोग उसपर सन्देह करते ही रहे। अब तो उसे अण्डर्सके यहाँ जानेका और भी साहस नहीं होता था।

अण्डर्सको भी वार्डपर सन्देह हुआ था लेकिन उसने अपनी जबान नहीं खोली। जब उसने दूसरे दिन उसे अपने यहाँ देखा था तो उसका चेहरा पीला पड़ गया था। अण्डर्सने अपने मनमें सोचा था पश्चात्तापकी आगमें वह जल

रहा है। लेकिन उसने जो जुल्म मेरे ऊपर किया है उसकी माफी नहीं हो सकती। उसके बाद उसने लोगोंसे सब बातें सुनीं तो उसे पूरा यकीन हो गया, कि गुसोल्फको वार्डने ही जलाया यद्यपि पुलिसकी जाँचमें वह निर्दोष साबित हुआ।

पुलिसकी तहकीकातमें दोनों भाइयोंका सामना हुआ। वार्डके शरीरपर अच्छी पोशाक थी, अण्डर्स फटे पुराने कपड़े पहने था। वार्डने अण्डर्सकी ओर देखा। उसकी आँखोंमें करुणा भरी थी जो अण्डर्ससे चुप रहनेकी भीख माँग रही थी। और जब उससे पूछा गया कि क्या तुम्हारा सन्देह अपने भाईपर है, अण्डर्सने साफ इनकार कर दिया।

उस दिनसे अण्डर्स खूब शराब पीने लगा। उसकी हालत एकदम बिगड़ गयी। लेकिन वार्डकी हालत उससे भी खराब होती जाती थी यद्यपि वह शराब नहीं पीता था। वह इतना क्षीण हो गया कि मुश्किलसे पहचाना जाता था।

एक दिन शामको एक गरीब महिला वार्डके घर आयी और उसे अपने साथ चलनेके लिए कहा। वह अण्डर्सकी पत्नी थी। वार्डको सारी बातें समझने-में देर नहीं लगी। वह घबरा गया। चटपट उसने कपड़ा पहना और उसके साथ चल पड़ा। अण्डर्सके घरमें एक चिराग टिमटिमा रहा था, मारे बदबूके नाक नहीं दिया जाता था। वे लोग अन्दर गये। दालानमें एक बच्चा मिट्टी खा रहा था। उसका सारा शरीर कोयलेसे काला हो रहा था। इन्हें देखते ही वह दाँत निकालकर हँसने लगा। यह अण्डर्सका पुत्र था।

अण्डर्स चारपाईपर पड़ा था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। आँखें धँस गयी थीं। वह एकटक वार्डको देखने लगा। वार्ड थरथर काँप रहा था। वह जाकर पैताने बैठ गया और फूट फूटकर रोने लगा। अण्डर्स चुपचाप उसकी ओर देखता रहा। अन्तमें उसने अपनी पत्नीसे बाहर जानेके लिए कहा। लेकिन वार्डने उसे वहीं रहने देनेका आग्रह किया। दोनों भाइयोंमें बातें होने लगीं। घड़ीके लिए डाक बोलनेसे लेकर आजतककी अपनी-अपनी बातें दोनों ने

गये। वार्डने सोनेकी वह डली उनके सामने रख दी जिसे उस दिनसे वह बराबर अपने पास ही रखता था। बात-चीतसे मालूम हुआ कि अलग होनेके बादसे दोनों भाई क्षणभरके लिए भी सुखका उपभोग नहीं कर सके थे।

अण्डर्स इतना कमजोर हो गया था कि वह ज्यादा बोल नहीं सकता था। पर वार्ड उस दिनसे दिनरात भाईकी मनसे सेवा करने लगा।

एक दिन सुबह अण्डर्सने कहा—भाई, अब मैं एकदम अच्छा हो गया हूँ। हमलोग अबसे पहलेकी तरह साथ ही रहेंगे। कभी अलग नहीं होंगे।

लेकिन उसी दिन अण्डर्सकी मृत्यु हो गयी।

वार्ड वधू और भतीजेको अपने यहाँ ले आया और मजेमें उन्हें रखा। उस दिन दोनों भाइयोंमें जो बातें हुई थीं उसकी चर्चा गाँवभरमें होने लगी। वार्डकी इज्जत लोगोंकी दृष्टिमें बढ़ गयी। उनका स्नेह और सत्कार पाकर वार्डने नया जीवन ग्रहण किया। उसने अपने मनमें परोपकारकी ठानी और लड़कोंको पढ़ानेका काम उठा लिया। वह सबसे प्रेम करता और यही शिक्षा अपने छात्रोंको देता। सभी लड़के उसे पिताके समान मानते और उसका आदर करते।

धोखा

ड्रेस्डनके बाद जो रेलका जक्शन आया उसपर एक अधेड़ व्यक्ति हम-लोगोंके डब्बेमें घुसा, लोगोंकी तरफ देखकर मुस्कुराया और मुझे इस तरह नमस्कार किया मानों कोई पुराना परिचित हो। मैं चकित होकर उसके मुँहकी तरफ देखने लगा तो उसने अपना नाम बतला दिया। उससे मेरी पुरानी जान-पहचान थी। वह बर्लिनका अप्राप्य वस्तुओंका मशहूर विक्रेता था। युद्धके पहले मैंने अनेक बार उसकी दूकानसे लोगोंके हस्ताक्षर और अप्राप्य पुस्तकें खरीदी थीं। वह मेरे सामनेवाली खाली जगहपर बैठ गया और देरतक इधर-उधरकी बातें करता रहा। उसके बाद उसने अपनी इस यात्राका उद्देश्य बतलाया जहाँसे वह वापस आ रहा था। प्रायः सैंतीस सालसे वह यह काम करता आ रहा था। लेकिन आजके पहले उसे इस पेशेमें ऐसा विचित्र अनुभव नहीं हुआ था। उसने यों कहना शुरू किया—

जबसे रुपयेका मूल्य गैसकी तरह उड़ने लगा है तबसे मेरे पेशेकी जो हालत हो गयी है वह तो आपसे छिपी नहीं है। जिन लोगोंने लड़ाईमें दोनों हाथोंसे धन बटोरा है उन्हें पुरानी चीजोंके संग्रहका रोग हो गया है। उनकी प्यास बुझाना मुश्किल हो रहा है और मेरे समान आदमीको भी—जो सुन्दर वस्तुओंको अपने घरमें सजाकर रखना चाहता है—घरको खाली कर देना पड़ा है। वे तो हमारी धज्जी-धज्जी खरीद लेना चाहते हैं। उनके हाथ बेचनेके लिए माल मिलना मुश्किल हो गया है। "माल" शब्दका प्रयोग शायद आपको अच्छा न लगा होगा। पर इनके यहाँ यही शब्द चल रहा है और उन्हींसे मैंने इसे सीखा है। मुझे खुद यह नहीं जँचता पर......... ।

ये रुपये पानीकी तरह बहा रहे हैं। इससे इनकी तृष्णा शान्त करना

असम्भव हो गया है। उस दिन मैंने अपनी दूकानकी जाँच-पड़ताल की तो देखा कि मेरे पास कीमती चीजें इतनी कम रह गयी हैं कि मुझे दूकान उठा देनी पड़ेगी। मेरे दादा और पिताने बड़े परिश्रमसे इस रोजगारको जमाया था। लेकिन इस समय दूकानमें ज्यादातर ऐसी ही चीजें रह गयी हैं जिन्हें १९१४ के पहले फेरी देनेवाला भी बेचनेके लिए ले जाते शर्माता।

इसी झंझटमें मुझे एक बात सूझी। मैं खाता उलटकर अपने पुराने ग्राहकोंके नाम देखने लगा कि शायद उनके पास ऐसी कोई वस्तु हो जिसे वे बेचना चाहें। यह बात सच है कि कभी-कभी ऐसे ग्राहकोंकी सूची युद्धके मैदानमें पड़े मुर्दोंके ढेरसे कीमती नहीं सिद्ध होती है। मुझे भी यही अनुभव हुआ कि समृद्धिके दिनोंमें जिन लोगोंने मेरी दूकानसे अलभ्य वस्तुएँ खरीदी थीं उनमें तो बहुतसे कभीके मर चुके थे या उनकी हालत इतनी बिगड़ गयी थी कि वे अपने बहुमूल्य संग्रहोंको बहुत पहले हटा चुके थे। लेकिन मुझे एक व्यक्तिका पता चला जो मेरी दूकानका सबसे पुराना ग्राहक था और अभीतक जिन्दा है। पर वह इतना बूढ़ा हो गया था कि मैं उसे पहचानता भी नहीं था, खासकर इसलिए कि १९१४ के युद्धके बाद उसने मेरे यहाँसे एक भी ऐसी वस्तु नहीं खरीदी थी। उसका सबसे पहला खत उस समयका था जब मेरे दादा यह कारबार देखते थे। लेकिन इन सैंतीस सालोंके भीतर, जबसे यह कारबार मैंने अपने हाथमें लिया है, एक बार भी उनके सम्पर्कमें नहीं आया था।

सारे लक्षण यही बतला रहे थे कि वह जरूर उन खपतीमेंसे होगा जो आज भी जर्मनीके देहातोंमें पाये जाते हैं। उसके अक्षर स्पष्ट थे और अपनी प्रत्येक माँगपर उसने लाल रोशनाईसे निशान बना दिया था। प्रत्येक वस्तुकी कीमत अक्षरों और अंकों दोनोंमें लिखी थी जिससे भूलकी सम्भावना न हो। उसकी प्रत्येक चिट्ठी कागजके फटे टुकड़ोंपर लिखी थी और सड़ियल लिफाफों बन्द करके आयी थी जिससे यही साबित होता था कि वह ईसाके पूर्वकी किसी शताब्दीका आदमी है। नामके नीचे वह अपनी पूरी उपाधि जोड़ता था।

पेंशनयाफ्ता फारेस्ट रेंजर तथा इकनामिक कौंसिलर, रिटायर्ड लेफ्टिनेण्ट, हालेण्डर आफ दी आइरन क्रास फर्स्ट क्लास ! १८७०-७१ के युद्धमें उसने नामवरी हासिल की थी, इसलिये इस समय उसकी उम्र अस्सीके लगभग मैंने अनुमान किया।

इतना बड़ा कंजूस और खफ़ होते हुए भी उसका संग्रह देखकर उसकी बुद्धिमत्ता, ज्ञान और रुचिका पता लगता था। उसने जितनी वस्तुएँ मेरी दूकानसे खरीदी थीं उनके लिए उस समय उसे बहुत ज्यादा मूल्य नहीं देना पड़ा होगा। लेकिन आज उनका मूल्य इतना ज्यादा था कि आजके धनिकों-का समूचा संग्रह उसका मुकाबला नहीं कर सकता था। जिन वस्तुओंको उसने साधारण मूल्यपर हमलोगोंसे खरीदा था उनका मूल्य आज कहीं बढ़ गया था। उसने दूसरी दूकानोंसे इसी तरहके संग्रह अवश्य लिये होंगे। कहीं उसने अपना संग्रह बेच डाला हो तब ? अप्राप्य वस्तुओंके व्यवसायमें जो कुछ हो रहा था उसकी पूरी जानकारी मुझे थी। इससे इतना तो मैंने मान लिया कि यदि उसकी ये सारी चीजें बिकी होतीं तो मेरे कानोंतक यह खबर जरूर पहुँची होती। यदि वह मर गया होगा तो उसके वारिसोंके हाथमें सभी चीजें चली गयी होंगी।

मेरी उत्सुकता इतनी ज्यादा बढ़ी कि मैं अपनेको किसी भी तरह रोक नहीं सका और परसों उसकी खोजमें रवाना हो गया। वह सैक्सनी प्रदेशके एक देहातमें रहता था। स्टेशनसे जब मैं उसकी बस्तीकी ओर बढ़ा तो मैंने स्वप्नमें भी यह कल्पना नहीं की थी कि इस सुदूर देहातमें भी मुझे ऐसा आदमी मिलेगा जिसके पास इतना सुन्दर संग्रह होगा जो समूचे जर्मनीमें एक जगह नहीं मिल सकता था। सबसे पहले मैं डाकघर गया और उसका पता पूछा। मुझे यह जानकर सन्तोष हुआ कि वह व्यक्ति अभी जीवित है। उनके बताये रास्तेसे मैं उसके मकानकी तलाशमें चला। दोपहर हो रहा था। मेरा दिल उछल रहा था।

वह एक साधारण मकानके दो-तल्लेपर रहता था। पहले तल्लेमें दर्जीकी दूकान थी। उसके कमरेके सामने जाकर मैं खड़ा हो गया और घंटी बजायी।

दूसर ही क्षण एक बूढ़ी औरत मेरे सामने आकर खड़ी हो गयी। उसके सिरके एक-एक केश सफेद हो गये थे। बदनके चमड़े झूल गये थे। मैंने उसे अपना कार्ड देकर पूछा कि क्या मालिक घरमें हैं। उसने पहले कार्ड देखा उसके बाद मेरे चेहरेकी ओर देखने लगी। जैसे उसे मुझपर विश्वास नहीं हो रहा था। राजधानीका रहनेवाला इस सुदूर देहातमें किसीसे मिलने आवे, यह कम अचरजकी बात नहीं थी। तो भी बड़ी नम्रता और शिष्टताके साथ वह मुझे बैठकमें ले गयी। मुझे वहाँ बैठाकर वह अन्दर चली गयी। भीतरसे किसीके शब्द मुझे सुनायी पड़े। वह कह रहा था—"बर्लिनका प्रसिद्ध दूकानदार अलभ्य वस्तुओंका विक्रेता हर टेक्नर मिलने आया है। इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ।"

बूढ़ी मेरे पास आयी और मुझे अन्दर लिवा ले गयी।

मैंने अपना ओवरकोट उतार दिया और उसके पीछे चला। एक साधारण सजे कमरेके बीचमें मेरा स्वागत करनेके लिए एक आदमी खड़ा था। बुढ़ौतीमें भी वह तगड़ा था। उसकी मूँछें लम्बी थीं और वह सैनिक पोशाकसे सुसज्जित था। बड़े आदरके साथ उसने अपने दोनों हाथ मेरी ओर बढ़ाया। लेकिन जिस आदरके साथ उसने अपना हाथ बढ़ाया, उसी सौजन्यका परिचय उसने अपने व्यवहारमें नहीं दिया क्योंकि वह अपने स्थानसे हिला नहीं। मुझे ही आगे बढ़कर उसका दोनों हाथ अपने हाथमें लेना पड़ा। मैंने यह भी देखा कि उसके हाथ मेरे हाथोंकी तरफ नहीं बढ़े बल्कि मुझे ही उसके हाथोंको पकड़ना पड़ा। मुझे पीछे मालूम हुआ कि वह अन्धा था।

बचपनसे ही अन्धोंको देखकर मैं घबरा जाता था। मैं परेशान हो जाता हूँ, व्याकुल हो उठता हूँ और ऐसे आदमीसे मिलनेमें मुझे संकोच होने लगता है। मुझे ऐसा प्रतीत होने लगता है कि उसकी बेकसीसे मैं अनुचित लाभ उठा रहा हूँ। यही भाव उस समय भी मेरे मनमें उठा जब मैं वहाँ खड़ा उसकी स्थिर पुतलियोंकी ओर देख रहा था। लेकिन मेरी यह परेशानी देरतक नहीं रह सकी। बूढ़ेने हँसकर कहा—"यह मेरा परम सौभाग्य है कि बर्लिनका बड़ा आदमी इस तरह यहाँतक आनेका कष्ट उठावे। लेकिन जब आपके समान समृद्ध

व्यापारी चक्कर लगानेके लिए निकलता है तो हम देहातियोंको सावधान और सतर्क हो जाना चाहिए। हमलोगोंमें एक कहावत प्रचलित है कि अगर आस-पास कहीं खानाबदोश हों तो अपना दरवाजा बन्द रखो, अपनी जेब सम्हालो।" मैं आपके कष्ट उठानेका कारण कुछ-कुछ समझता हूं। आजकल रोजगार मन्दा है। खरीदार कम हैं या नहींके बराबर हैं। इसीलिए दूकानदार अपने पुराने ग्राहकोंकी खोजमें निकले हैं। लेकिन यहाँसे आपको निराश खाली हाथ लौटना पड़ेगा। हम पेंशन पानेवालोंको रूखी-सूखी रोटी नसीब हो रही है, यही गनीमत है। अपने समयमें अलभ्य वस्तुओंके संग्रहका मुझे शौक था। लेकिन अब वह प्यास नहीं रही। मेरे वे दिन नहीं रहे कि मैं खरीदनेका हौसला करूँ।

मैंने कहा—"आपका अनुमान सही नहीं है। मैं सौदा करनेके ख्यालसे यहाँ नहीं आया हूँ। मैं किसी निजी कामसे इधर आ गया था। आप मेरे पुराने ग्राहक ही नहीं बल्कि जर्मनीके मुख्य संग्रहकर्ताओंमें हैं। इसलिए आपका दर्शन करना मैंने अपना कर्त्तव्य समझा।" इन शब्दोंको सुनकर उसके चेहरेका भाव बदल गया। वह काठकी तरह अपनी जगहपर खड़ा था लेकिन उसका चेहरा दमक उठा। वह उस तरफ मुड़ा जिधर उसने अपनी पत्नीके होनेका अन्दाज किया था और बोला—"सुन रही हो।" इसके बाद मेरी ओर मुँह फेरकर उसने कहा—यह आपकी कृपा और उदारता है। आपने इतना कष्ट उठाकर यहाँतक आनेकी उदारता दिखायी और केवल मेरा परिचय प्राप्तकर आप यहाँसे वापस जायँगे, यह मेरे लिये कितने परितापका विषय होगा। मेरे पास कुछ संग्रह है उसे दिखाकर ही मैं सन्तोष करूँगा। शायद इनसे आपका कुछ मनोरञ्जन हो। आपने तो बर्लिन और वायनाके बड़े-बड़े संग्रहालयोंको देखा होगा। लेकिन इनका अपना भी कुछ मूल्य है। मैंने अपनी रुचिके अनुसार पचास सालमें यह संग्रह किया है। इनमें अवश्य ही कुछ ऐसी वस्तु होंगी जो आपको साधारणतः नहीं मिल सकेंगी।

इतना कहकर उसने अपनी पत्नीसे अलमारीकी कुञ्जी माँगी।

लेकिन इसी समय एक विचित्र घटना हो गयी। उनकी पत्नी जो अबतक

आनन्दसे हमलोगोंकी बातें सुन रही थीं, चौंक उठीं। वे हाथ जोड़कर खड़ी हो गयीं। और सिर हिलाकर कुछ इशारा किया। लेकिन मैं इन इशारोंका मतलब नहीं समझ सका। उसके बाद वह अपने पतिके पास गयीं और स्नेहसे उनके कन्धेपर हाथ रखकर बोलीं—क्या इन्हें दूसरे समय बुलाना अच्छा नहीं होगा। भोजनका समय भी हो गया है और इस दुर्दिनमें हमलोगोंके पास इतनी सामग्री नहीं कि अप्रत्याशित अतिथिका उचित सत्कार भोजनादिसे कर सकें। ये होटलमें भोजन कर लेंगे। शामको भोजन यहीं करेंगे। तबतक मेरी बेटी अन्नामेरिया भी आ जायगी। उसे इन वस्तुओंका अच्छा ज्ञान भी है।

बूढ़ीने फिर मेरी ओर सकरुण दृष्टिसे देखा। इतना तो मैं समझ ही गया कि वह चाहती है कि तत्काल मैं उन वस्तुओंको देखनेका आग्रह न करूँ। मैंने कहा—"गोल्डन स्टेगमें मुझे दावत खानी है। इसलिये इस समय तो क्षमा चाहता हूँ। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं तीन बजे आकर इन चीजोंको देखूँ। शामकी गाड़ीसे मुझे जाना है।"

जिस तरह बच्चेके हाथसे खिलौना छीन लेनेपर वह उदास हो जाता है उसी तरह उस वक्त बूढ़ा उदास हो गया। बोला—आपलोगोंके समयका बहुत मूल्य है तो भी मेरे ऊपर कुछ घण्टोंके लिये कृपा कीजियेगा। मुझे दो-तीन तस्वीरें ही आपको नहीं दिखलानी हैं बल्कि सत्ताईस अलबमोंका समूचा संग्रह। एक-से-एक प्राचीन और सजीव। यदि आप ठीक तीन बजे आ जायँ तो ६ बजेतक आपको फुरसत हो जायगी।

बूढ़ी मुझे पहुँचाने आयी। दरवाजेपर उसने मुझसे कहा—"आपके यहाँ आनेसे पहले यदि अन्नामेरिया होटलमें आपसे भेंट कर ले तो आपको कोई आपत्ति नहीं होगी? कई कारणोंसे, जिनकी चर्चा मैं इस समय नहीं कर सकती, यह जरूरी है।"

"आपत्ति क्या हो सकती है। दावतका तो मैंने बहाना किया है, मुझे तो होटलमें ही भोजन करना है। इसलिये भोजन करनेके बाद वे आ सकती हैं।"

मेरे वापस आनेके प्रायः एक घंटा बाद अन्नामेरिना होटलमें आयी। अधिक उम्रकी एक जीर्णशीर्ण महिला मेरे सामने आकर खड़ी हो गयी। उसके चेहरेसे परेशानी टपकती थी। उसकी परेशानी मिटानेके ख्यालसे मैंने कहा—यदि आपके पिता अधीर हो रहे हों तो मैं अभी आपके साथ चलनेके लिए तैयार हूँ, यद्यपि तीन बजनेमें अभी बहुत देर है। मेरी बात सुनकर उसकी घबराहट और भी बढ़ गयी। हकलाते हुए बोली—चलनेके पहले मैं आपसे दो-चार बातें कर लेना चाहती हूँ।

हम दोनों बैठ गये। लेकिन उसके मुँहसे शब्द नहीं निकल रहे थे। उसके दोनों होंठ काँप रहे थे। बड़ी कठिनाईसे उसने कहा—माँने मुझे आपके पास भेजा है। हम आपसे एक भीख चाहती हैं। आपके पहुँचते ही पिताजी अपना संग्रहालय आपको दिखाना चाहेंगे, लेकिन—लेकिन वे संग्रह····· वे संग्रह······अब हैं कहाँ?

इतना कहते-कहते वह रो पड़ी। अपनेको सम्हालकर उसने फिर कहना शुरू किया—मैं सारी बातें साफ-साफ आपके सामने रख देना चाहती हूँ। यह तो आपसे छिपा नहीं है कि बड़ा कठिन जमाना आ गया है। हमलोगोंका जीवन मुसीबतसे कट रहा है। युद्ध छिड़ जानेके बाद ही इनकी आँखें जाती रहीं। पहलेसे ही आँखें खराब हो रही थीं। पहली लड़ाइयोंमें इन्होंने नामवरी हासिल की थी। इसलिये इस बार भी उन्होंने मोर्चेपर जाना चाहा। उस समय वे सत्तर सालके हो चुके थे। भला सत्तर सालका बूढ़ा मोर्चेपर जाकर क्या करता? लेकिन जब हमलोगोंकी सेनाकी बाट रुक जानेकी खबर इन्हें मिली तो इनके दिलको बड़ी ठेस लगी और दोनों आँखें जाती रहीं। डाक्टरोंका कहना है कि उसी सदमेने उनकी आँखें खतम कर दीं। शरीरसे तो वे आज भी हट्टे-कट्टे हैं। १९१४ तक तो वे मीलों पैदल टहलते थे और पैदल ही शिकार खेलते थे। आँखोंके जानेके बाद उनके सुख और शान्तिके एकमात्र साधन ये संग्रह हैं। वे देख तो पाते नहीं तो भी उन्हें प्रतिदिन उलटते-पुलटते रहते हैं। प्रतिदिन तीसरे पहर उन अलबमोंको टेबुलपर रख दिया

जाता है और हाथोंसे टटोलकर वे प्रत्येकका आनन्द लेते हैं। और किसी चीजमें उनका मन नहीं लगता। नीलामी इश्तिहारोंको रोज-रोज पढ़वाकर सुनते हैं और इन वस्तुओंका मूल्य जितना ज्यादा बढ़ता जा रहा है उतने ही ज्यादा वे खुश होते हैं।

लेकिन इस वृत्तान्तका काला पहलू है और वही सुनाने मैं आयी हूँ। हम-लोगोंकी वास्तविक हालतका उन्हें कोई ज्ञान नहीं। वे नहीं जानते कि उनकी पेंशनसे अब जलपानका काम भी नहीं चल सकता। इसके अलावा हमलोगों-पर और भी भार है। मेरी बहनके पति वर्डूनमें मारे गये। उनके चार बच्चोंका भार भी हमीलोगोंपर है। इन बातोंको उनसे छिपाकर रखा गया है। जहाँ-तक सम्भव था हमलोगोंने खर्च कम करनेकी कोशिश की, तो भी हमलोगोंकी आमदनीसे खर्च चलना मुश्किल हो गया। हमलोग एक-एक करके घरकी दूसरी चीजें बेचने लगे। उनके संग्रहको हमलोगोंने छूआतक नहीं। लेकिन घरमें ज्यादा था ही क्या। क्योंकि जो कुछ वे कमाते थे उसका ज्यादा हिस्सा तो वे इन चित्रों और नकाशियोंपर ही खर्च कर डालते थे। नौबत यहाँतक आ गयी कि या तो हमलोग उन संग्रहोंको बेचें या भूखों मरें। हमलोगोंको उनसे पूछनेका साहस नहीं था। वे कभी भी राजी नहीं हो सकते थे। हम-लोगोंपर जो बीत रही थी उसका उन्हें क्या पता था। वे क्या जानते थे कि जर्मनी युद्धकी चक्कीमें पिस गया और उसने अल्साक लोरेन मित्रराष्ट्रोंके हवाले कर दिया। क्योंकि इस तरहकी खबरें हमलोग उनके कानोंतक नहीं पहुँचने देते।

पहली वस्तु बड़ी कीमती थी। दूकानदारने कई हजार मार्क उसके लिए हमलोगोंको दिये। हमलोगोंने समझा कि कई सालतक इतनी रकमसे हम-लोग निर्वाह कर लेंगे। लेकिन १९२२ और १९२३ में मार्ककी जो हालत हो गयी थी वह तो आप जानते ही हैं। हमलोगोंने सारा रुपया बंकमें जमा कर दिया था। दो महीनेमें ही सब कुछ स्वाहा हो गया। हमलोगोंको मजबूर होकर दूसरा चित्र बेचना पड़ा। दूकानदार हमेशा टाल-मटोल करता रहता।

हमलोगोंकी लाचारीसे लाभ उठाकर उसने हरएक वस्तुका जितना दाम लगाया उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं दिया। हमलोगोंने नीलामकी शरण ली लेकिन वहाँ भी हमलोग ठगे गये। डाक तो लाखों और करोड़ोंतक गयी लेकिन जबतक हम लोगोंको वे रकमें मिलीं तबतक नोटोंका मूल्य रद्दी कागजके बराबर भी नहीं रह गया था। इस तरह पेट पालनेके लिए उन संग्रहोंको इस तरह फेंका गया तो भी काम नहीं चला।

यही कारण था कि आज आपके अचानक आ जानेसे माँ घबरा गयीं। यदि उसी वक्त अलबम निकाले जाते तो हमलोगोंकी कलई खुल जाती। वे छूकर ही चित्रोंको पहचानते हैं। हमलोगोंने जिन चित्रोंको बेचा उनकी जगहपर उतनी ही मोटी और उसी प्रकारकी दफ्ती उन्हें धोखेमें रखनेके लिए लगा दी। इसलिए जब वे उसे हाथमें लेते हैं तो उन्हें कोई अन्तर नहीं जान पड़ता। एक-एककर वे उनपर हाथ फेरते हैं और गिनते जाते हैं। ऐसा करनेमें उन्हें वही आनन्द मिलता है मानो वे उन्हें देखते हों। उन वस्तुओं-का उचित मूल्य आँकनेवाला यहाँ कोई नहीं है। इसलिए वे किसीको दिखलाते नहीं। उन्हें इनसे इतना प्रेम है कि यदि उन्हें असली बात मालूम हो जाय तो उनका हृदय विदीर्ण हो जायगा और वे मर जायँगे।

इसलिये मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि वे उन चीजोंको आपको दिखलाने लगें तो आप उनके भ्रमको दूर करनेका यत्न नहीं करेंगे। क्योंकि उनके गायब हो जानेकी बात वह क्षणभरके लिये भी बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। हमलोगोंने उनके साथ अन्याय अवश्य किया है पर दूसरा चारा ही क्या था। किसी तरह प्राण तो रखना ही था। इन मासूम बच्चोंके सामने उन चित्रोंका कोई मूल्य नहीं था। लेकिन वे तो उन्हें छूकर और आप-ही-आप उनकी प्रशंसा करके ही जीवित हैं। आँख चली जानेके बादसे आज उनके जीवनका सबसे सुखका दिन होगा। किसी जानकारको इन्हें दिखलानेके लिये वे कितने उत्सुक रहते हैं! यदि आप हमलोगोंकी इस ठगीमें मददगार हों तो...... ।"

वह अपनी बात कितनी दीनतासे कह रही थी, मैं उसका वर्णन नहीं कर

सकता। सैंतीस सालके व्यवसायिक जीवनमें मैंने बहुतसे उतार चढ़ाव देखे थे। सैकड़ों ऐसे आदमियोंसे लेन देन करना पड़ा था जिन्हें मजबूर होकर अपने प्राणों-से भी प्रिय संग्रहोंको अलग करना पड़ा था, लेकिन मेरे दिलको उतनी चोट कभी भी नहीं लगी थी जितनी चोट इस करुण वृत्तान्तसे लगी।

मैं राजी हो गया। वह मुझे लेकर अपने घरकी ओर चली। रास्तेमें मुझे यह जानकर और भी विषाद हुआ कि उन गरीबोंको लोगोंने किस प्रकार ठगा है। कई चीजें तो उनके पास असाधारण थीं लेकिन काइयाँ दूकानदारोंने पानीके भाव इनसे उन्हें खरीद लिया। इसी लिये मैं और भी उनकी तरफ झुक गया। मेरे पैरोंकी आवाज सुनते ही वह मेरा स्वागत करनेके लिए अधीर हो उठा। वह घण्टोंसे मेरी प्रतीक्षामें उत्सुक बैठा था! .

हमलोगोंके पहुँचते ही बूढ़ीने मुस्कुराकर कहा — भोजनके बाद थोड़ी देर सोनेकी उनकी आदत है लेकिन आजकी खुशीमें वे उसे भी भूल गये। इतना कहकर उसने अपनी पुत्रीपर तीक्ष्ण दृष्टि डाली। उसके भावसे बूढ़ीने समझ लिया कि चिन्ताकी कोई बात नहीं है। अलबमोंका अम्बार टेबुलपर लगा था। बूढ़ेने मुझे टटोलकर पकड़ लिया और बगलमें बैठा लिया। बोला — अब हम-लोग काम शुरू कर दें। समय बहुत कम है और मुझे बहुत कुछ दिखलाना है। पहले अलबममें ड्यूरर्सके सद्गुणके चित्र हैं। पूरा सेट है। एक-से-एक बढ़कर है। आप स्वयं देख सकते हैं कि कितने सुन्दर हैं ये।

उसने अलबम खोलकर कहा—"हमलोग सबसे पहले अपोके लिप्से सिरीजसे ही आरम्भ करें।"

इतना कहकर उसने अलबममेंसे एक शादी दस्ती निकाली और मेरे सामने पेश किया। उसकी तरफ वह इतनी तन्मयतासे देख रहा था कि उसे देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि वह अन्धा है। यद्यपि उसका इस तरह देखना कल्पनामात्र था तो भी मुझे ऐसा मालूम हुआ कि वह उन्हें अच्छी तरह पहचानता है।

उसने कहा—ऐसा सुन्दर चित्र आपने कहीं देखा है? कितना उभाड़

है इसमें ! सभी अंग और उपांग बारीकीसे चित्रित किये गये हैं । इस तरहका एक चित्र ड्रेसडनमें भी है । मैंने अपने चित्रसे उसे मिलाया था । वह भी सुन्दर चित्र है, लेकिन इसके सामने वह फीका है । इसके अलावा मेरे पास इसका पूरा सेट है ।

इतना कहकर उसने दफ्तीको उलट दिया । मैं भी उसकी तरफ इस तरह झुक गया मानो सचमुच उसके पीछेकी लिखावट पढ़ रहा हूँ ।

उन सादी दफ्तियोंकी प्रशंसामें वह जो कुछ कह रहा था उन्हें सुनसुन कर मेरी आत्मा रो उठती थी । जब उसने अपनी अंगुली ठीक उस जगह रखी जहाँ पहलेके संग्रहकर्ताओंने वह लिखावट लिखी थी तो मैं काँप उठा । मुझे ऐसा मालूम हुआ कि उनकी प्रेतात्मा कब्रसे उठकर मेरे सामने आकर खड़ी हो गयी है । मेरे मुँहसे सहसा कुछ निकल जानेवाला ही था कि मेरी निगाह सामने खड़ी बूढ़ी और उसकी पुत्रीपर पड़ी । मैंने तुरत अपनेको सम्हाला और उनका काम करने लगा । बनावटी तारीफ करते हुए मैंने कहा—"आपका कहना बहुत ठीक है । यह चित्र अद्वितीय है ।"

वह खुशीसे फूल उठा । बोला—यह तो कुछ नहीं है, जरा इन दोनों चित्रोंको देखो । शोक और उन्मादका कैसा सुन्दर प्रतिरूप कलाकारने इन चित्रोंमें खड़ा किया है ! इसका मुकाबला कोई भी चित्र नहीं कर सकता । रंगमें आज भी वही ताजगी है । इसे देखकर लोग दाँतों तले अंगुली दबाने लगेंगे ।

मैं आपको अधिक तंग करना नहीं चाहता । इस तरह वह एक एक अलबम खोलता गया और मुझे दिखला दिखलाकर दो घण्टेतक लेक्चर देता गया । इस तरह चुपचाप बैठकर सादी दफ्तीको देखते रहना और उसका लेक्चर सुनते रहना और समय समयपर उसे खुश करनेके लिए झूठी प्रशंसा करते रहना, कितना कठिन काम था, इसका अनुमान आप सहजमें ही कर सकते हैं ।

इतनी देरमें केवल एक बार दुर्घटना होते होते बची । मुझे दिखलानेके लिये उसने एक चित्र उठाया । यह चित्र अवश्य ही बहुमूल्य रहा होगा,

लेकिन वह मुझमें बिक गया था। वह जोशके साथ चित्रकारकी कूँचियोंकी तारीफ कर रहा था। कुछ खास निशान दिखानेके लिये उसने उसपर अँगुलियाँ फेरीं। पर उसे वह हाथ नहीं आया। जिस उभाड़की वह खोजमें था वह वहाँ नहीं थी। उसके चेहरेपर उदासी छा गयी, उसके होंठ काँप गये। उसने कहा—मुझे धोखा हो रहा है। यह वही चित्र होगा। मेरे सिवा तो इन्हें कोई छूता नहीं, इसलिए वह बदल नहीं गया होगा।

मैंने दफ्ता अपने हाथमें ले ली और उसे इतमीनान दिलानेके लिये उस चित्रकी बारीकियोंके बारेमें अपनी याददास्तके अनुसार थोड़ा-बहुत कह गया।

इससे बूढ़ेको चिन्ता दूर हो गयी। मैं उन चित्रोंकी तारीफमें जितना ज्यादा कहता उसकी प्रसन्नता उतनी ही ज्यादा बढ़ती जाती। अन्तमें उसने अपनी पत्नी और बेटीसे कहा—यही उन चित्रोंके सच्चे पारखी हैं। तुमलोग इन संग्रहोंमें व्यय करनेके लिए मुझे सदा कोसती रही। यह सच है कि इन संग्रहोंके पीछे मैं इस तरह पागल हो रहा था कि पचास सालतक मैंने विला-सिताकी सामग्रीके लिए एक भी पैसा नहीं खर्च किया। जो भी मिला इनमें लगाया। हर टैकनर इनका मूल्य समझते हैं। मेरे मरनेके बाद ये सब चीजें तुमलोगोंके हाथ लगेंगी तब तुम्हें मालूम होगा कि इनकी बदौलत तुमलोग कितने सम्पन्न हो जाती हो। उस समय तुमलोग मेरे पागलपनकी तारीफ करोगी। लेकिन जबतक मैं जिन्दा हूँ, इनको इसी तरह रहने देना होगा। मेरे मरनेके बाद इनके हजारों ग्राहक निकल आवेंगे। उस वक्त तुमलोगोंको इन्हें बेंच ही देना पड़ेगा क्योंकि मेरे साथ ही मेरी पेंशन भी मर जायगी।

वह बोलता जाता था और उन अलबमोंपर हाथ फेरता जाता था। बहुत दिनोंसे—कमसे १९१४ ई० से तो अवश्य ही—मैंने जर्मनीमें इतना प्रसन्न किसीको नहीं देखा था। उसकी पत्नी और बेटी आँखोंमें आँसू भरकर उसका मुँह निहार रही थीं। लेकिन उस बूढ़ेको सन्तोष कहाँ था। वह तो अलबमके बाद अलबम उलटता जाता था और मुझसे उनकी प्रशंसा सुन-सुनकर फूला नहीं समाता था।

किसी तरह यह काण्ड खतम हुआ। हमलोग चाय पीने बैठे। तीन घण्टे-के कठिन परिश्रमसे भी बूढ़ा श्रान्त नहीं मालूम होता था। प्रत्युत उसमें नयी स्फूर्ति आ गयी थी। अब वह इन संग्रहोंका इतिहास बयान करने लगा कि किस तरह यह संग्रह वह बटोर सका। एक ही बातको वह दो-तीन बार दोहराता रहता था। उसकी बातोंका अन्त नहीं था। मेरी गाड़ीका वक्त हो रहा था। मैं अधीर हो रहा था। अपनी पत्नी और पुत्रीके बारबार कहनेपर ही कहीं वह मेरा पिण्ड छोड़ सका। मैं चलनेके लिए खड़ा हो गया। उसने मेरा दोनों हाथ अपने हाथोंमें ले लिया और कहा—आपके आगमनसे मुझे जो सुख मिला है उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। जिन्दगीमें कम-से-कम एक बार तो यह अवसर मिला कि मैं अपने संग्रहोंको ऐसे आदमीको दिखला सका जो इनका सच्चा मूल्य समझता है। आपकी इस मुलाकातको याद मैं अपने वसीयत-नामेमें लिखा जाऊँगा कि मेरे मरनेके बाद इन वस्तुओंके बेचनेका एकमात्र अधिकार आपको ही रहे।

उसने एक बार फिर उन अलबमोंपर हाथ फेरा और मुझसे बोला—वचन दो कि इनकी अच्छी तालिका बनाकर छपवा दोगे। मैं और कुछ नहीं चाहता।

मैंने उन दोनों महिलाओंकी ओर देखा। वे संयत भावसे वहाँ खड़ी थीं। मैंने उस असम्भव बालकके लिये उसे वचन दे दिया। उसका चेहरा खिल उठा। उसने मेरा हाथ दबाया।

उसकी पत्नी और पुत्री मुझे दरवाजेतक पहुँचाने आयीं। उन्हें कुछ कहनेका साहस नहीं था लेकिन उनकी आँखोंसे आँसूकी धारा बह रही थी। मेरी भी दशा कुछ वैसी ही थी। मैं यहाँ सौदा करने आया था। यहाँ आकर मैं उस जालमें पड़ गया जिसकी बदौलत एक अंधा बूढ़ा सुखी था। झूठ बोलना पाप है लेकिन इस अवसरपर झूठ बोलकर भी मैं खुश था।

घरसे बाहर निकलकर जब मैं सड़कपर आया तो बूढ़ेने खिड़की खोलकर मुझे पुकारा। वह मुझे देख नहीं सकता था लेकिन उसे यह अन्दाज था

कि मैं किस दिशाकी ओर जाऊँगा। उसकी प्रकाश-शून्य आँखें उसी तरफ मुड़ी थीं। उसने अपने शरीरको खिड़कीसे इतना ज्यादा बाहर निकाल दिया था कि उसके घरवालोंको उसके गिर पड़नेकी आशंका हो गयी और दोनोंने दो तरफसे उसे पकड़ लिया। उसने चिल्लाकर कहा—आपकी यात्रा सुखद हो, यही मेरी शुभ कामना है।

उसका चेहरा लड़कोंकी तरह प्रफुल्ल था। मैं उसे कभी भूल नहीं सकता। उसके हृदयमें जो भ्रान्त धारणा मैंने भर दी उससे उसका जीवन सुखी रहा।



खूनी आशा

बहुत दिनोंकी बात है वेनरेबुल पेड्रो आर्बुज डी एपिला सरगोसा मठके छठे महन्त एक दिन शामको सरगोसाके जेलके किसी गुप्त तहखानेमें उतरे। उनके साथ दो मशालची और एक जल्लाद था।

दूसरे ही क्षण एक भीमकाय दरवाजेकी जंजीर कड़क उठी और वे लोग दबे पाँव आगे बढ़े। तहखानेमें एक टिमटिमाता दीपक जल रहा था जिसके प्रकाशमें खूनके दागसे काली हो गयी बेंत मारनेकी टिकटी, पानी खौलानेका बर्तन तथा पत्थरका एक घर। साफ दिखायी देता था। एक कोनेमें सड़ी घासपर एक आदमी जंजीरसे जकड़ा पड़ा था। जंजीरका एक सिरा उसकी गर्दनसे बँधा था और दूसरा दीवारसे। उसे देखकर उसकी उम्रका कोई अन्दाज नहीं लगाया जा सकता था। उसके शरीरपर चीथड़े पड़े थे और उसकी सूरत एकदम डरावनी हो गयी थी।

कैदी अरगाँवका यहूदी था, उसका नाम था रबी असर अबरभनेल। सूदखोरी और गरीबोंके साथ जुल्मका उसपर अभियोग था। इस अपराध-के लिए उसपर सालभरसे भी अधिक समयसे जुल्म किया जा रहा था। इतनी कठोर यातनापर भी वह अपना काम छोड़नेके लिए तैयार नहीं था।

उसे अपने कुल और जातीयताका अभिमान था जैसा प्रत्येक यहूदीको हुआ करता है। तालमुदके अनुसार उसका जन्म ओथनीलके वंशमें हुआ था और इस तरह इजायलके अन्तिम जजकी पत्नी इपसिबोका वंशज वह था। इसी बुनियादपर इतना जुल्म बरदाश्त करनेके बाद भी उसकी हिम्मत नहीं टूटी थी।

इतनी कुलीन और पवित्र आत्माको अभीतक मुक्ति नहीं मिली, इस ख्यालसे वेनरेबुल पेड्रोकी आँखोंमें आँसू आ गये और उन्होंने भयसे थरथर काँपते हुए रबीसे यों कहा—

"पुत्र ! तुम्हें प्रसन्न होना चाहिये कि तुम्हारी वर्तमान यातनाओंका अन्त होने जा रहा है। तुम्हारे कठिन हठके कारण मुझे मजबूर होकर इतना कठोर बनना पड़ा था लेकिन एक भाईको ठीक रास्तेपर लानेके यत्नोंकी भी सीमा है। तुम बाँझ पेड़ हो, जिसमें कभी फल नहीं लग सकते। इसलिए तुम्हें जड़से खोदकर फेंक देना ही एकमात्र दवा रह गयी है। ईश्वर ही तुम्हारी आत्माकी खोज-खबर लेंगे। सम्भव है कि असली मौकेपर ही ईश्वरकी दयाकी तुमपर वर्षा हो। इसी आशापर हमलोगोंको आगे बढ़ना चाहिए। हमलोगोंको यह नया अनुभव नहीं है। तुम्हारी जातिसे दूसरी आशा हमलोग कर ही नहीं सकते। इसलिए बढ़ी हो। आज रातभर सुखकी नींद सो लो। कल तुम्हारा अन्तिम फैसला हो जायगा। कल तुम धधकती आगमें डाल दिये जाओगे। पुत्र ! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि उसकी लपटें दो-तीन घंटेमें धीरे धीरे अपने शिकारको खाती हैं क्योंकि हमलोग बलिके सिर और छातीमें भीगा वस्त्र लपेट देनेकी दया दिखलाते हैं। तुम्हारी तरह तैंतालीस आदमियोंकी कल बलि दी जायगी। तुम अन्तिम बलि होगे इसलिए तुम्हें प्रार्थना करने और ईश्वरकी पवित्र आत्मा अपने देवता अग्निदेवको प्रसन्न करनेका तुम्हें काफी समय मिल जायगा। उस अनन्त प्रकाशमें विश्वास रखकर सो जाओ।"

इतना कहकर उन्होंने उस अभागेको छातीसे लगा लिया। इसके बाद उसकी बेड़ियाँ खोल दी गयीं और वह उसी काल-कोठरीमें छोड़ दिया गया।

(२)

कठोर यातना सहते-सहते स्त्रीका सारा शरीर जर्जर हो गया था। उसका मुँह सूख गया था, होठोंपर पपड़े पड़ गये थे। वह उस दरवाजेकी बात सोचने लगा। क्या उसमें ताला बन्द है ? इसके साथ ही उसके मनमें अनेक विचार उठने लगे क्योंकि दरवाजेके छेदसे उसने लालटेनका क्षीण प्रकाश क्षणभरके लिए देखा था। उसके मनमें आशाके क्षीण प्रकाशका उदय हुआ। उसे पागलपन ही कहेंगे। बड़ी सावधानी और सतर्कतासे उसने हाथ लगाकर दरवाजेको अपनी

तरफ खींचा। दरवाजा खुल गया। मालूम होता है कि दाँतके अच्छी तरह बैठनेके पहले ही सन्तरीने कुंजी घुमा दी थी, इसलिए ताला बन्द नहीं हुआ था और दरवाजा खुला रह गया था।

रवीने झाँककर बाहरकी ओर देखा। अँधेरेमें आँखें गड़ाकर देखनेपर उसे अर्द्ध चन्द्राकार दीवारमें चक्करदार सीढ़ियाँ नजर आयीं और उसके सामने छः या सात सीढ़ी चढ़कर एक काले रंगकी दालान थी। उसके आगे लम्बा चौड़ा बरामदा था जिसके दो एक खिलान नीचेसे दिखायी देते थे।

दीवारसे सटकर वह आगेकी तरफ सरका और बरामदेके पास पहुँचा। बरामदा बहुत लम्बा था। एक चिराग उसमें टिमटिमा रहा था। छतसे झाड़ फानूस लटक रहे थे जो इस रोशनीमें मटमैलेसे दीखते थे। अँधेरेके कारण इसका दूसरा छोर दिखायी नहीं देता था। इतने बड़े बरामदेमें एक भी दरवाजा नहीं था। बायें तरफकी दीवारमें मोखे बने थे जो जालसे घेरे हुए थे। उनसे होकर संध्याका मन्द प्रकाश बरामदेके फर्शपर पड़ रहा था। चारों ओर निस्तब्धताका राज्य था। इस घने अन्धकारमें भी शायद मुक्तिका मार्ग मिल जाय। रवीकी सन्दिग्ध आशा बलवती हो उठी क्योंकि यही अन्तिम आशा थी।

बिना किसी सोच विचारके उसने आगे कदम बढ़ाया। वह मोखोंके पाससे होकर चला। वह अपनेको दीवारकी छायामें छिपाता चला जा रहा था। उसने अपनी साँसको इस तरह रोक रखा था कि उसकी आवाज भी किसीके कानमें न पड़ने पावे।

अचानक खड़ाऊँकी आवाज उसके कानमें पड़ी। वह काँप उठा। भयसे उसका कण्ठ सूख गया। उसकी आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। उसने अपना अन्त निकट समझा। मारे भयके वह अधमरा-सा हो रहा था। वह एक गड्ढेमें दबककर बैठ गया।

आवाज चिरपरिचित थी। वह व्यक्ति तेजीसे आगे बढ़ गया। उसके हाथमें पुष्ठ चीरनेका लोहेका पंजा था। उसका टोप पीछेकी तरफ लटक रहा था। वह तेजीसे आगे बढ़कर गायब हो गया। भयसे रवीकी इन्द्रियाँ शिथिल हो गयी थीं

उसके पैर उठते नहीं थे। एक घंटेके बाद उसके कदम उठ सके। पकड़े जानेपर उसपर और भी भयंकर जुल्म होने लगेंगे, इस ख्यालके आते ही उसेकी काल-कोठरीमें लौट जानेकी इच्छा हुई। लेकिन मुक्तिकी वही आशा फिर सामने आकर खड़ी हो गयी। वही आशा जो घोर से-घोर संकट-कालमें भी साथ नहीं छोड़ती। मुक्तिकी आशासे वह फिर रेंगने लगा। यातना और क्षुधासे उसका शरीर जर्जर हो गया था, भयसे वह थरथर काँप रहा था। वह आगे बढ़ता जाता था, लेकिन उस मनहूस बरामदेका कहीं अन्त नहीं था। शैतान-की आँतकी तरह वह बढ़ता ही जाता था। रवीने भी हिम्मत नहीं हारी। बिना रुके वह आगे बढ़ता गया और अँधेरेसे निकलकर भागनेका रास्ता आँखें फाड़-फाड़कर ढूँढ़ने लगा।

फिर पैरोंकी आवाज सुनायी पड़ी। लेकिन इस बार आवाज धीमी और गम्भीर थी। थोड़ी दूरीपर दो पहरेदारोंकी काली सूरतें उस मन्द प्रकाशमें दिखायी पड़ीं। वे सायँ-सायँ बातें कर रहे थे। उनकी चेष्टासे ऐसा मालूम पड़ता था मानो वे किसी गम्भीर समस्यापर बहस कर रहे हों।

उन्हें देखते ही रवीकी आँखें बन्द हो गयीं। उसका दिल इस तरह धड़कने लगा मानो वह फट जायगा। उसका सारा शरीर पसीनेसे लथपथ हो गया। हाँफता हुआ वह दीवारके कोनेमें सटकर खड़ा हो गया और अपने ईश्वरकी याद करने लगा।

बहस करते-करते वे दोनों उसके पास आ गये और लम्पके पास अचानक रुक गये। अपने साथीकी बातोंपर कान दिये हुए एकने रवीकी तरफ आँखें फाड़कर देखा। यद्यपि उसकी दृष्टि रवीपर नहीं पड़ी थी, लेकिन उसने ऐसा समझा कि साक्षात् शिवने अपनी तीसरी आँख खोल दी है और वह जलकर भस्म हुआ ही चाहता है। उसने समझा कि अब मेरी मृत्यु आ गयी। अब तो जिन्दा ही गाड़ दिया जाऊँगा। उसकी साँस रुक गयी, उसकी पलकें झपने लगीं। एक सन्तरी अचानक उससे टकरा गया। रवी भयसे काँप उठा। लेकिन सन्तरी बहसकी धुनमें इस कदर मस्त था कि उसकी निगाह रवीपर पड़ी हीन हीं।

उसी तरह बहस करते हुए वे दोनों उसी तरफ गये जिधरसे कैदी आया था। "उन लोगोंने मुझे नहीं देखा था", क्षणभरके लिए उसके मनमें यह विचार आया—"मैं मर चुका हूँ इसलिए मुझे कोई नहीं देख सकता।" लेकिन भयसे अभिभूत होकर वह तुरन्त चैतन्य हो उठा। अपने सामनेकी दीवारपर दृष्टि डालते ही उसे ऐसा मालूम हुआ मानो दो चमकीली आँखें उसे घूर रही हैं। अनावश्यक भयसे उसका सिर चकरा गया। उसने आगे हाथ बढ़ाया। दीवारको टटोला। वहाँ कुछ नहीं था। यह उसकी दुर्बल कल्पना थी।

वह तेजीसे आगे बढ़ा। उसे आशा थी कि मुक्तिका मार्ग उसे अवश्य मिल जायगा। हाथ, पैर तथा पेटसे जोर लगाकर वह आगे बढ़ने लगा। अब वह बरामदेके उस हिस्सेमें पहुँच गया था, जहाँ पूर्ण अन्धकार था।

अचानक उसके हाथमें ठण्ड लगी। यह हवाकी ठण्डक थी जो बरामदेके अन्तिम दरवाजेसे आ रही थी। उसने अपने मनमें कहा—भगवन्! यदि यह दरवाजा मुझे बाहर कर देता! आशाके उन्मादसे उसका शरीर चञ्चल हो उठा। निविड़ अन्धकारमें उसे कुछ दिखाई नहीं देता था, इसलिए उसने नीचेसे ऊपरतक उस दरवाजेको टटोल डाला। दरवाजा कहींसे बन्द नहीं था। वह उठ खड़ा हुआ। उसने धीरेसे दरवाजा हिलाया। वह मुँह खोलकर खड़ा हो गया।

देहरीपर खड़ा होकर रबीने सामनेकी ओर देखा। उसने निश्चिन्तताकी साँस ली। ईश्वरकी असीम दयाकी उसे याद हो आयी।

दरवाजेके बाद एक बगीचा था। आकाशमें तारे छिटक रहे थे। उसने अपनी मुक्ति सामने देखी! उसे जीवनकी आशा हो गयी। बागके बाद ही एक छोटी बस्ती थी जो पहाड़के किनारेतक फैली थी। पहाड़का नीला किनारा अन्तरिक्षसे बातें कर रहा था। वहाँ पहुँचते ही उसे मुक्तिका मार्ग मिल जायगा। रातभर वह नीबूके पेड़ोंके नीचे घूमेगा और उनकी सुगन्धका आनन्द लेगा। पहाड़में घुसते ही वह निश्चिन्त हो जायगा। उसने जी भरकर साफ और स्वच्छ हवाका पान किया। ताजी हवासे उसमें नयी स्फूर्ति आ गयी। उसके हृदयमें

ऐसा मालूम हुआ मानों 'लाजरस' आकर सामने खड़ा हो गया है। जिस दयामयने उसपर अपनी कृपाकी अपार वर्षा की है उसे धन्यवाद देनेके लिए उसने अपने दोनों हाथ श्रद्धासे फैला दिये।

उसे ऐसा मालूम पड़ा कि उसके हाथोंकी छाया उसके ही शरीरपर पड़ रही है। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह छाया उसे चारों ओरसे घेरकर छातीसे लगा रही है। उसने किसीकी छातीके दबावका भी अनुभव किया। उसके सामने एक लम्बी सूरत खड़ी थी। उसने स्थिरतासे उस सूरतपर अपनी नजर डाली। उसे देखते ही वह काँपने लगा और उसके होश उड़ गये।

वज्रपात! वह बड़े पादरीके ही बाहुपाशमें पड़ा था। बर्नरेबुल पेड्रो उसकी ओर स्थिर दृष्टिसे देख रहे थे। उनकी आँखोंमें आनन्दके आँसू उस गड़ेरियेके समान भरे थे जिसकी खोयी भेड़ उसे मिल गयी हो।

बड़े पादरीने उसे बड़े प्रेमसे अपने हृदयसे लगा लिया। यहूदी रबी उनके अँकवारमें पड़ा थरथर काँप रहा था। वह मन-ही-मन सोच रहा था—उस दिन शामसे जो कुछ नाटक खेला जा रहा था सबका अभिप्राय यही सूनी आशा थी। आशाकी गोदमें डालकर मुझे सतानेका यह सब स्वाँग था। उसी समय पादरीकी आवाज उसके कानमें पड़ी—

"पुत्र! क्या तुम्हारे लिए यह उचित था कि ठीक मुक्तिके अवसरपर ही तुम हमलोगोंको छोड़कर इस तरह चले जाना चाहते थे।"

गोधूलि

मार्चका महीना था, गोधूलिका समय, सूर्यकी अन्तिम किरणें पृथिवीको नमस्कार कर विदा हो चुकी थीं। सड़कोंपर म्युनिसिपैलिटीकी लालटेनें टिमटिमा रही थीं। उनके प्रकाशमें अँधेरा धीरे-धीरे लुप्तसा हो रहा था। सड़कपर प्रायः सन्नाटा था। कभी-कभी आने-जानेवालोंकी पगध्वनिसे आसपासकी शान्ति भंग हो जाती थी। नार्मन गोर्टस्की हाइड पार्ककी एक बेंचपर बैठा इस नीरवताका आनन्द ले रहा था। इधर-उधरकी बेंचोंपर और भी दो-चार लोग बैठे हुए थे।

उसका हृदय भी इसी तरहके आवरणसे ढँका हुआ था। पराजयकी यादने उसके हृदयपर अन्धकारका गहरा परदा डाल दिया था। इस उदासीके समय उसे उन लोगोंकी याद आने लगी जो लड़े और हार गये, जिनके भाग्य और मनोरथ न जाने कब धराशायी हो गये। लोगोंकी चकित आँखोंके सामने वे अब आनेवाले नहीं थे। यह वह समय था जब उनके फटे पुराने कपड़े, झुकी गर्दन तथा तेजहीन दृष्टिपर ध्यान भी नहीं दिया जा सकता था। किसीने ठीक ही कहा है—

पराजित राजाको लोगोंकी तीखी नजरोंका सामना करना पड़ेगा। क्योंकि मनुष्यका हृदय बड़ा ही कड़ुआ होता है।

इस गोधूलि वेलामें टहलनेवालोंको यह अच्छा नहीं लगा कि लोग उनकी ओर तरेर-तरेरकर देखें। इसलिए वे लोग एक-एककर आकर उन जगहोंपर बैठने लगे जिसे छोड़कर लोग उठ जाते थे। झाड़ियोंकी छायाकी उस तरफ रोशनीका तेज प्रकाश फैला हुआ था और लोगोंके आने-जानेकी पगध्वनि सुनायी पड़ती थी। रात्रिके फैलते अन्धकार को दूर करती हुई खिड़कियोंसे रोशनीकी चमक आ रही थी। वहाँ उनलोगोंकी चहल-पहल मालूम पड़ती थी जिन्हें जीवन-संग्राममें अभीतक पराजयका सामना नहीं करना पड़ा था। पार्ककी

एकान्त सड़ककी एक बेंचपर बैठा गोर्डस्वीके मस्तिष्कमें इसी तरहके चित्र उठते थे और विलीन हो जाते थे। उसका दिल बैठा हुआ था। जीवन संग्राममें वह पराजित हो गया था। रुपयोंकी चिन्ता उसे नहीं थी। यदि वह चाहता तो वह भी उन्हीं लोगोंकी तरह रास्तेके प्रकाश और धूमधाममें शामिल हो जाता जो अपने वैभवका आनन्द ले रहे थे या उसके लिए संघर्ष कर रहे थे। उसकी पराजयका कारण बहुत ही सूक्ष्म था। उसे जीवनमें बहुत कड़ुआ अनुभव हुआ था और उसका हृदय व्यथित था। उस आनन्दमें शामिल होनेकी उसकी लेश-मात्र भी इच्छा नहीं थी जो सड़कपर टहलनेवाले उस तरह ले रहे थे।

उसकी बगलकी बेंचपर एक अधेड़ भद्र पुरुष बैठे थे। उनके चेहरेसे सौम्यता टपकती थी लेकिन उनका चेहरा देखनेसे साफ प्रतीत होता था कि जवानीके दिनोंमें इनके व्यक्तित्वके सामने कितनोंने सिर झुकाया होगा। उनकी पोशाक बहुत साधारण नहीं थी कम-से-कम रोशनीके उस क्षीण प्रकाशमें उनकी असलियतका पता नहीं लगता था। लेकिन उनकी पोशाक देखकर यह कोई नहीं कह सकता था कि आज भी विलासिताका जीवन बितानेकी उनमें तृष्णा अवशेष रह गयी है। वह उन बड़े आदमियोंमेंसे थे जिनकी अब पूछ नहीं रह गयी थी। वह संसारके उन दुखियोंमें थे जिनकी दशापर अब किसीकी छाया नहीं आती थी। जब वह चलनेके लिए उठे तो गोर्डस्वीको ऐसा मालूम हुआ कि वह किसी साधारण मुहल्लेमें रहते हैं अथवा किसी ऐसे गन्दे मुहल्लेमें जहाँ किसी भी भले आदमीके लिए रहना कठिन है। वह आगे बढ़े और अन्धकारमें गायब हो गये। उनकी जगहपर उसी क्षण एक नवयुवक आकर बैठ गया। देखनेमें तो वह अवश्य सुन्दर था लेकिन उस अधेड़से ज्यादा प्रसन्नता उसके चेहरेपर नहीं थी। उस बेंचपर बैठते हुए उसने इस तरह कराहा मानो वह अपने हृदयकी व्यथा और संसारकी निर्दयता दोनोंको एक साथ ही प्रकट करना चाहता हो।

गोर्डस्वीने समझा कि इसने मुझे मुखातिब करनेके लिए ही अपनी व्यथा

व्यक्त करनेका प्रयास किया है। पूछ बैठा—"आपका मिजाज अच्छा नहीं मालूम होता।"

युवक उसकी ओर घूम पड़ा। अपनेको सम्हालते हुए उसने कहा—"यदि मेरी सी हालतमें आप भी होते तो आपकी भी यही दशा होती। मैंने अपने जीवनमें ऐसा खराब काम कभी नहीं किया था।"

गोर्टस्कीने चुप चाप सिर्फ "हाँ" कह दिया।

मैं आज ही आया। पैटागोनियन होटलमें ठहरनेवाला था। जब मैं वहाँ पहुँचा तो मुझे मालूम हुआ कि वह मकान तोड़कर गिरा दिया गया और उसकी जगह सिनेमा-भवन बन गया है। टैक्सीवालेने मुझे दूसरे होटलका नाम बताया। वह वहाँसे कुछ दूरीपर था। मैं वहीं गया। अपने घरवालोंको उसी होटलके पतेपर खत लिखकर साबुन खरीदने बाजार चला गया। मैं अपने साथ साबुन लाना भूल गया था और होटलका साबुन मैं इस्तेमाल करना पसन्द नहीं करता। साबुन खरीदकर मैं इधर-उधरकी सैर करने लगा। उसके बाद मैं होटलकी तरफ लौटा। इस वक्त मुझे याद पड़ी कि न तो मुझे उस होटलका नाम याद रहा और न उस सड़कका जिसपर वह है। लन्दनके समान इस शहरमें जिसका एक भी परिचित व्यक्ति न हो उसके लिए यह कैसा सुअवसर आ उपस्थित हुआ है। मैं अपने घरवालोंको तार देकर उस होटलका पता पूछ सकता हूँ, लेकिन कलसे पहले तो मेरा खत भी उन्हें नहीं मिलेगा, मेरी जेबमें एक पैसा भी नहीं है। मैं एक शिलिंग लेकर होटलसे निकला था। दस आनेका साबुन खरीदा। दो आने पैसे मेरे पास बचे हैं। ये दो आने लेकर मैं कहाँ जाऊँ और यह लम्बी रात कैसे काटूँ?

इतना कहकर वह क्षणभरके लिए चुप हो गया। फिर बोला—"आप समझते होंगे कि मैंने असम्भव बात कह डाली है।"

गोर्टस्कीने उत्तरमें कहा—इसमें असम्भव क्या है। मेरे जीवनमें भी एक बार इसी तरहकी घटना परदेशमें हो चुकी है। उस समय तो हमलोग दो आदमी थे और दोमेंसे किसीको ठहरनेकी जगहका नाम और पता याद

नहीं रहा। अचानक हमलोगोंको इतना याद पड़ा कि हमलोगोंका होटल नहरके किनारे है। हमलोगोंने नहर ढूँढ़ निकाला और उसीके किनारे-किनारे चलकर होटलका पता लगाया।"

मेरा वर्णन सुनकर युवक प्रसन्न हो उठा। उसने कहा—परदेशमें मैं इतनी चिन्ता कभी न करता। अपने देशके राजदूतके पास चला जाता और उनसे मदद ले लेता। लेकिन अपने देशके किसी शहरमें जब इस तरहकी विपन्न दशामें कोई पड़ जाता है तो उसकी कठिनाई बढ़ जाती है। यदि किसी सज्जनको मेरी बातोंपर विश्वास हो गया और उसने मेरी सहायता की तो ठीक है नहीं तो यह रात मुझे पुलपर काटनी पड़ेगी।

उसने इन अन्तिम शब्दोंपर इतना जोर दिया, मानो उसे आशा थी कि गोर्टस्बीका हृदय उतना उदार अवश्य होगा।

गोर्टस्बीने धीरेसे कहा—आपके कथनकी कमजोरी इसलिए साबित हो जाती है कि आप साबुन नहीं दिखला सकते।

युवक उठ खड़ा हुआ। अपने ओवरकोटकी जेब टटोलने लगा। झुंझलाकर बोला—"मालूम होता है कि वह कहीं गिर गया।"

गोर्टस्बी—आप बड़े असावधान मालूम पड़ते हैं। एक साथ ही आपने अपने होटलका पता और साबुन दोनों भुला दिया।

लेकिन वह युवक उसकी बात सुननेके लिए वहाँ ठहरा हुआ नहीं था। वह तो साबुन खोजनेके बहाने वहाँसे चलता बना था।

गोर्टस्बी अपने मनमें सोचने लगा—उसकी कहानीमें साबुनकी बात तो सबसे मार्केकी थी। लेकिन जरासाके लिये वह चूक गया और उसे इस तरह शर्मिंदा होना पड़ा। यदि वह अपने साथ एक बट्टी साबुन भी कागजमें सावधानीसे लपेटकर रख लिये होता तो वह अपने पेशेमें होशियार समझा जाता। जो इस तरहके व्यापारमें प्रवृत्त होना चाहता है उसका सावधान रहना ही बुद्धिमत्ताका काम है।

यही सोचता हुआ वह चलनेके लिए उठ खड़ा हुआ। उसी समय उसकी

निगाह किसी वस्तुपर पड़ी। उसने देखा कि कागजमें लपेटी कोई गोल-मटोल चीज जमीनपर पड़ी है। उसने सोचा—"अवश्य ही यह वही साबुनकी बट्टी है जो उस युवकके ओवरकोटकी जेबसे गिर पड़ी है।" गोर्टस्वी पार्कमें इधर-उधर उस युवकको खोजने लगा। वह हताश होकर लौटनेहीवाला था कि उसकी निगाह उस युवकपर पड़ी। वह ट्रामकी पटरीके पास खड़ा था मानो वह इसी चिन्तामें पड़ा हो कि रात वह कहाँ गुजारे, इसी पार्कमें या पुलपर?

गोर्टस्वी एक ही छलाँगमें उसके पास पहुँच गया। बोला—"आपकी कहानीका चश्मदीद गवाह मुझे मिल गया। यह देखिए वह मेरे हाथमें है।" इतना कहकर उसने मुट्ठी पसार दी। साबुनकी नयी टिकिया उसकी मुट्ठीमें थी। "जब आप बैठने लगे तभी यह गिर पड़ी होगी। आपके चले आनेके बाद यह जमीनपर पड़ी मिली। आपपर मैंने नाहक शक किया। मुझे इसका खेद है। लेकिन उस समय आपका पक्ष दुर्बल था। साबुनकी इस टिकियाने उसे सबल बना दिया। चूँकि मैंने आपसे सबूत माँगा था इसलिए सबूत मिल जानेपर मुझे आपकी सहायता भी करनी चाहिए। मैं समझता हूँ कि एक गिनीसे आपका काम चल जायगा।"

इतना कहकर गोर्टस्वीने उसके हाथपर एक गिनी रख दी।

युवकने चुपचाप गिनी अपनी जेबमें रख ली।

गोर्टस्वीने उसे अपना कार्ड देते हुए कहा—"यह मेरा नाम और पता है। इस सप्ताहमें किसी दिन भी रुपये लौटा सकते हो; और यह रहा आपका साबुन! इसे सावधानीसे रखो। इसने आपकी बड़ी सहायता की है।"

इसपर युवकने कहा—"भाग्यसे वह आपके हाथ लगा।" इसके बाद उसने दो शब्दोंमें गोर्टस्वीको धन्यवाद दिया और पुलकी तरफ चम्पत हुआ।

गोर्टस्वीने अपने मनमें कहा—"मेरे पहलेके व्यवहारसे उस बेचारेको जरूर कष्ट हुआ होगा। मुझे इस तरह किसीपर आक्षेप करनेमें जल्दीबाजीसे काम

नहीं लेना चाहिए। मेरी इस तुच्छ सहायतासे उसे बड़ी सान्त्वना मिलेगी।"

इसके बाद जब गोर्टस्की लौटने लगा तो उसने देखा कि वह अधेड़ भद्र व्यक्ति बेंचके आस-पास जमीन टटोल रहा है। उसने पूछा—कुछ खो गया है?

अधेड़—"साबुनकी एक टिकिया।"

तिरस्कृत प्रेम

बेलेव्यू बोर्डिंग हाउसके भोजनालयमें मिस लोमस और मि० सैण्डर्सन चुपचाप मछलियाँ खा रही थीं। ये दो ही अतिथि थे तो भी अलग अलग टेबुलपर बैठे थे। मिस लोमसकी उम्र पैंतीस-चालीसके भीतर थी। कद नाटा पीले भूरे बाल चेहरेपर गम्भीरता उसकी आकृतिकी खास विशेषता थी। वह रह-रहकर सामने गरजते समुद्रकी ओर उत्कण्ठासे देखती रहती थीं। काले काले बादल फ्रांसके समुद्री आकाशको घेरे हुए थे। काले तूफान रह-रहकर उठते थे। पतली धारमें पानी बरस जाता था। अक्टूबर खतम हो रहा था। बरसात साँस ले रही थी।

मि० सैण्डर्सन प्रकृतिकी इस दशाका निरूपण करना चाहते थे। तीन दिनमें वे यहाँकी अवस्थाका निरीक्षण कर रहे थे लेकिन इन तीन दिनोंमें साधारण शिष्टाचारके सिवा मिस लोमसने अपना मुँहतक नहीं खोला था। ऐसा मालूम होता था कि कोई अज्ञात पीड़ा या कसक उनके चित्तको चंचल और हृदयको उद्वेलित कर रही है। मि० सैण्डर्सन भी प्रसन्न नहीं थे। उनकी पत्नीका देहान्त हो गया था। पचपन या छप्पन सालकी उम्रमें पत्नीका वियोग उनके लिए अत्यन्त दुःखदायी था। चेहरा सुन्दर और बदन गठीला था तो भी वह देखनेमें उससे कुछ अधिक उम्रके प्रतीत होते थे। बेलेव्यू भी बहुत आकर्षक नहीं प्रतीत होता था। सड़े अन्नकी बदबू चारो ओर इस तरह फैल रही थी कि नाक नहीं दिया जाता था। ऐसे स्थानपर उनके लिए और अधिक रहना कठिन ही नहीं असम्भव था।

उनसे नहीं रहा गया। वे बोल ही पड़े। स्थिर भावसे उन्होंने कहा—मैं सोच रहा हूँ कि—

इससे आगे वे नहीं बढ़ सके। इसी समय दासी टेबुल साफ करने आयी। वे चुप हो गये और नमककी शीशीके साथ खेल करने लगे। मिस लोमसके

टेबुलका प्लेट वगैरह लेकर दासी चली गयी। जब वह उनकी तश्तरियाँ उठाने आयी तो उन्होंने उसीको लक्ष्य कर वह सब कह देना चाहा जो वे मिस टोमस-से कहना चाहते थे। उन्होंने कहा—मालूम होता है कि बरसातका आरम्भ हो गया।

दासी—शायद आप नहीं जानते, पतझड़का मौसिम यहाँ बहुत दिनोंतक रहता है।

उसने परिचितके समान बातें कहीं। इससे मि० सैण्डर्सनको बड़ी खुशी हुई। उसकी उम्र कोई ज्यादा नहीं थी। जब वह भोजनालयसे बाहर होने लगी मि० सैण्डर्सन टकटकी लगाकर उसे देखने लगे।

वह मटर, गोभी और आलू लेकर वापस आयी थी। मिस टोमसकी दृष्टि बराबर खिड़कीसे बाहरकी ओर रहती थी। दोनों फिर चुपचाप खाना खाने लगे। मि० टोमसका चेहरा भावना-रहित था। यंत्रकी भाँति वे भोजन करती जा रही थीं। भोजनके स्वाद और निःस्वादकी भी उन्हें परवा नहीं थी। उनके व्यक्तित्वसे सादगी टपकती थी। मि० सैण्डर्सनको उन्हें देख-देखकर विस्मय हो रहा था। "यह रमणी कौन है, क्या खाती है, इतनी तटस्थ क्यों है? इसकी निस्तब्धता तो अचरजमें डाल रही है।"

अन्तमें पुडिंगकी बारी आयी। मि० सैण्डर्सन उसे देख भी नहीं पाये थे कि मिस टोमसने उसे वापस कर दिया। अर्थात् पुडिंग परसे जानेके पहले ही मिस टोमस टेबुल परसे उठ गयीं। मि० सैण्डर्सनको कुछ कहनेका अवसर उन्होंने नहीं दिया। काफी आनेके पहले ही पानी बरसने लगा। चारों ओर अँधेरा छा गया, समुद्रकी लहरें डरावनी हो गयी। छहर-छहर पानी बरसने लगा। उस निविड़ अन्धकारमें पानीकी बूँदोंकी सफेदी ही दृष्टिगोचर हो रही थी।

उन्होंने दासीसे कहा—"बड़ा ही सुहावना समय है।"

दासी—क्या आप कहीं जाना चाहते हैं?

"कुछ कह नहीं सकता। यहाँके बारेमें मैं इतना कम जानता हूँ कि कुछ निश्चय नहीं कर सकता। तुम्हीं बताओ न ?"

दासी—जाकर सिनेमा देख आइये, या वर्षा बन्द होनेपर समुद्रके किनारे जाकर टहलिये। वह जगह मुझे बहुत पसन्द है। कैसी मोहक वहाँकी हवा है।

उसकी बातचीत दासीके समान नहीं थी। उसकी बोली मधुर थी। उसमें शिष्टता थी।

"क्या तुम बहुत दिनोंसे यहाँ हो ?"

मि० सैण्डर्सनके प्रश्नसे वह झुँझला उठी। उसके चेहरेपर शिकन आ गयी। बोली—"मेरे बारेमें पूछ रहे हैं। मैं श्रीमती हैरापकी कन्या हूँ।

मि० सैण्डर्सनने धृष्टताके लिए उससे क्षमा माँगी।

उसने कहा—मैंने पिछले अगस्तमें पढ़ना छोड़ा है। नौकरीकी तलाशमें हूँ।

वह सचमुच सुन्दर थी। उसके ललाट उन्नत थे। बाहु सुन्दर और चिकने थे। मि० सैण्डर्सनने उसकी ओर गौरसे देखकर कहा—"माफ करना। मैंने तुम्हारे चेहरेपर गौर नहीं किया था। तुम्हारा चेहरा तो तुम्हारी माँसे बहुत कुछ मिलता-जुलता है।"

वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। मि० सैण्डर्सनकी सारी उदासी जाती रही। वे भी हँसने लगे। दोनोंमें घनिष्ठता हो गयी।

"क्या तुम्हें दासीका काम पसन्द है ?"

उसने मुँह बनाकर कहा—"तुम दास होना पसन्द करोगे ?"

"क्या तुम घूमने नहीं जाती हो ?"

"जाती हूँ, लेकिन इस मौसिममें कौन कहाँ जायगा ?"

"यही तो मैं भी तुमसे जानना चाहता हूँ।"

मि० सैण्डर्सन काफी पीने लगे। युवती पानीका बरसना देखने लगी।

मि० सैण्डर्सनके मनमें आया—"गोली मारो इस वर्षाको, क्यों न हमलोग सिनेमा देखने जायँ।" बोले—"यदि मैं सिनेमामें चलूँ तो क्या तुम मेरे साथ चल सकोगी।"

"जरूर, सिनेमामें मेरा मन बहुत लगता है।"

"अच्छी बात है।" मि० सैण्डर्सनका जी हलका हो गया।

"इस उम्रमें भी मैं मिस लोमससे इतना नहीं कह सकता था।"

"यदि आप कहते भी तो वे साथ न जातीं ?"

"क्यों ?"

"मैं समझती हूँ कि वे पुरुष और स्त्रीका सहवास पसन्द नहीं करतीं। पवित्र प्रेममें उन्हें विश्वास नहीं है। वे दिन-रात अपनी पुस्तकोंमें आँख गड़ाये रहती हैं।" इसके बाद उसने कहा—"यदि मुझे तुम्हारे साथ सिनेमामें जाना है तो मैं अभी निकल जाती हूँ। सिनेमा-घरमें ही तुमसे मिलूँगी। ठीक है न ? इस बातका ढिंढोरा पीटनेसे क्या फायदा है कि मैं तुम्हारे साथ जा रही हूँ।"

मि० सैण्डर्सन—"इसे तुम्हीं अच्छी तरह समझ सकती हो।"

जब वह अपना ओवरकोट लेने गयी तो मि० लोमस हाथमें उपन्यास लिये दालानसे होकर बैठकमें जा रही थीं। वे उसी उदासीन भावसे चल रही थीं। उनकी दृष्टि सदा अन्तरिक्षकी तरफ अटकी रहती थीं। उनकी आँखें सदा कोई पीड़ा व्यक्त करती थीं। मि० सैण्डर्सनने सोचा—"इन्हें बदहजमीकी बीमारी तो नहीं है ?"

सिनेमाघर पहुँचते-पहुँचते वर्षा रुक गयी थी। नीले आकाशपर सुनहला सूर्य चमकने लगा था। शीतल बयार चल रही थी। उसने कहा—सिनेमा चलनेसे अच्छा तो समुद्रके किनारे टहलना होगा। चलो, हमलोग उधर ही टहलें।

मि० सैण्डर्सन राजी हो गये। दोनों समुद्रके किनारे-किनारे शहरसे बाहर चले गये। आकाश साफ होता चला जा रहा था। हवामें मिठास भर रही थी। सारी प्रकृति स्वच्छ और निर्मल प्रतीत होने लगी। नगरसे बाहर दलदलकी

विस्तृत भूमि थी। सारी भूमि हरी-भरी घासोंसे ढँकी थी। जगह-जगह रेंहके सफेद ढूहे नजर आते थे। कहीं-कहीं अधखिले फूल हवामें हिलोरें ले रहे थे। लड़कीके कदम तेज उठते थे। उसका सिर खुला था। उसके केश उसके चेहरेपर बिखर जाते थे। वह भोली-भाली लड़कियोंकी तरह अनाप-शनाप बकती जाती थी। कभी-कभी वह खड़ी हो जाती और दल-दलके उस पारकी वस्तुओं-को निर्देश कर कुछ कहती। मुझे ये बड़े ही प्रिय हैं।......प्रिय शब्दका वह बहुत प्रयोग करती। मि० सैण्डर्सन मन-ही-मन उसकी प्रशंसा करते जाते थे।

दोनोंने मिस लोमसकी चर्चा छेड़ दी।

मि० सैण्डर्सनने कहा—"उन्हें अपचकी शिकायत मालूम होती है।"

लड़की—मैं नहीं जानती। हाँ, जाड़में वे यहाँ आती हैं। यह चौथा साल है। गर्मीके दिनोंमें आनेवालोंकी भीड़ जब छँट जाती है तभी ये आती हैं और ईस्टरतक रहती हैं।

"और ?"

"और क्या ! वे दिन-रात पढ़ती रहती हैं !"

"उन्हें अपचका रोग है। मेरे मनमें तो यही आता है।"

इसके बाद यह प्रसंग उन लोगोंने छोड़ दिया। मि० सैण्डर्सनकी नस-नसमें आनन्दकी धारा बह रही थी। घरपर वे बजाज बने रहते थे। दिन-रात कपड़ोंके ढेरमें गड़े रहनेकी अपेक्षा इस स्वच्छन्द हवामें घूमना, समुद्रकी लहरोंपर आँखोंको तैरते रहने देना कितना आनन्दप्रद, कितना मोहक था। उन्होंने कहा—'यह निर्मल वायु मुझे बहुत ही लाभदायक सिद्ध हो रही है। पर तुमने मुझे अपना नाम तो बताया ही नहीं।"

"मेरा नाम फ्रेडा है।"

"और मिस लोमसका क्या नाम है ?"

"मुझे नहीं माळूम।"

कुछ आगे बढ़कर वे लोग समुद्रके किनारे बैठकर सुस्ताने लगे। चारों ओर हरी घास लहलहा रही थी और समुद्रका नीला जल हिलोरें ले रहा था। फ्रेडा

लेट गयी। मि० सैण्डर्सन कुहनीके सहारे उसकी बगलमें पड़ गये। उसके केशका रंग बालूके रंगसे मिलता-जुलता था। उसने दोनों हाथ फैला दिया था। उसकी पोशाक उसके शरीरसे सटसी गयी थी। उसकी आँखें मस्तीमें खुलतीं और बन्द होती थीं। उसके हावभाव इस तरहके थे मानो वह उन्हें निमंत्रण दे रही हो। मि० सैण्डर्सनके मनमें उन्मादकी भावना उदय होने लगी और उनमें चंचलता आने लगी। सेवहर तेजीसे भाग रहा था। ज्वार-उठने लगा था और समुद्रके जलपरकी रोशनी क्षीण होती जा रही थी। मि० सैण्डर्सन दो-तीन मिनटतक जहाजोंका आना-जाना उस क्षीण प्रकाशमें देखते रहे। उसके बाद उन्होंने घूमकर फ्रेडाकी ओर देखा। उसने उनकी ओर घूरकर देखा। उसकी आँखोंमें वही आह्वानकी भावना थी। इससे मि० सैण्डर्सनको व्यथा हुई।

उसने कहा—"तुम बड़े धीमे मालूम होते हो !"

अब मि० सैण्डर्सन अपनेपर काबू नहीं रख सके। वे उसकी तरफ झुक गये। उसने उनके गलेमें हाथ डाल दिया। उसकी कामुक प्रेरणाने उन्हें मदान्ध बना दिया। उन्होंने उसे चूम लिया। अभ्यास छूट जानेसे चुम्बन बहुत बढ़िया नहीं हो पाया था।

उसने धीरेसे कहा—"एक और। पर ऐसा हल्का नहीं।" उसने अपना अधर आगे बढ़ा दिया। उसकी आँखें बन्द हो गयीं।

रास्तेभर मि० सैण्डर्सनके मनमें एक ही बात उठ रही थी कि उन्हें सावधान होकर रहना चाहिए। उन्होंने अपने मनमें कहा—"अभी यह निरी बच्ची है।" लेकिन दोनों हाथ-में-हाथ देकर चलते रहे। फ्रेडा हमेशा अग्रसर रही।

शहरमें पहुँचते ही दोनों अलग हो गये। मि० सैण्डर्सन सूनापन और थकावटका अनुभव करने लगे। उस मोहक हवा तथा कामोद्दीपनका प्रभाव उनके मस्तिष्कपर बुरी तरह पड़ा था। डेरेपर लौटकर उन्होंने स्नान किया। तब कहीं स्वस्थ हुए।

भोजनके वक्त उसी तरह मिस लोमस उनके साथ थीं। वे उसी तरह खामोश थीं। फ्रेडाका कहीं पता नहीं था। शामका भोजन श्रीमती हेराप स्वयं परोस रही थीं। मिस लोमस उनसे भी नहीं बोलती थीं। खिड़कियाँ बन्द थीं। समुद्रका दृश्य उनके सामने नहीं था। इसलिए उनकी आँखें खिड़कीके दरवाजोंकी कारीगरी ही पर लगी रहती थीं। उनके लिए दोनों बातें समान थीं। यदि वे असली अन्तरिक्षको नहीं देख सकती थीं तो उसका मानसिक चित्र तो उनकी आँखोंके सामने था। उसी कल्पनापर उनकी आँखें स्थिर थीं।

भोजनके बहुत देर बाद फ्रेडाके दर्शन हुए। मिस लोमस सोने चली गयी थीं और सैण्डर्सन दालानमें बैठा कुछ पढ़ रहा था। फ्रेडा आकर उसके सामने चुपचाप खड़ी हो गयी। उसके होठोंपर सहज मुस्कान थी। उसने धीरेसे बैठकका दरवाजा खोला। दोनों भीतर चले गये। कमरेमें अँधेरा था। वह उससे लिपट गयी और चूमने लगी। वह कामोन्मत्त उससे लिपटा खड़ा रहा। चुम्बनका सारा व्यापार वही करती रही। वह बारबार चुम्बन करती रही और कसकर लिपटानेके लिए आग्रह करती रही। वह उसे कसकर अपने बाहुपाशमें दबा लेता और उसका मुँह चूम लेता। लेकिन उसके मनमें बराबर यह भावना उठती रही कि उसके लिए यह उचित नहीं है। वह उसके योग्य नहीं है।

कुछ देरतक यह व्यापार चलता रहा। इसके बाद दोनों बैठकेसे बाहर निकले। इसी समय सीढ़ियोंपर किसीके पैरकी आवाज सुनायी पड़ी। ऐसा मालूम हुआ कि तुरत कोई उधरसे गया है।

मि० सैण्डर्सनने कहा—"यह आवाज कैसी है। कोई हमलोगोंको देख रहा था क्या?"

"कुछ नहीं है। कोई देखता भी हो तो क्या कर लेगा।" क्षणमात्रके बाद दोनों एक दूसरेसे बिदा हो गये। फ्रेडा एकदम निश्चिन्त और बेपरवाह थी। ऊपर जाकर उसने देखा कि मिस लोमसके कमरेका दरवाजा अधखुला है।

(२)

दो दिनके बाद मिस लोमसने सैण्डर्सनसे बातें कीं। उस बीचमें वह दोनों दिन फ्रेडाको अपने साथ ले गया था। एक दिन सिनेमामें और एक दिन समुद्रके किनारे घूमने। जब सिनेमासे वह बाहर निकला तो मिस लोमसको वहाँ देखकर उसे अचम्भा हुआ। हाथमें छाता और अपना मनीबेग लटकाये वे पटरीपर इस तरह टहल रही थीं मानो वे कहीं जानेके लिए उतावली हों। सम्मानके-लिए वह अपना हैट उठानेवाला ही था कि वे सामनेवाली गलीमें घुस गयी और उन लोगोंको देखातक नहीं।

उसके दूसरे दिन उन्होंने मि० सैण्डर्सनसे बातें कीं। जलपानके बाद वह बैठा अखबार पढ़ रहा था। उसकी तबीयत बहुत अच्छी थी। वह मग्न होकर समाचारोंको पढ़ रहा था और फ्रेडाके साथ जो प्रणय व्यापार चल रहा था उसपर मन-ही-मन खुश हो रहा था। अचानक मिस लोमस उसके सामने आकर खड़ी हो गयीं। वे बातचीत करनेकी मुद्रामें थीं।

मिस लोमसके मुँह खोलनेके पहले उसने उनमें कुछ असाधारण बात देखी। उनकी दोनों मुट्ठियाँ बँधी थीं। उनकी आँखें चढ़ी थीं और वे झुँझलाई हुई थीं। इससे मि० सैण्डर्सन घबरासे गये। वे घबराकर उठ खड़े हुए। कुर्सीसे ठोकर लग गयी, अखबार हाथसे छूट गया। अपना चश्मा सम्हालते हुए वे खड़े हो गये।

मिस लोमस—मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ।

मि० सैण्डर्सन—आपकी बड़ी कृपा है। कहिये।

मिस लोमस चुप थीं। मि० सैण्डर्सन चुप थे। अन्तमें मिस लोमसने अपना मुँह खोला—आप उस लड़कीके साथ इधर-उधर जाते रहते हैं।" उसकी वाणीमें गम्भीरता थी।

मि० सैण्डर्सन कुछ कहना ही चाहते थे कि मिस लोमस पुनः बोल उठीं—"मैं इसे उचित नहीं समझती। इस तरह आँख बचाकर एक बालिकाको लेकर घूमना आपको शोभा नहीं देता।" उन्होंने बड़ा जोर देकर अपनी बात कह डाली।

मि० सैण्डर्सन—तब आप क्या चाहती हैं ?

क्षणभर वे चुप खड़ी रहीं। उनकी साँस जोरसे चल रही थी। मर्यादाका भाव उनके चारों ओर फूटा पड़ रहा था। उनकी आँखोंका भाव बदल गया था। घृणासे वे भरी थीं। वे बोल उठीं—"क्या मुझसे ही आप यह भी जानना चाहते हैं कि आपके लिए क्या उचित है।" इतना कहती हुई वे कमरेसे बाहर चली गयीं।

उनकी इन बातोंसे उसे बड़ी चिढ़ हुई। क्षणभरके लिए उसे क्रोध भी हो आया। उस दिन वह जान-बूझकर उसे अपने साथ ले गया। रास्तेमें उसने मिस लोमसकी बातें भी उससे कह डालीं। उत्तरमें फ्रेडाने कहा—"कुतिया कहींकी ! हमलोगोंके आनन्दमें विघ्न डालना चाहती है।"

इतना कहकर दोनों हँसने लगे।

उसी दिन भोजनके बाद दूसरा दृश्य उपस्थित हो गया। वह अखबार लेकर बैठकमें चला गया। उसे विश्वास था कि मिस लोमस चुप नहीं रहेंगी। वे कुछ छेड़छाड़ अवश्य करेंगी। मिस लोमस अपनी पुस्तकके साथ चिपटी बैठी थीं। उसके बैठते ही वे उठ खड़ी हुईं। और बड़ी नम्रतासे बोलीं—"आप मुझे क्षमा करेंगे। मैंने उस समय आपसे जो कुछ कहा उसके लिए मुझे खेद है।"

इससे आगे उन्होंने कुछ नहीं कहा। वे बड़ी गम्भीर थी। सारी घटना तमाशेकी तरह हो गयी। वह चुपचाप खड़ा था और वे बड़ी तत्परतासे उसे यह विश्वास दिलानेका यत्न कर रही थीं कि वे सचमुच इसे अनधिकार चर्चा समझती हैं और उन्हें इस तरह मि० सैण्डर्सनसे बातें नहीं करना चाहिये था।

उन्होंने कहा—"मैंने जो कुछ कहा वह मुझे नहीं कहना चाहिये था। दूसरोंके काममें मैं दखल देनेवाली कौन होती हूँ।"

पहली बार उसके चेहरेपर शिकन देखी गयी मानो वह अपने-आपको भर्त्सना दे रही थी।

मि० सैण्डर्सनने कहा—यदि आपका यह ख्याल ठीक है तो आपने क्यों यह अनधिकार चर्चा की। किसीके पीछे जासूसी करनेकी क्या जरूरत है।

वह इस तरह चुप खड़ी थी मानों सारी बातें सही थीं और वह कायल थी। लेकिन उसकी आँखोंका रंग नहीं बदला। वेदनाका भाव उनमें अवश्य झलक रहा था। वह उसकी तरफ नहीं देख सका।

मि० सैण्डर्सनको इससे ज्यादा कुछ कहना नहीं था। इसलिए वे कमरेसे बाहर हो गये, अपना ओवरकोट लिया और टहलने चले गये। वे देरतक समुद्रके किनारे टहलते रहे। जब वह लौटे तो बैठक खाली थी। वे वहीं बैठ गये और घंटी बजायी। उत्तरमें फ्रेडा आ पहुँची। मि० सैण्डर्सनने उससे कहा—"मैं मिस लोमसके बारेमें तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ। वह इस समय हैं कहाँ? क्या सो गयीं?"

"फ्रेडा—आठके बाद ही वह सोने चली गयीं।"

मि० सैण्डर्सन—सबेरेकी बातके लिए उसने इस समय मुझसे माफी माँगी।

वे लोग बहुत देरतक उसकी बातें करके हँसते रहे। अन्तमें मि० सैण्डर्सनने कहा—उसका दिल बुरा नहीं है। केवल उसे अपचकी बीमारी है, यही उसकी परेशानीका कारण है।

फ्रेडा—उसे कोई रोग नहीं है। तुम उसे अपने साथ सिनेमा ले जानेका प्रस्ताव क्यों नहीं करते! देखो, वह क्या उत्तर देती है।

"लेकिन तुमने कहा था कि उसे इन सब बातोंमें रुचि नहीं है।"

"यों ही मजाकके लिए एक बार पूछकर देखो तो।"

दूसरे दिन मि० सैण्डर्सनने मिस लोमससे यों ही प्रस्ताव कर ही तो दिया। वह राजी हो गयी। मि० सैण्डर्सनको विस्मय हुआ। भोजनके बाद रातको वे लोग गये भी। रास्तेमें जीवनकी निस्सारता और क्षणभंगुरताकी चर्चा करते हुए मि० सैण्डर्सनने कहा—हमलोग आपसमें हेलमेलसे क्यों न रहें। उसने उसकी बातोंको स्वीकार करते हुए केवल इतना ही कहा कि कभी-कभी जिन्दगी बोझ मालूम होने लगती है। इसके बाद दोनों चुप रहे। उस दिन मि० लोमसने सुन्दर

पोशाक पहन ली थी। कोटके नीचे उसने सिल्कका एक चुस्त जाकेट पहन रखा था। सिनेमामें बैठते ही उसने अपना कोट उतार दिया। सिल्कके जाकेटके नीचे उसका सीना साफ दिखायी देने लगा। उसका आकार सैण्डर्सन आकर्षक नहीं प्रतीत हुआ। रातको ठंडक काफी थी तो भी बीच-बीचमें वह गर्मीकी शिकायत करती रही। उसने महसूस किया कि वह बेचैन हो रही थी। उसने इसका इशारा भी किया।

उत्तरमें सैण्डर्सनने कहा—मुझे बेचैनी है! पर तमाशा बहुत ही अच्छा था।

बिदा होते समय उसने हाथ मिलाया तो विस्मयसे चौंक उठा। उसके हाथ गर्म हो रहे थे और पसीनेसे तर थे। मानो वह तपायी गयी हो।

दूसरे दिन तीसरे पहर फ्रेडाने सिनेमाकी घटनाके बारेमें उससे पूछा तो उसने कहा— मैं समझता हूँ कि अभिनयका उसपर बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ा। वह घबराती गयी थी और परेशान हो गयी थी।

फ्रेडा—वह तुमपर मरती है। तुम्हारा तीर उसपर चल गया है। वह तुम्हें अपना मजनूँ समझती है।

वे दोनों अकेले थे। उसने चारों ओर देखकर कहा— एक बार मुझे चूम लो, जल्दी करो।

इतना कहकर उसने स्वयं निर्दयतासे उसका चुम्बन किया और पूछा—सच सच कहो! तुम उसके मजनूँ बन रहे हो कि नहीं। यदि तुम फिर कभी उसके साथ गये तो मैं उससे डाह करने लगूँगी।

मि० सैण्डर्सनने कहा—इतनी परेशान न हो। जो एक बार उनके साथ जायगा वह फिर कभी उनके साथ जानेका नाम नहीं लेगा।

इसी समय खटका हुआ। वह घूमकर दरवाजेकी तरफ देखने लगा। डेहरीपर मिस लोमस खड़ी थीं। इस तरह पकड़ी जानेपर वहाँसे हटना उन्होंने उचित नहीं समझा। उन्होंने कुछ कहा भी नहीं। क्षणभरके बाद वे हटकर अपने कमरेमें चली गयीं।

फ्रेडा—हद हो गयी ! हद हो गयी !! इसीसे पता चलता है कि वह कैसी औरत है ।

मि० सैण्डर्सन—"अब तो सबका अन्त ही हो गया ।"

मि० सैण्डर्सन पन्द्रह दिन उस बोर्डिंगमें रहे । लेकिन मिस लोमसने उनसे बातचीत नहीं की । वे इस तरह उदासीन रहतीं मानो सैण्डर्सन नामका कोई आदमी वहाँ रहता ही नहीं । उनकी दिनचर्या वही पहलेकीसी निर्जीव हो गयी । वे चुपचाप भोजन करतीं, दोपहरके समय समुद्रकी तरफ देखतीं और शामको खिड़कीकी कारीगरीपर नजर रखतीं । दिनभर अपनी पुस्तकोंके साथ चिपकी रहतीं । इतने दिनोंमें केवल एक बार उनकी इस दिनचर्यामें अन्तर पड़ा । एक दिन वह बैठकमें बैठा अखबार पढ़ रहा था। नजर उठायी तो देखा कि मिस लोमस उसकी ओर देख रही हैं । उनके उस देखनेमें घृणा, सन्देह, निराशा और साथ-ही-साथ अर्चनाके भाव भी थे । मानो वह उनपर जादू करना चाहतीं हो । उसको नीरस आँखोंमें करुणा और ईर्षाके भाव थे ।

इसके दो दिन बाद मि० सैण्डर्सन विदा होनेकी तैयारी करने लगे । एक दिन पहले ही उन्होंने फ्रेडासे विदा ले ली । उनके चले जानेके प्रस्तावसे वह बहुत बिगड़ी । मौसिम बहुत ही सुहावना हो गया था, दोनों समुद्रके किनारे लेटे अँधेरेमें देरतक आलिंगन और चुम्बन करते रहे ।

फ्रेडाने कहा—तुम्हारे चले जानेपर मेरी क्या दशा होगी ? मैं जिन्दा नहीं रह सकूँगी । तुम मत जाओ नहीं तो मैं समुद्रमें डूब मरूँगी ।

मि० सैण्डर्सन—देखो बेवकूफीकी बातें न करो ।

"तुम्हारे बिना मैं एक दिन भी नहीं रह सकती । तुम क्यों जाओगे ?"

"न जाऊँगा तो खाऊँगा कहाँसे । सारा कारबार चौपट हो जायगा । मैं जल्दी आकर तुमसे मिलूँगा ।"

"तुम क्या आओगे ! तुम्हें मेरी याद भी नहीं रहेगी ।"

भला तुम्हें भूल सकूँगा मैं जरूर आऊँगा । मेरे सिरकी सौगन्ध खाकर कहो कि तुम कोई बेवकूफी न करोगी ।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उससे कसकर लिपट गयी और उसे चूमने लगी।

रास्तेभर मि० सैण्डर्सनके मनमें अनेक तरहकी बुरी आशंकाएँ उठती रहीं। वह उतावली लड़की थी, न-जाने इस तरह अकेली होनेपर वह क्या कर बैठे। जोशमें आकर कहीं वह प्राण न दे दे। इस तरहकी लड़कियाँ अकसर अनर्थ कर बैठती हैं। वह अपनेको धिक्कारता रहा और अपनी मूर्खतापर पछताता रहा।

सप्ताहभर बाद उसे उसका पत्र मिला। पत्र लम्बा-चौड़ा था। उसमें अखबारकी एक कतरन भी थी।

उस पत्र और उस कतरनसे मालूम हुआ कि उसने नहीं बल्कि मिस लोमसने आत्महत्या कर ली।

उसने लिखा था—"बड़ी भयानक बात हो गयी लेकिन मैं इसका कारण नहीं समझ सकी।"

मि० सैण्डर्सन भी कुछ नहीं समझ सके।

आत्माभिमान

उसके सामने कामका अम्बार पड़ा था । उसने हजार बार कोशिश की कि उधरसे मन हटाकर वह काममें लगाये, लेकिन उसकी सारी कोशिश बेकार जाती । रह-रहकर वही ख्याल उसके मनमें आता और उसे खिन्न बना देता । वह अपने मनमें कहता—"ओह ! वह दाई, मुझे किस तरह ठग रही है ।" वह घरकी पुरानी दाई थी। इस समय वही उसकी गृहस्थीकी देख-भाल करती थी । उसके कपड़े-लत्ते सम्हालती थी । उसने कभी अपनी चीजोंको सम्हालने या उनकी देख-रेखकी चिन्ता नहीं की थी । कमरेके कोनेमें आलमारी रखी थी। उसीमें कपड़े-लत्ते सम्हालकर वह रख देती और जब इन्हें कपड़े बदलने होते; आलमारी खोलते, धुली कमीज निकालते और पहन लेते । लेकिन इधर कुछ दिनोंसे वे बहुधा कमीजोंका अभाव अनुभव करने लगे थे । जो कमीज वे उठाते वही फटी मिलती । पूछनेपर दाई कह देती—"मालिक, सभी कमीजें फट गयी हैं, नयी खरीद लाइये ।" वह मन-ही-मन सोचता—"अभी हालमें ही तो मैं आधा दर्जन नयी कमीज खरीदकर ले आया था । क्या इतनी जल्दी वे फट गयीं ।" लेकिन वह चुपचाप बाजार जाता और फिर आधा दर्जन कमीज खरीदकर ले आता । धीरे-धीरे यही हालत दूसरी चीजोंकी भी होने लगी । कालर, टाई, जूते, साबुन तथा इसी तरहकी अन्य चीजें भी जल्दी-जल्दी फटने या खतम होने लगीं । उसकी समझमें नहीं आता था कि इतनी जल्दी ये बेकार क्योंकर हो जाती हैं । बाजारसे चीजें घरमें आते ही फटने और बेकार होने लगती थीं । जब कभी कपड़ा बदलनेके लिए वह आलमारी खोलता तो चीथड़ोंके ढेर उसे पड़े मिलते । उसकी समझमें नहीं आता था कि ये कब पुराने हुए और कब फट गये । लेकिन अपनी दाईपर वह इतना ज्यादा सहम खाता था कि उसकी मुँह खोलनेकी हिम्मत नहीं पड़ती थी ।

लेकिन यह बात उसके मनमें हमेशा खटकती रहती। कई बार उसके मनमें यह बात आयी कि वह लुटा जा रहा है। लेकिन एक दिनकी घटनाने उसकी शंकाको पुष्ट कर दिया। उस दिन उसे दावतमें जाना था। बहुत दिनोंसे वह दावत वगैरहमें नहीं गया था। उसके परिचितों और मित्रोंकी संख्या इतनी सीमित थी कि इस तरहके निमंत्रणोंपर उसे विस्मय होता। उसे प्रसन्नता अवश्य होती पर साथ ही वह डर भी जाता था। दावतमें जानेके लिए वह कपड़े सम्हालने लगा। उसने आलमारी खोली। एक-एक करके सभी कमीजोंको देख गया। पर एक भी बिना फटी नहीं मिली। किसीका गला फटा था तो किसीका कफ। उसने दाईको बुलाकर पूछा—कोई अच्छी कमीज भी है?

दाई क्षणभर चुप रही। बोली—मालिक! इन सड़ी गली कमीजोंकी कहाँतक मरम्मत की जाय। सभी चलनी हो गयी हैं। नयी खरीदनी होगी।

उसे याद था कि उसने हालमें ही नयी कमीजें खरीदी हैं लेकिन उसके सामने कोई सबूत नहीं था, इसलिए वह चुपचाप उठा और कपड़ा पहनकर बाजार जानेकी तैयारी करने लगा। अचानक कोटकी जेबमें हाथ चला गया। उसमें बहुतसे कागजके टुकड़े पड़े थे, उसने इस गरजसे उन्हें बाहर निकाला कि जो बेमतलब हों उन्हें वह रद्दीकी टोकरीमें डाल दें। एक-एककर वह उन्हें देखने लगा। पहला कागज खोलकर देखते ही वह मौन हो गया। वह उन कमीजों का कैशमेमो (नकद रसीद) थी, जिन्हें उसने सात हफ्ते पहले ही खरीदी थीं। सात ही हफ्ते पहले उसने आधा दर्जन कमीजें खरीदी थीं और आज एक की भी हालत अच्छी नहीं थी। इससे बढ़कर दूसरा सबूत और क्या हो सकता था।

वह बाजार नहीं गया बल्कि गम्भीर होकर अपने कमरेमें टहलने लगा। सारी पुरानी बातें उसे एक एक करके याद आने लगीं। उसकी पत्नीके देहान्त-के बादसे यही दाई उसकी गृहस्थी सँभालती आयी थी। उसने स्वप्नमें भी कल्पना नहीं की थी कि वह इस तरह ठगीका पेशा अख्तियार करेगी। लेकिन जब उस दिन अचानक उसे इस तरह ठगे जानेका सबूत मिल गया

तब तो वह चिन्तासे व्याकुल हो उठा। वह घरके चारों ओर दृष्टि दौड़ाने लगा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि घरकी बहुतसी चीजें गायब हैं जिनका उसके पास कोई हिसाब-किताब नहीं था। उसकी शंका बढ़ी। उसने उस आलमारीको खोला जिसमें उसने अपनी मृत पत्नीके कीमती कपड़े बन्द किये थे। आलमारी-को देखकर उसके होश उड़ गये। सभी कीमती कपड़े गायब थे। उनकी जगहपर कुछ फटे-पुराने कपड़े लपेटकर रखे हुए थे। जो कपड़े उसकी पत्नी छोड़ गयी थी उनमेंसे एकका भी पता नहीं था।

उसने चुपचाप आलमारी बन्द कर दी। इस बातको मनसे हटा देनेके लिए वह दूसरी बात सोचने लगा जैसे शामकी दावतकी बात। लेकिन यह बात रह-रहकर उसके सिरमें चक्कर काटने लगी। इतने दिनोंका एकान्तवास आज एकबारगी भीषण रूप धारणकर उसे सताने-सा लगा। ऐसी वेदना, ऐसी पीड़ा उसने आजतक कभी महसूस नहीं की थी। पत्नीके देहावसानके बाद उसे सुखकी नींद कभी नहीं आयी थी, लेकिन झपकी तो लग ही जाती थी। लेकिन आज तो उसे वह झपकी भी नसीब नहीं थी। उसे यही मालूम होता था मानो कोई अजनबी हाथ उसके सिरके नीचेसे उसकी तकिया खींचनेका यत्न कर रहा है। आज पहली बार उसने इतनी तीव्रताके साथ अपने विधुरपनका अनुभव किया। इतनी निराशा उसे उस समय भी नहीं हुई थी जब वह अपनी पत्नीको सदाके लिए धरतीमाताकी गोदमें सुलाकर लौटा था। आज वह क्लान्त था, बूढ़ा हो गया था। जीवनकी क्रूरता उसने आज पहले-पहल जानी!

इन सब बातोंके साथ ही उसके मनमें एक और प्रश्न उठने लगा। मेरी कमीजोंको चुराकर वह क्या करेगी। वे उसके किस कामके होंगे? उसी समय उसे याद हो आया—"उसका एक भतीजा भी तो है। उस भतीजेके पीछे वह पागलसी रहती है। उसकी चर्चा सदा इसकी जबानपर रहती है। उसकी प्रशंसा करते यह कभी नहीं अघाती। अभी उसी दिन तो वह मुझे उसका चित्र दिखला रही थी। घूँघरदार बाल, चिपटी नाक और गुर्रेदार मूँछें! लेकिन उसे देखकर वह घमण्डसे फूली नहीं समाती थी। तब तो जरूर ही मेरी चीजोंको

चुरा चुराकर उसने उसीके यहाँ भेजा होगा।" यह सोचते ही वह क्रोधसे जलने लगा। वह रसोई-घरकी तरफ दौड़कर गया और दाईको गालियाँ देने लगा। उसे इस तरह बरसते देखकर दाई चिग्घाड़ मारकर रोने लगी। उसकी आँखोंमें बरसात समा गया। वह उसे उसी तरह छोड़कर फिर अपने कमरेमें वापस चला आया।

उस दिन उसने दाईसे बातेंतक नहीं कीं। दाई दिनभर आँसू ढरकाती रही, मानो उसको बहुत बड़ी ठेस लगी हो। वह चारो ओर अपना रोना रोती रही कि बिना कसूर उसे डाँट-फटकार और गालियाँ मिलीं। तीसरे पहर वह अपनी अलमारियाँ सम्हालने बैठा। सभी चीजोंको बाहर निकाला और एक-एककर सहेजने लगा। उसने देखा कि बहुतसी चीजें गायब हैं। उनमें कितनी चीज तो ऐसी थीं जो कई पुश्तसे विरासतमें चली आ रही थीं। आज सहसा वे काफूरकी तरह उड़ गयी सी प्रतीत होने लगीं। करुणा और क्रोधसे वह अभिभूत हो गया। उसे रुलाई आने लगी।

वह अलमारियोंके बीच बैठा था। सामानोंका अम्बार उसके सामने लगा था। गर्द-गुब्बारसे उसका चेहरा ढँका हुआ था और उसके हाथमें एक मनीबेग था जिसके दोनों कोनेमें छेद हो गये थे। यह मनीबेग उसके पिताका था और पुरानी स्मृतिकी वस्तुओंमें यही एक बचा था। न जाने कितने दिनोंसे वह धीरे-धीरे सामानोंको खिसका रही थी कि आज एक भी सामान बचा नहीं रह गया है। वह क्रोधसे इस तरह पागल हो रहा था कि यदि उस समय उसके सामने वह आ जाती तो वह उसे पीटे बिना नहीं रह सकता था। वह आपेसे बाहर हो रहा था। लगा सोचने—"इसका क्या किया जाय? क्या इसे तुरत पुलिसके हवाले कर दूँ? लेकिन कलसे मेरा भोजन कौन बनावेगा! भोजन तो होटलमें भी कर लूँगा पर पानी कौन गरम करेगा। लालटेन कौन जलायेगा। बड़ी कठिनाईसे उसने इन चिन्ताओंको अपने मनसे दूर किया। कल मैं इस मामलेका फैसला करूँगा। कुछ न-कुछ तो करना ही होगा।" लेकिन एक बात उसके दिमागमें हरवक्त चक्कर लगाती रहती थी कि उसके बिना उसका काम

नहीं चल सकता। यह खयाल बोझकी तरह उसके सिरपर सवार था। यदि अपने चोरी गये सामानोंके लिए उसे दण्ड देनेका खयाल उसके हृदयमें ओर न मारता तो वह कभी मुर्दा हो गया होता।

इसी तरह बैठे बैठे शाम हो गयी। वह अपनी जगहसे उठा और रसोई-घरमें दाईके पास जाकर बोला—"इस चिट्ठीको लेकर अमुक व्यक्तिके पास जा और जवाब ले आ। यदि तुरत जवाब न मिले तो ठहर जाना। बैरन वापस मत चली आना।"

दाईने चुपचाप पुरजा ले लिया और मुँह फुलाये घरसे बाहर हो गयी।

दाईके चली जानेपर उसने घरका दरवाजा भीतरसे बन्द कर दिया और रसोई-घरमें घुसा। उसने उसकी अलमारीका हैण्डिल पकड़ा। उसका सारा शरीर काँपने लगा। उसे साहस नहीं हो रहा था कि इस तरह चोरकी भाँति वह उसकी अलमारी खोले। लेकिन इसीलिए तो उसने यह रचना की थी। उसने हिम्मत की। आलमारी खोलकर उसने भीतर झाँका तो अवाक् रह गया। सबसे ऊपरके खानेमें उसकी नयी छहों कमीजें थीं। जिस तरह उन्हें बाँधकर दूकानदारने उसे दी थीं उसी तरह बाँधकर वे रखी थीं। नीचेवाली दराजमें उसकी पत्नी तथा माताके अनेक जेवर थे। उसकी माँका हाथी-दाँत-वाला चित्र भी था। इस चित्रको देखकर उसने कहा—"इस कमबख्तको चित्र चुरानेकी क्या सूझी?" उसकी बहुत-सी खोई चीजें वहाँ उसे मिलीं। उसका कालर, टाई, जूता, ब्रश, मञ्जन, साबुन, तकियाका गिलाफ, सिल्ककी जाकेट, एक पुरानी पिस्तौल और चुरुट पीनेका एक पाइप। यह उन खोयी चीजोंका एक हिस्सामात्र था। ज्यादातर चीज तो उसने बहुत पहले ही अपने भतीजेके पास भेज दी थीं। उसका क्रोध तो कुछ शान्त हो गया था लेकिन क्षोभ और घृणासे वह उद्विग्न हो रहा था। उसने अपने मनमें कहा—"इसी तरह तो मेरी चीजें गायब होती हैं।...... लेकिन मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि यह दाई ऐसी निकलेगी।

एक एक करके वह सारी चीजें उठा लाया और अपने कमरेमें टेबुलपर फैला

दिया। खासी प्रदर्शिनी लग गयी। दाईकी अपनी चीजोंको उसी तरह अलमारीमें रहने दिया। और उसका दरवाजा खुला छोड़ दिया। अब उसके दिलमें यह ख्याल पैदा होने लगा कि अब दाई वापस आती होगी और उससे मुझे सब बात खोलकर कह देनी पड़ेगी। वह घबड़ासा गया और जल्दी जल्दी कपड़ा पहनने लगा। उसने अपने मनमें कहा—इसके लिए कल मैं उसे डाटूँगा। उसे पहले यह तो मालूम हो जाने दिया जाय कि उसकी चोरी पकड़ ली गयी। उसने एक नयी कमीज उठा ली और उसे वह पहचानने लगा। बड़ी कठिनाईसे वह उसे गलेके नीचे उतार सका कालर तो वह हजार कोशिश करनेपर भी नहीं लगा-सका। उसे दाईके आ जानेका बराबर भय बना रहा।

अन्तमें उसने एक पुरानी फटी कमीज ही पहन ली और ऊपरसे कपड़े पहनकर वह चोरकी भाँति घरसे बाहर हो गया। पानी बरस रहा था, तो भी वह घण्टेभर इधर उधर घूमता रहा, क्योंकि दावतके समयसे एक घण्टा पहले ही वह घरसे निकल गया था। दावतमें उसका मन नहीं लगता था। पुराने साथियोंसे बात-चीत करते उसे झपकी मालूम होती थी। वह एक कोनेमें अकेला खड़ा रहा और दावतकी धूम-धामपर मुस्कुराता रहा। उसी समय एक दूसरी चिन्ताने उसे आ घेरा जब उसने अपने कपड़ोंपर नजर दौड़ायी। फटी कमीजसे सूतके धागे लटक रहे थे। कोटमें कई जगह शिकन थी और जूतेकी सूरत तो देखते ही बनती थी। उसके मनमें यही आया कि यदि धरती फट जाती तो वह उसमें समा जाता। भीड़-भाड़से छिप जानेके लिए वह जगह खोजने लगा। चारो ओर नजर दौड़ायी लेकिन जिधर देखता उधर जोड़े ही खड़े दिखायी देते। वह बाहर चला जाना चाहता था। लेकिन वह भी निरापद नहीं था, क्योंकि सबकी निगाह उसीपर गड़ जायगी। वह पसीनेसे तर हो गया। वह खड़ा रहनेका स्वाँग रचने लगा लेकिन धीरे-धीरे दरवाजेकी तरफ बढ़ने लगा ताकि बिना किसीकी नजर पड़े वह निकल जाय। बद-किस्मतीसे इसी समय एक पुराने साथीसे भेंट हो गयी। स्कूलमें दोनों साथ ही पढ़ते थे। उसकी परीशानी और भी बढ़ गयी। उससे वह बड़े बेतुके ढंगसे मिला,

और अनाप-शनाप कह गया। उसकी बातोंसे चिढ़कर वह उसे छोड़कर चला गया। उसे शान्ति मिली। अब वह यह देखने लगा कि दरवाजा उससे कितनी दूरपर है। किसी तरह उसे बाहर निकल जानेका मौका मिला। वह सीधे घरकी तरफ गया। आधी रात हो चली थी।

रास्तेमें दाईकी याद फिर उसके सिरमें चक्कर मारने लगी। वह तेजीसे चलता जाता था और अपने मनमें स्थिर करता जाता था कि वह उससे क्या कहेगा। डाँट-फटकार और अन्तमें मुआफीकी सारी शब्दावली उसने गढ़ डाली। अन्तमें उसे मुआफ कर देनेका ही उसने निश्चय कर लिया था। उसे घरसे निकाल देनेका कतई विचार नहीं था। "दाई रोएगी और ऐसी हरकत न करनेका वचन देगी। मैं चुपचाप उसकी सफाईकी बातें सुनता रहूँगा। अन्तमें गम्भीर होकर कहूँगा, देखो, इस बार तो मैं तुम्हें क्षमा कर देता हूँ पर फिर ऐसा काम कभी मत करना। मैं बूढ़ा आदमी हूँ। इस घरमें तुम्हारी जिन्दगी बीत गयी है। थोड़े दिनके लिए अपना ईमान क्यों बिगाड़ती हो। इज्जतके साथ निबाह लेना चाहिए।"

इसी उधेड़-बुनमें वह इतना तन्मय था कि उसे पता भी न लगा और वह अपने घरके सामने पहुँच गया। दरवाजा खोलकर वह भीतर गया। दाईकी कोठरीमें चिराग टिमटिमा रहा था। उसने खिड़कीसे झाँककर भीतर देखा और सन्न हो गया। दाईकी आँखें रोते-रोते सूज गयी थीं, उसका चेहरा लाल हो रहा था और वह अपने कपड़ोंको ट्रंकमें भर रही थी। वह भयभीत हो गया। यह ट्रंक क्यों? क्या दाई यह घर छोड़ रही है? भावी आशंकासे वह काँप उठा, घबराहट और चिन्तासे अभिभूत वह दबे पाँव घरके अन्दर घुसा।

जिन सामानोंको उसने दाईकी अलमारीसे बरामद किया था वे सब उसी तरह टेबुलपर पड़े थे। उसने उन्हें देखा लेकिन उन्हें पाकर वह जरा भी खुश नहीं था। "मैंने समझा! दाईको मालूम हो गया है कि उसकी चोरी पकड़ी गयी है और अब वह निकाल बाहर की जायगी। इसीलिए वह अपने कपड़े-लत्ते समेट रही है। अच्छी बात है। रातभर मैं उसे इसी तरह रहने

दूँगा मैं सवेरे उससे बातें करूँगा। सम्भव है इसी वक्त वह आकर मुझसे माफी माँगे। वह मेरे सामने आते ही रो पड़ेगी, मेरे पैरों पड़ेगी और माफी माँगेगी। मैं कहूँगा, हो गया! मैंने तुम्हें माफ किया। तुम्हें जानेकी जरूरत नहीं है।"

इसी प्रतीक्षामें वह बैठा रहा। घरमें निस्तब्धता थी। उसने दाईके पैरोंकी आवाज सुनी। ट्रंकके बन्द होनेका शब्द सुना। उसके बाद फिर सन्नाटा! यह क्या! वह घबराकर खड़ा हो गया और सुनने लगा। किसीके चिल्लानेकी आवाज थी। पर ऐसी आवाज तो मनुष्यकी नहीं हुआ करती। वह आवाज घिग्घी बाँधकर रोनेमें बदल गयी। उसके बाद जमीनपर घुटने टेकने और सिसकनेकी आवाज सुनायी पड़ी। दाई रो रही थी। उसने क्या सोचा था और क्या हो रहा था। उसका दिल धड़कने लगा। वह चुपचाप सुनने लगा। रोनेके सिवा कोई आवाज उसे नहीं सुनायी पड़ी। उसने सोचा कि दाई उससे माफी माँगने आती ही होगी।

अपनेको स्थिर करनेके लिए वह कमरेमें टहलने लगा लेकिन दाईका कहीं पता नहीं था। बीच-बीचमें वह खड़ा हो जाता था और उधर कान लगाकर सुननेका यत्न करता था। उसकी सिसकी बीच-बीचमें गला फाड़कर रोनेमें बदल जाती थी। यह डरावनी निराशा उसे और भी बुरी मालूम होने लगी। उसने अपने मनमें सोचा—मैं खुद उसके पास जाकर कहता हूँ—इससे तुम्हें सबक लेना चाहिये। रोना-धोना बन्द करो। मैं यह सब भूल जाऊँगा, लेकिन अबसे ऐसा मत करना।

अचानक जोरसे धक्का लगा और दरवाजा खुला। देहरीपर दाई खड़ी थी और दहाड़ मारकर रो रही थी। रोनेसे उसकी आँखें सूज गयी थीं। उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने हाँफते हुए कहा—दाई!

दाई बरस पड़ी—यही मेरे लिए इनाम मिला है! आपकी बड़ी कृपा है। इसके लिए हजारों धन्यवाद! मानो मैं चोर थी! शर्मसे मैं मरी जा रही हूँ!"

उसने घबराकर कहा—लेकिन तुमने ये सारी चीजें चुरायी थीं। बोलो, क्या कहती हो ?

लेकिन उसे उसकी बातें सुननेकी फुरसत नहीं थी। वह बकती रही—इतनी शर्मिन्दगी उठाकर कौन रहना चाहेगा। मेरी अलमारीकी तलाशी ली गयी। मानो मैं खानाबदोश थी। आपके लिए यह कभी भी उचित नहीं था कि आप इस तरह मेरा निरादर करते। मैंने मरते दमतक ऐसी आशा आपसे नहीं की थी। मैं जरूर चोर हूँ! मैं जरूर चोर हूँ! आपने मेरे कुलवंशका भी ख्याल नहीं किया! मुझे चोर करार दे दिया।

इतना कहकर वह बिलख-बिलखकर रोने लगी।

उसका सारा रोष खतम हो चुका था। उसने धीरेसे कहा :—पर सोचो तो सही ये चीजें तुम्हारी अलमारीमें कैसे गयीं ? ये चीजें तुम्हारी हैं या मेरी ? बोलो ?

उसने सिसकते हुए कहा :—मुझे कुछ कहना सुनना नहीं है। भगवान! कितनी शर्मकी बात है। मानो मैं खानाबदोश थी, लगे मेरी अलमारीकी तलाशी लेने! अब मैं इस घरमें क्षणभरके लिए भी नहीं ठहर सकती। मैं इसी समय अपना रास्ता लूँगी।

उसे रोकनेकी चेष्टा करते हुए उसने कहा:—देखो, मैं तुम्हें निकालना नहीं चाहता। तुम जैसे रहती थी वैसे ही रहो। जो होना था, हो गया। इस सम्बन्धमें मैंने तुम्हें एक शब्द भी नहीं कहा है। रोना-धोना बन्द करो।

रोनेसे दाईका गला पड़ गया था। उसने कहा:—किसी दूसरेको रख लीजिये। मैं सवेरेतक भी यहाँ रहनेके लिए तैयार नहीं हूँ। मैं कुतिया नहीं हूँ कि इतनी दुर्दशाके बाद भी यहाँ पड़ी रहूँगी। हजारों रुपया दो तो भी नहीं रहूँगी। मैं रातभर पटरीपर पड़ी रहना पसन्द करूँगी।

उसे शान्त करनेकी चेष्टा करते हुए उसने कहा:—आखिर, इतना क्रोध क्यों ? मैंने तो कुछ कहा नहीं है। यह तो तुम इनकार नहीं—

उसने दर्पसे कहा:—'भला मुझे कैसे चोट पहुँच सकती है! मुझे चोर

बना दिया। मेरी अलमारीकी तलाशी ली। तब भी मुझे चोट नहीं पहुँची! और यह मैं चुपचाप बरदाश्त कर लूँ? मुझसे यह नहीं हो सकता। आजतक किसीने मेरा इस तरह अपमान नहीं किया। मैं कूड़ा कतवार नहीं हूँ।" इतना कहकर वह जोरसे रो पड़ी और कमरेसे बाहर हो गयी।

वह अवाक् और किंकर्तव्यविमूढ़ था। कहाँ तो वह पश्चात्तापकी आशा लेकर बैठा था, कहाँ उसने यह काण्ड उपस्थित कर दिया। विचित्र बात है! वह ढिटाईसे चोरी करती रही है। जब मैंने उसकी चोरी पकड़ ली तो उसका अपमान हो गया। अपनी करतूतके लिए शर्म तो उसे नहीं आयी। उलटे शेखी बघारने लगी। क्या वह पागल तो नहीं हो गयी है?

ज्यों-ज्यों उसके क्रोधका वेग उतरने लगा त्यों-त्यों उसे पछतावा होने लगा। उसने अपने मनमें कहा:—हरएक आदमीमें कमजोरी होती है! लेकिन क्या कोई उनकी ओर अँगुली दिखाकर उन्हें चिढ़ाता है? व्यसनोंके दलदलमें फँसा हुआ मनुष्य भी अपनेको सच्चरित्र समझता रहता है। वह अपने आत्माभिमानको उसी तरह अछूता रखनेका यत्न करता है। उसकी बुराईकी तरफ आपने अँगुली उठाई नहीं कि वह तिलमिला उठता है और आपसे घृणा करने लगता है। जब आप किसी दुराचारीकी भर्त्सना करने लगते हैं तो वह पीड़ित हो जाता है और आप पीड़ितकी भर्त्सनाके दोषी बन जाते हैं।

दाईकी कोठरीसे उसी तरह रोने-धोनेकी आवाज आती रही। उसने भीतर जाना चाहा, लेकिन दरवाजा अन्दरसे बन्द था। वह बाहर खड़ा होकर उसे समझाने-बुझाने, तथा शान्त करनेकी चेष्टा करता रहा। लेकिन जितना ही वह समझाता, दाईका रोना उतना ही बढ़ता जाता था। लाचार होकर वह अपने कमरेमें लौट गया। कमरेमें चोरीके वे सामान उसी तरह पड़े थे। सभी चीजें वहाँ मौजूद थीं। वह उनपर हाथ फेरने लगा, लेकिन उसे कोई सुख नहीं मिलता था। मानो इन्हें पाकर भी उसने अपना बहुत कुछ खो दिया हो।

बाप

सूर्यकी सुनहली किरणें कज्जाकोंके उस गाँवपर नाच रही थीं। वह गाँव डान नदीके किनारेपर बसा था। एक दिन मुझे वहींसे नदी पार करना पड़ा। घाटपर पहुँचनेके लिए रेतीला मैदान पार करना पड़ता था। रास्तेके दोनों तरफ झाऊके पेड़ उगे थे। उनमेंसे सड़ी बदबू आ रही थी।

घाटपर नाव बँधी थी। उसके पेटमें पानी भरा हुआ था। डाँड़ और पतवार इधर उधर अस्तव्यस्त पड़े थे। मल्लाह पानी बाहर फेंक रहा था। पैरकी आहट पाकर उसने सिर ऊपर उठाया। मेरी ओर उदासीसे देखकर पूछा :—क्या पार जाना है? एक मिनटमें नाव तैयार हो जायगी। आप जरा विश्राम करें मैं तुरत ठीक किये लेता हूँ।

"क्या हम दोनों मिलकर नाव पार ले चल सकेंगे?"

"परिश्रम करना पड़ेगा। थोड़ी देरमें शाम हो जायगी। सम्भव है इसी बीच एकाध मुसाफिर और आ जायँ।" इतना कहकर उसने फिर एक बार मेरी ओर देखा और कहा :—आप तो यहाँके बाशिन्दा नहीं मालूम पड़ते? आप कहाँसे आ रहे हैं?

'फौजमेंसे।"

उसने अपनी टोपी उतारकर नावपर रखी, अपनी जटाके समान कजाकी-बालोंको पीछे हटाया, और दाँत निपोड़कर पूछा—

"इस समय शान्ति है, इसले छुट्टीपर घर आ रहे हैं?"

"नहीं, हमलोगोंको फुरसत मिल गयी। इस श्रेणीके सैनिकोंकी अब जरूरत नहीं रही।"

"आप बड़े ही भाग्यवान हैं। आपका ईमान साफ है।"

हमलोग नावपर बैठ गये। हमलोगोंको लेकर नाव आगे बढ़ी। किनारेके

पेड़ोंकी जड़ें नदीके करारसे बाहर निकल आयी। उनमें शाखें और हरी-हरी पत्तियाँ निकल आयी थीं और वे झुरमुटसे बन गये थे। इनसे टकराकर पानी कल-कल करता बह रहा था। मल्लाहका पैर खुला था। उसकी मोटी नसें और पुट्ठा इस उम्रमें भी तगड़ा था। उसकी बाँह भी उसी प्रकार हृष्टपुष्ट थी। बोड़पर उसकी अँगुलियाँ फूली हुई थीं। लेकिन उसकी गर्दन झुक गयी थी। इसलिए नाव खेनेमें उसे दिक्कत हो रही थी। लेकिन उसका डाँड़ बड़ी तेजीसे उठता और गिरता था और पानीको तीखा चीरता था।

वह समान रूपसे डाँड़ चलाता चला जाता था। न मैंने उसे थकते देखा और न उसकी साँस फूलते सुना। उसके शरीरसे सड़े पसीने और तम्बाकूकी बदबू आरही थी। यकायक उसने अपने डाँड़को झुककर देखा और मुझसे बोला—"आगे बढ़नेका लक्षणतो नहीं दिखायी देता नाव इन जड़ोंमें फँस गयी मालूम होती है। बड़ा मुश्किल हुआ।" इसी समय पानीका एक जबर्दस्त धक्का लगा। नाव चक्कर खाकर चली गयी और उन्हीं शाखोंकी तरफ बह निकली।

नाव वहीं जा कर फँस गयी। डाँड़ टूट गये। नावकी पेंदीमें छेद हो गया और उसमें पानीके बुलबुले उठने लगे। वह रात हमलोगोंको पेड़ोंपर बितानी पड़ी। मल्लाहने अपनी टाँगें पेड़से बाँध दीऔर मेरे निकट हो रहा। वह चुपचाप हुक्का गुड़गुड़ाने लगा और जंगली हंसोंकी फड़फड़ाहट सुनने लगा जो हमलोगोंके सिरपर ही थे। उसने कहा—तब आप घर जा रहे हैं। आपकी माता उत्सुकतासे आपकी राह देखती होंगी। उनका बेटा, उनकी बुढ़ौतीका सहारा घर आ रहा है। उन्हें कितना सुख मिलेगा। उनका हृदय कितना प्रफुल्लित होगा। तुम उस पीरको क्या समझोगे। ओह! इतने दिनोंतक तुम्हारी माता तुम्हारे लिए रोज आँसुओंकी मोती पिरोती रही होंगी। चिन्ता और वेदनासे उनका कलेजा टूक-टूक होता रहा होगा। सभी लड़के तो इसी तरहके होते हैं। जबतक उन्हें बाल-बच्चा नहीं हो जाता, वे स्वयं पिता नहीं बन जाते, तबतक उन्हें माता-पिताके हृदयकी वेदनाका पता कैसे लग सकता है। प्रत्येक माता-पिताके हृदयमें

अपनी सन्तानके लिए जो ममता होती है, जो पीड़ा होती है उसे दूसरा कौन समझ सकता है ?

कभी-कभी माँ अँतड़ी साफ करनेमें मछलीका पित्ताशय काट देती है। तब उस मछलीका स्वाद फीका हो जाता है। मेरी हालत ठीक उसी तरह की है। मैं जिन्दा हूँ लेकिन जीवनकी हरएक साँस मुझे बोझसी मालूम पड़ती है। पर मैं चुपचाप सारी यातना बरदाश्त करता हूँ। लेकिन कभी-कभी व्याकुल होकर चिल्ला उठता हूँ—न-जाने कबतक यह क्रूर यातना भोगता रहूँगा।

"आप इस प्रान्तके रहनेवाले नहीं मालूम पड़ते। आप परदेशी हैं। आप ही बताइये क्या मेरे लिए फाँसी लगाकर मर जाना उचित नहीं है ?

मेरी एक बेटी है। नटाशा उसका नाम है। सत्रह सालकी है वह ! वह मुझसे बार बार कहती है—पिताजी, आपके साथ उठने-बैठनेको जी नहीं चाहता। जब मैं आपका हाथ देखती हूँ तब मुझे अपने भाइयोंकी याद आ जाती है। इन्हीं हाथोंसे तुमने उनको कत्ल कर डाला। ये हाथ मेरे भाइयोंके खूनसे सने हैं। यह याद करते ही मुझे घृणा होने लगती है।

लेकिन वह यह नहीं सोचती कि उन्हीं सबोंके लिए तो मैंने यह अधम काम किया था !

मेरी शादी बचपनमें ही हो गयी थी। मेरी पत्नी खरहेकी तरह बच्चे जनती रही। एक-एक करके आठ सन्तान मेरे हुईं। नवेंके वक्त भी वह चल ही बसी। बच्चा सही-सलामत निकल आया। लेकिन उसके पाँच दिन बाद उसे प्रसूतकी बीमारी हो गयी और वह चल बसी। सारी गृहस्थीका बोझ मुझपर आ पड़ा। ईश्वरने उन नवोंमेंसे एकको भी उठा लेनेकी दया नहीं दिखलायी। इवान सबसे बड़ा था। उसकी सूरत बहुत कुछ मुझसे मिलती थी। इसी तरह काले केश और गोल-मटोल चेहरा। वह मिहनती भी खूब था। दूसरा लड़का इवानसे चार साल छोटा था। वह अपनी माँको पड़ा

था। ठिगना कद और तोंदैल। उसके केश भूरे थे और आँखें कुई-सी। उसका नाम डैनिलो था। मैं उसे बहुत प्यार करता था।

समय पाकर इवानकी शादी मैंने कर दी। उसके एक पुत्र भी पैदा हो गया। मैं डैनिलोके लिए भी लड़की खोज रहा था, उसी वक्त बलवा हो गया। कजाकोंने सोवियट सरकारसे विद्रोह कर लिया। इवानने मुझसे कहा—बाबूजी, सोवियट सरकारका रास्ता न्यायका है। इसलिए ईश्वरके लिए मेरी बात मानिये और उसकी तरफ हो जाइये।

डैनिलो भी मुझे यही उपदेश देता रहा। उन लोगोंने मुझे राजी करनेकी लाख कोशिश की। लेकिन मैं टससे मस नहीं हुआ। मेरे पास एक ही उत्तर था:—मैं तुमलोगोंके रास्तेमें नहीं खड़ा होना चाहता। तुम जहाँ चाहो जा सकते हो लेकिन मैं यहाँसे तिलभर भी नहीं हट सकता। तुम्हारे बालबच्चोंके अलावा मुझे अपने सात बच्चोंका पेट पालना है। मेरे सिरपर यह सबसे बड़ा बोझ है।

इसके बाद वे सब सोवियट सरकारकी तरफ हो गये। गाँवमें हलचल मच गयी। प्रत्येक आदमीने सैनिकका बाना धर लिया। रास्तेमें उन लोगोंने मुझे भी पकड़ा। मैंने उन्हें सीधा उत्तर दिया:—भाइयो, आपलोग मेरी हालत जानते हैं। मेरे सात अबोध बच्चे हैं यदि मैं नहीं रहूँगा तो उनका पालन-पोषण कौन करेगा।

लेकिन मेरी अपीलका कोई असर नहीं हुआ। वे लोग मुझे पकड़कर ले ही गये। मैं मोर्चेपर भेज दिया गया। मोर्चाबन्दी मेरे गाँवसे दूर नहीं हुई थी।

ईस्टरके पहलेकी बात है। सात लाख सिपाही बन्दी करके लाये गये। उनमें मेरा बेटा डैनिलो भी था। बाजारसे होकर वे कप्तानके पास लाये जा रहे थे। सभी कजाक अपने घरोंसे निकलकर उन्हें देखनेके लिए दौड़ पड़े। लोग चिल्ला उठे:—"भगवान्, इन नरपिशाचोंका सत्यानाश करो। अब ये बच

कर कहाँ जायँगे। कप्तानके सामने पेश हो जानेके बाद तो हमलोग इन्हें अनन्त निद्राकी गोदमें सदाके लिए सुला देंगे। जरा भी मीनमेष नहीं करेंगे।"

मैं थरथर काँप रहा था, लेकिन अपने हृदयकी व्यथा प्रकट नहीं कर सकता था। मैंने कज़ाकोंको आपसमें बातें करते और मेरी ओर ताककर सिर हिलाते देखा। इतनेमें सर्जेण्ट मेजर थर्कासा मेरे पास आकर कहने लगा—इन बंदियोंकी मरम्मत करनेमें तुम हमलोगोंका साथ दोगे या नहीं?

मैंने साहस करके कहा:—इन शैतानोंको सबक देनेमें कौन सहमत नहीं होगा?

"अच्छी बात है। लो यह बन्दूक। यहीं दरवाजेपर खड़े हो जाओ।" इतना कहकर उसने मुझपर तीखी नजर डाली। "तुमपर कड़ी नजर रखी जायगी। सावधान रहना नहीं तो तुम खुद मुसीबतमें पड़ जाओगे।"

इस तरह बन्दूक लेकर मैं दरवाजेपर खड़ा होकर मन-ही-मन सोचने लगा:—भगवन्! क्या यही तुम्हारा न्याय है? मैं स्वयं पुत्रघातक बनूँगा। मेरे बेटेका खून मेरे हाथों कराया जाय।

गार्डरूममें शोर-गुल बढ़ता जा रहा था। अन्तमें वहाँसे कैदी बाहर किये गये। डैनिलो सबसे आगे था। उसे देखते ही मेरा खून सूख गया। उसका सिर खरबूजेकी तरह चिथड़ा हो गया और सारे शरीरसे खून टपक रहा था। कपड़ोंपर खूनके थक्के जम गये थे। इतनी बेरहमीसे उन्हें रास्तेमें पिटवाया कि क्रूरता भी उनकी हालत देखकर काँप उठती थी। डैनिलोके पैर सीधे नहीं पड़ते थे। उसकी नजर मुझपर पड़ी। उसने अपने दोनों हाथ मेरी ओर फैला दिये। उसने हँसनेकी कोशिश की। उसकी एक आँख फोड़ दी गयी थी।

यह समझना कठिन नहीं था कि यदि मेरा हाथ उसपर न उठता तो गाँववाले उसके साथ मुझे भी मार डालते और मेरे सात बच्चे दर-दर मारे-मारे फिरते। इस धरतीमें उन्हें कहीं ठाँव भी न मिलता।

जब डैनिलो मेरे निकट पहुँचा तो उसने कहा—"पिता, प्यारे पिता! अन्तिम प्रणाम!" उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह रही थी और उनसे

घुलकर खून नीचे ढुलक रहे थे। और मैं—मैं अपने बाजुओंको उठातक नहीं सका। मानो एक-एक हाथ दो दो मनके हो गये थे। वे सूखकर काठ हो गये थे। बन्दूक मेरे हाथमें उसी प्रकार तनी थी। मैंने घोड़ा दबा दिया। गोली तड़ाकसे उसकी कनपटीमें लगी। वह चीख मारकर जमीनपर गिर पड़ा और मेरी आँखोंके सामने ही लोटने लगा। सभी कजाक खिलखिलाकर हँस पड़े। मुझे शाबासी देने लगे :—वाह मिकिशारा! वाह! निशाना तो खूब बैठा! नालायक बेटेको इसी तरह सीख दी जाती है। एक बार और रहे!

शोरगुल सुनकर कप्तान खेमेसे बाहर निकल आया और दिखानेके लिए उसने उन लोगोंको डाँटा फटकारा। नहीं तो उसके भी चेहरेपर मुस्कुराहट थी।

इसके बाद दूसरे कजाक उन अभागे कैदियोंपर टूट पड़े और खरहेकी तरह उनका शिकार करने लगे। मेरा सिर चकराने लगा। आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। मैं कोनेमें जा छिपा। तबतक डैनिलो छटपटा रहा था। मेजर सार्जेण्टने अपनी बन्दूकसे उसका काम तमाम कर दिया।

पानीके धक्केसे नावकी लकड़ियाँ कड़कड़ा उठीं और नाव पानीमें गोता खाने लगी। मिकिशाराने पैर लटकाकर नावके अग्र भागको टटोला क्योंकि वह पानीसे ऊपर था। हुक्केकी राख बाहर फेंकते हुए उसने कहा—नाव तो डूब रही है। कल दोपहरतक हमलोगोंको इसी तरह बैठे रहना पड़ेगा। कैसी मुसीबतमें आ फँसा!

इतना कहकर वह चुप हो गया। थोड़ी देरके बाद उसने फिर अपनी कहानी आरम्भ की—उस दिनके कामके पुरस्कारमें मुझे पुलिस विभागमें काम मिला। उस घटनाके हुए जमाना गुजर गया। लेकिन आज भी रातको मुझे वही मौतका नजारा दिखायी देता है और प्यारे डैनिलोकी चीख सुनायी देती है। मेरी आत्मा इसी तरह मुझसे उस पापका बदला ले रही है।

वह मोर्चाबन्दी बसन्त बहारतक रही। उसके बाद जेनरल सेक्रेटोवकी फौज आ गयी और उसकी सहायतासे हमलोगोंने लाल सेनाको डान नदीके उस पार सरटेस प्रदेशमें भगा दिया।

चूँकि मेरे दो बेटे लाल सेनाके साथ मिल गये थे इसलिए मेरे साथ किसी तरहकी रिआयत नहीं की गयी, यद्यपि मुझे इतने बड़े कुटुम्बका पालन-पोषण करना था।

हमलोग बालाशोर नगरतक बढ़ गये। मेरे बड़े बेटे इवानका मुझे कोई सम्वाद नहीं मिलता था। मुझे नहीं मालूम था कि वह कहाँ और कैसे था। एकाएक कजाकोंमें यह बात फैल गयी कि इवानने लाल सेनाका साथ छोड़ दिया और कजाकोंकी २६ वीं पलटनके साथ मिल गया। न-जाने यह खबर कहाँसे उड़ी।

हमारे गाँवके लोग मुझे धमकी देने लगे—उस नालायकको हमलोग पकड़ लावेंगे और उसकी दुर्दशा करेंगे।

हमलोग एक गाँवमें पहुँचे। २६ वीं पलटन वहीं डेरा डाले थी। उनलोगोंने इवानको खोज निकाला। उसे बाँधकर मार्केटमें ले आये। उसे बेरहमीसे पीटा। उसके बाद मुझे आज्ञा मिली कि मैं ही उसे लेकर रेजिमेण्टके पास हाजिर करूँ।

रेजिमेण्टका पड़ाव वहाँसे करीब बारह मील था। हमारी सेनाके नायकने अधिकारपत्र मेरे हवाले करते हुए कहा—मिकिथारा! यह अधिकारपत्र है। तुम्हारे साथ ही इसे भेजना ठीक होगा क्योंकि अपने पिताके कब्जेसे वह भाग जानेका यत्न नहीं करेगा। जिस समय वह यह कह रहा था उसकी आँखें नीचेकी तरफ थीं।

मैंने क्षणभरमें उसकी चाल समझ ली उसे मेरे साथ वे लोग इसलिए भेज रहे थे कि पिताका दुर्बल हृदय उसे छोड़ देगा। तब वे उसे और मुझे दोनोंको पकड़कर एक साथ ही खतम कर देंगे।

मैं उस कमरेमें गया जहाँ इवान कैद था। मैंने सन्तरीसे कहा—कैदीको मेरे हवाले करो। मुझे सदर मुकाम इसे ले जानेकी आज्ञा हुई है।

सन्तरीने कहा—यह हाजिर है। जहाँ चाहो इसे ले जाओ। इवानने अपना

ओवर कोट अपने कंधेपर लटका लिया। क्षणभर अपनी टोपीसे उलझा रहा पीछे उसे बेञ्चपर फेंक दिया।

हमलोग गाँवसे आगे निकल गये। रास्ता पहाड़ीसे होकर गया था। हम दोनों चुपचाप चले जा रहे थे। मैं तिरछी नजरसे इधर-उधर देखता जाता था कि कोई हमलोगोंका पीछा तो नहीं कर रहा है। इसी तरह हमलोगोंने आधा रास्ता तय किया। हमलोग एक मन्दिरके पास पहुँचे थे। हमलोगोंके आगे-पीछे कोई नहीं था। इवानने घूमकर मुझसे कहा—बाबूजी, सदर मुकामपर वे लोग अवश्य मुझे मार डालेंगे। तुम मुझे मृत्युके मुखमें स्वयं पहुँचा रहे हो। क्या तुम्हारी आत्मा एकदम मर गयी है? उसकी वाणीमें दीनता थी।

मैंने कहा—बेटा, मेरी आत्मा मर तो नहीं गयी है।

"तब क्या आपके हृदयमें मेरे लिए जरा भी दया नहीं है?"

"मेरे दिलपर जो गुजर रही है उसे कौन समझ सकता है।"

"यदि आपके हृदयमें दयाका लवलेश भी बचा है तो मुझे जाने दीजिये। समझ लीजियेगा कि आपका इवान इतने ही दिनोंके लिए इस दुनियामें आया था।"

वह मेरे सामने घुटने टेककर बैठ गया और मेरे पैरोंपर अपना सिर रगड़ने लगा।

मैंने उससे कहा—हमलोगोंको ढालतक चलने दो। वहाँसे तुम भाग जाना। दिखलानेके लिए मैं दो-चार बार गोली चला दूँगा।

बचपनसे ही वह जिद्दी था। मुझे एक बार भी उसका प्यार नसीब नहीं हुआ लेकिन उस दिन वह मुझसे लिपट गया और मेरा हाथ चूमने लगा।

हमलोग एकाध मील और गये। वह चुप था। मैंने भी मुहँ नहीं खोला। जब हमलोग ढालपर पहुँचे तो वह रुक गया। बोला—पिताजी, प्रणाम। यदि हमलोग जीवित बचे तो जन्मभर मैं आपकी सेवा करूँगा। आपको कभी मुझसे शिकायतका मौका नहीं मिलेगा।

उसने मुझे छातीसे लगाया। मेरा कलेजा फट रहा था। मैंने कहा—

भागो जल्दी। वह ढालूकी तरफ भागा। वह रह रहकर पीछेकी ओर देखता और मेरी ओर अपना हाथ हिलाता था। मैंने उसे कुछ दूरतक भाग जाने दिया। तब मैंने अपनी बन्दूक सीधी की और घुटने टेककर बैठ गया। घोड़ा दबा दिया। गोली जाकर उसकी पीठमें लगी।

इतना कहकर वह अपनी जेब टटोलने लगा। उसने तम्बाकू निकाला। चिलमपर चढ़ाया। दूसरी जेबसे सलाई निकाली। उसे जलाकर तम्बाकू सुलगायी और एक कश हुक्केका उसने खींचा। उसने हुक्का अपने हाथमें ले लिया। उसके होंठ काँप रहे थे। आँखें करुणा-पूर्ण हो रही थीं।

गोली लगते ही वह उछल पड़ा और पीड़ासे व्याकुल होकर थोड़ी दूर दौड़ गया। उसके बाद उसने दोनों हाथोंसे अपना पेट पकड़ लिया और मेरी ओर घूम पड़ा। बोला—"पिताजी, यह क्या?" इसके बाद वह चक्कर खाकर जमीनपर गिर पड़ा और छटपटाने लगा। मैं दौड़कर उसके पास चला गया। उसकी पुतलियाँ नाच रही थीं और मुँहसे खून निकल रहा था। मैंने समझ लिया कि सब समाप्त हो चुका। वह मर रहा है। उसने टटोलकर मेरा हाथ पकड़ा और बड़बड़ाने लगा—पिताजी, मेरे एक लड़का है और मेरी पत्नी है। उसके बाद उसका सिर लटक गया। वह घावको अपने हाथसे दबानेके लिए टटोलता रहा। इतनेपर भी खूनकी धारा उससे निकलती रही। वह कराहने लगा। उसकी आँखें भयानक हो गयी थीं। अब उसकी जबान मुश्किलसे हिल सकती थी। वह कुछ कहना चाहता था लेकिन "पि···ता"के आगे उसके मुँहसे कुछ नहीं निकला। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह चली। मैंने कहना शुरू किया—बेटा, इस बूढ़े बापको क्षमा करो। मैं जानता हूँ कि तुम्हें एक सन्तान है और तुम्हारी पत्नी भी है। पर मुझे तो सात मासूम बच्चोंकी परवरिश करनी है। यदि मैं तुम्हें भाग जाने देता तो कजाक मेरी गर्दन उतार लेते और मेरे सातों बच्चोंको भूखकी ज्वालासे तड़प-तड़पकर मरना पड़ता।

कुछ देरतक उसे होश रहा। उसके बाद उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

मेरा हाथ उसके हाथमें था। मैंने उसका ओवरकोट और जूता उतार लिया। उसे कपड़ेसे ढँक दिया और वापस लौट गया।

अब आप ही मेरा न्याय कीजिये। मैंने इतने बड़े क्रूर काम किसके लिए किये। इन्हीं बच्चोंके लिये तो? उस सदमेसे असमयमें ही मेरे बाल सफेद हो गये''मैं उनके लिए दिनरात कड़ा परिश्रम करता हूँ ताकि उन्हें रोटीके लाले न पड़ें। रातदिन मुझे चैन नहीं है। इतनेपर भी नाटाशाके मुँहसे मुँह मिलाकर ये सब मुझसे कहते हैं—बाबूजी, आपके साथ बैठनेको जी नहीं चाहता''क्या कोई भी आदमी इस तरहकी बातें बरदाश्त कर सकता है?

इसके बाद उस मल्लाहका सिर आगेकी तरफ झुक गया। उसने सिर ऊपर उठाया और मेरी ओर तरेरकर देखा। उषाकी लालिमा उसके पीछेसे आ रही थी। नदीके किनारेसे कोई चिल्ला उठा—

"भिखारा! शैतान कहींका! नाव कहाँ है?"

